NCERT

सम्पूर्ण

सामान्य ज्ञान

SMART Scan

GENERAL KNOWLEDGE

प्रधान संपादक

आनन्द कुमार महाजन

कम्प्यूटर ग्राफिक्स

बालकृष्ण, चरन सिंह

संपादकीय कार्यालय

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002

9415650134

Email : yctap12@gmail.com

website : www.yctbooks.com/yctfastbook.com/www.yctbooksprime.com

© All rights reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा

प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने E:Book by APP YCT BOOKS, से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सहयोग एवं सुझाव सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय-सूची

- **भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन 3-129**
  - प्राचीन इतिहास 3-45
  - मध्यकालीन इतिहास 46-80
  - आधुनिक इतिहास 81-129
- **भूगोल (विश्व एवं भारत) 130-221**
  - विश्व का भूगोल 130-180
  - भारत का भूगोल 181-221
- **भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था 222-284**
- **भारतीय अर्थव्यवस्था 285-324**
- **सामान्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 325-482**
  - भौतिक विज्ञान 325-362
  - रसायन विज्ञान 363-405
  - जीव विज्ञान 406-460
  - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 461-475
  - कम्प्यूटर 476-482
- **पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र 483-501**
- **खेल 502-514**
- **विविध 515-560**

प्राचीन इतिहास

भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

- भारतीय इतिहास के स्रोतों को तीन शीर्षकों में रख सकते हैं - (1) पुरातात्विक स्रोत (2) साहित्यिक स्रोत (3) विदेशी यात्रियों का विवरण
- पुरातत्व वह विज्ञान है, जिसमें भौतिक अवशेषों के माध्यम से प्राचीन और हाल के मानव अतीत का अध्ययन किया जाता है।

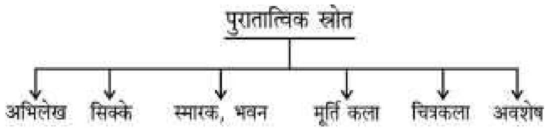

- पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्रोत 'अभिलेख' हैं।
- अभिलेख पत्थर शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों, प्रतिमाओं एवं मुद्राओं पर उत्कीर्ण किए गये हैं।
- अभिलेखों के अध्ययन को 'इपीग्राफी' कहते हैं।
- सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के हैं जो 'प्राकृत भाषा' में हैं।
- मास्की, गुर्जरा, नेट्टूर और उडेगोलम् अभिलेख में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है।
- अशोक के अन्य अभिलेखों में उसे देवताओं का प्रिय, प्रियदर्शी राजा कहा गया है।
- अशोक के अधिकतर अभिलेख 'ब्राह्मी लिपि' में है। कुछ अभिलेख खरोष्ठी एवं अरेमाइक लिपि में लिखे गये हैं।
- ब्राह्मी लिपि बायें से दायें लिखी जाती थी जबकि खरोष्ठी लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।
- ब्राह्मी लिपि को सबसे पहले 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप नामक विद्वान ने पढ़ा था।

पुरातात्विक अभिलेख

अभिलेख	शासक एवं अभिलेख की विशेषताएँ
हाथीगुम्फा अभिलेख	कलिंगराज खारवेल का अभिलेख, इसी अभिलेख में सर्वप्रथम भारतवर्ष का उल्लेख किया गया है।
जूनागढ़ (गिरनार)	रुद्रदामन का अभिलेख, यह अभिलेख संस्कृत भाषा में लिखा गया है तथा इसमें सुदर्शन झील का वर्णन किया गया है।
प्रयाग प्रशस्ति	यह अभिलेख समुद्रगुप्त का है जो अशोक स्तम्भ पर उत्कीर्ण है। इस प्रशस्ति में समुद्रगुप्त के विजयों और नीतियों का पूरा विवेचन मिलता है।
ग्वालियर प्रशस्ति	इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों के विषय में विस्तृत सूचनाएं प्राप्त होती हैं।
नासिक अभिलेख	गौतमी बलश्री
देवपाड़ा अभिलेख	बंगाल शासक विजयसेन
ऐहोल अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय
मन्दसौर अभिलेख	कुमार गुप्त के मन्दसौर अभिलेख से रेशम बुनकर की श्रेणियों की जानकारी प्राप्त होती है।
भीतरी एवं जूनागढ़ अभिलेख	स्कन्दगुप्त (हूणों पर विजय का विवरण)
बांसखेड़ा एवं मधुवन अभिलेख	हर्षवर्धन की उपलब्धियों का वर्णन है।
बालाघाट एवं कार्ले अभिलेख	सातवाहनों की उपलब्धियाँ
भरहुत अभिलेख	शुंग शासकों की उपलब्धियाँ
एरण अभिलेख	भानुगुप्त का है, इसमें सती-प्रथा का पहला लिखित साक्ष्य मिलता है।
अयोध्या अभिलेख	शुंग शासक की उपलब्धियाँ

- भूमि-अनुदान पत्र अधिकतर ताँबे की चादरों पर उत्कीर्ण हैं।

नोट :एशिया माइनर में बोगजकोई नामक स्थान पर लगभग ईसा पूर्व 1400 का संधिपत्र अभिलेख मिला है। इनमें इन्द्र, मित्र, वरुण, और नासत्य आदि वैदिक देवताओं के नाम उल्लेखित हैं।

❖ सिक्के

- भारत में लगभग छठीं शताब्दी ईसा पूर्व से पंचमार्क या आहत सिक्के प्राप्त हुए हैं।
- आहत सिक्के पर किसी प्रकार का लेख उत्कीर्ण नहीं है, इन पर केवल चिह्न उत्कीर्ण हैं।
- सिक्कों को राजाओं के अतिरिक्त व्यापारियों, व्यापारिक श्रेणियों और नगर-निगमों ने चालू किया था।
- शक, पह्लव, कुषाण शासकों ने यूनानियों के अनुरूप सिक्के चलाए।
- भारत में स्वर्ण सिक्के सर्वप्रथम यवन शासकों ने चलवाये।
- चाँदी के प्राचीनतम सिक्कों को 'कार्षापण' 'पुरण' 'धरण' 'शतमान' आदि कहा गया है।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखवाने का कार्य यवन शासकों ने किया।

■ सामान्यतः 206 ई.पू. से लेकर 300 ई. तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें मुख्य रूप से मुद्राओं की सहायता से ही होता है।
■ मालव, यौधेय आदि गणराज्यों तथा पांचाल के मित्रवंशी शासकों के विषय में हम मुख्यतः सिक्कों से ज्ञान प्राप्त करते हैं।
■ सिक्कों के अध्ययन से हमें सम्राटों के धर्म तथा उनके व्यक्तिगत गुणों का पता चलता है।
■ कनिष्क के विषय में सिक्कों से ही पता चलता है कि वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
■ समुद्रगुप्त की मुद्राओं से उनके संगीत प्रेमी होने का प्रमाण प्राप्त होता है। उसकी मुद्राओं पर उसे वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।
■ इण्डो-यूनानी, इण्डो-सीथियन शासकों के इतिहास के प्रमुख स्रोत सिक्के हैं।
■ सातवाहन नरेश यज्ञ श्री शातकर्णी की एक मुद्रा पर जलपोत का चित्र उत्कीर्ण मिलता है।
■ चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की व्याघ्र शैली की मुद्राओं से उसके शकों पर विजय की जानकारी मिलती है।

❖ स्मारक

■ स्मारकों से प्राचीन काल के महलों और मंदिरों की शैली से वास्तुकला के विकास की जानकारी प्राप्त होती है।
■ स्मारक के अन्तर्गत प्राचीन इमारतें, मंदिर, मूर्तियाँ आती हैं।
■ स्मारकों से विभिन्न युगों की सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का बोध होता है।
■ स्मारकों और भवनों से वास्तुकला के विकास के अध्ययन में सहायता मिलती है।
■ मंदिर निर्माण की तीन प्रमुख शैलियां थी-नागर, द्रविड़, वेसर।
■ उत्तर भारतीय मंदिरों की शैली नागर है।
■ दक्षिण भारतीय मंदिर की शैली द्रविड़ है।
■ दक्षिणापथ के वे मंदिर जिनमें नागर एवं द्रविड़ दोनों शैलियों का प्रयोग हुआ है उसे वेसर शैली कहते हैं।
■ भारत से बाहर हिन्दू संस्कृति से संबंधित स्मारक मिलते हैं। इनमें मुख्य रूप से जावा का 'बोरोबुदूर स्तूप' तथा कम्बोडिया के 'अंकोरवाट का मंदिर' है।
■ कुषाण, गुप्त, गुप्तोत्तर काल में निर्मित मूर्तियों से जन-साधारण की धार्मिक, सामाजिक आस्थाओं की जानकारी प्राप्त होती है।
■ कुषाण कालीन मूर्तिकला में यूनानी प्रभाव परिलक्षित होता है, जबकि गुप्तकालीन मूर्तिकला में स्वाभाविकता परिलक्षित होती है।
■ साँची, भरहुत, अमरावती की मूर्तिकला में जनसामान्य के जीवन की यथार्थ झाँकी मिलती है।
■ अजन्ता के चित्रों में मनोभावों की सुन्दर अभिव्यक्ति मिलती है, माता और शिशु का, 'मरणासन्न' राजकुमारी जैसे चित्रों के मनोभावों का शाश्वत चित्रण किया गया है।

❖ अवशेष

■ प्राचीन बस्तियों के उत्खनन से जो अवशेष मिले हैं उनसे प्रागैतिहासिक और आद्य इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।
■ पाकिस्तान में सोहन नदी की घाटी में पुरापाषाण युग से मिले पत्थर के खुरदरे औजारों से अनुमान लगाया गया है कि भारत में 4 लाख से 2 लाख ईसा पूर्व मानव रहता था।
■ 10 हजार से 6 हजार ईसा पूर्व मानव कृषि कार्य, पशुपालन, कपड़ा बुनना, मिट्टी के बर्तन बनाना तथा पत्थर के चिकने औजार बनाना सीख गया था।
■ गंगा-यमुना के दोआब से गेरूए, काले, लाल, चित्रित भूरे मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं।
■ मोहनजोदड़ो में 500 से अधिक मुहरें मिली थीं। उसी के आधार पर हड़प्पा संस्कृति के निवासियों के धार्मिक जीवन का अनुमान लगाया गया है।
■ बसाढ़ (प्राचीन वैशाली) से 274 मिट्टी की मुहरें मिलीं थी उनसे चौथी शताब्दी ईस्वी में एक श्रेणी का पता चलता है।
■ कौशाम्बी पुरास्थल की खुदाई से उदयन का राजप्रसाद एवं घोषिताराम नामक विहार मिला है।
■ अतिरंजीखेड़ा के उत्खनन से पता चलता है कि देश में लोहे का प्रयोग लगभग 1000 ई.पू. में प्रारम्भ हो गया था।
■ दक्षिण भारत के अरिकामेडू नामक पुरास्थल की खुदाई से रोमन सिक्के, दीप का टुकड़ा, बर्तन आदि मिले हैं।
■ इन अवशेषों से विदित होता है, कि ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में रोम तथा दक्षिण भारत के मध्य घनिष्ठ संबंध था।

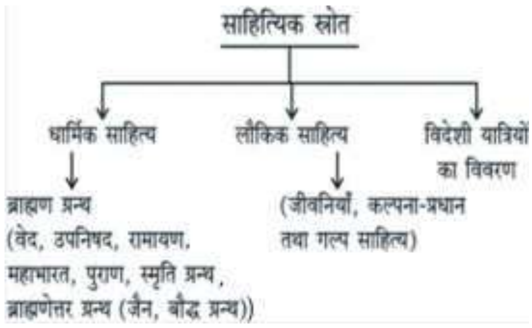

■ वेद भारत के सर्वप्राचीन ग्रन्थ हैं जिनका संकलनकर्ता 'महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास' को माना जाता है।
■ वैदिक शब्द 'वेद' से बना है, वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान से है।
भारतीय परम्परा में वेदों को नित्य तथा अपौरुषेय माना गया है।
वेद चार हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद, इन चार वेदों को संहिता कहा गया है।
ऋग्वेद को सबसे प्राचीन वेद माना जाता है, 'ऋक' का अर्थ छन्दों तथा चरणों से युक्त मंत्र होता है।
ऋग्वैदिक भरतों का अधिवास क्षेत्र सरस्वती तथा यमुना नदियों के बीच का प्रदेश था।

❖ यजुर्वेद

■ यजुर्वेद में 'यजुष' शब्द का अर्थ यज्ञ या बलिदान से है।
■ इस संहिता की रचना गद्य एवं पद्य शैली में की गई है।
■ यजुर्वेद के दो भाग हैं, कृष्ण यजुर्वेद एवं शुक्ल यजुर्वेद।
■ कृष्ण यजुर्वेद गद्य, पद्य दोनों शैली में है, जबकि शुक्ल यजुर्वेद केवल पद्य शैली में है।
■ शुक्ल यजुर्वेद की संहिताओं को 'वाजसनेय' भी कहा गया है, क्योंकि वाजसनेयी के पुत्र याज्ञवलक्य इसके द्रष्टा थे।

❖ सामवेद

- सामवेद में यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मंत्रों का संग्रह है।
- सामवेद में कुल 1875 ऋचाएँ हैं।
- इस वेद को भारतीय संगीत का जनक माना जाता है।
- सामवेद के प्रथम द्रष्टा वेदव्यास के शिष्य जैमिनीय को माना जाता है।

❖ अथर्ववेद

- अथर्ववेद का नाम अथर्वा ऋषि के नाम पर पड़ा है।
- अथर्ववेद को ब्रह्मवेद या श्रेष्ठवेद भी कहा गया हैं।
- इसमें कुल 20 अध्याय हैं।
- इसमें 731 सूक्त एवं 5987 मंत्र हैं।
- अथर्ववेद में सामान्य मनुष्य के विचारों, विश्वासों एवं अंधविश्वासों तथा जादू-टोना का विवरण मिलता है।
- अथर्ववेद को आयुर्वेद अर्थात् जीवन का विज्ञान भी कहा गया है।
- औषधि वनस्पतियों के विषय में सूचना अथर्ववेद से मिलती है।
- अंग, मगध, अयोध्या का उल्लेख अथर्ववेद में किया गया है।
- अथर्ववेद में सर्वप्रथम इतिहास शब्द का उल्लेख किया गया है।

❖ ब्राह्मण ग्रन्थ

- ब्राह्मण ग्रन्थ वैदिक संहिताओं की व्याख्या करने के लिए गद्य में लिखे गये हैं।
- ब्राह्मण ग्रन्थ की रचना याज्ञिक विधि विधान के प्रतिपादन के उद्देश्य से किया गया है।
- शतपथ ब्राह्मण में गांधार, शल्य, कैकेय, कुरू, पांचाल, कोशल, विदेह आदि राजाओं का उल्लेख मिलता है।
- शतपथ ब्राह्मण में पुनर्जन्म सिद्धान्त का पहली बार उल्लेख मिलता है।
- आरण्यक ग्रन्थ मुख्यतः दार्शनिक ग्रन्थ है, इसकी रचना आरण्य अर्थात जंगलों में की गयी थी।

❖ उपनिषद

- उपनिषद का शाब्दिक अर्थ होता है समीप बैठना।
- उपनिषदों को वेदान्त भी कहा गया है।
- उपनिषद दार्शनिक ग्रन्थ है जिनका ध्येय ज्ञान की खोज करना है।
- उपनिषदों की कुल संख्या 108 है जिसमें 12 उपनिषदों को विशेष महत्व प्राप्त है।
- 'श्वेताश्वर उपनिषद' में मोक्ष एवं भक्ति शब्द का उल्लेख किया गया है।

❖ वेदांग तथा सूत्र

- वेदों को भली भाँति समझने के लिए छः वेदांगों की रचना की गयी, ये है शिक्षा (शुद्ध उच्चारण शास्त्र), ज्योतिष, कल्प (कर्मकाण्डीय विधि), निरूक्त (शब्दों की व्युत्पति का शास्त्र) ज्योतिष तथा छन्द है।
- सूत्र साहित्य का प्रणयन वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए किया गया था।
- ऐसे सूत्र जिनमें विधि और नियमों का प्रतिपादन किया गया है, कल्पसूत्र कहलाते हैं।
- कल्पसूत्रों के तीन भाग हैं: श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र और धर्म सूत्र।
- श्रौत सूत्रों में यज्ञ-संबंधी नियमों का उल्लेख है।
- गृह्य सूत्रों में मनुष्यों के लौकिक तथा पारलौकिक कर्तव्यों का विवेचन है।
- धर्म सूत्रों में धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक कर्त्तव्यों का विवेचन है।
- सूत्रों में गौतम धर्मसूत्र को सबसे प्राचीन माना गया है।

पुराण, धर्मशास्त्र एवं स्मृतियां

- भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे अच्छा क्रमबद्ध विवरण हमें पुराणों में मिलता हैं पुराणों के रचयिता लोमहर्ष अथवा उनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं।
- 'पुराण' का शाब्दिक अर्थ 'प्राचीन आख्यान' होता है इनकी रचना तीसरी-चौथी शताब्दी ईस्वी में की गई थी।
- सर्वप्रथम 'पार्जिटर' नामक विद्वान ने इनके ऐतिहासिक महत्व की ओर ध्यान आकृष्ट कराया था।
- अमरकोष में पुराणों के पांच विषय बतलाए गये हैं (1) सर्ग अर्थात् जगत् की सृष्टि, (2) प्रतिसर्ग अर्थात प्रलय के बाद जगत् की पुनः सृष्टि (3) वंश अर्थात ऋषियों तथा देवताओं की वंशावली (4) मन्वन्तर अर्थात महायुग (5) वंशानुचरित अर्थात प्राचीन राजकुलों का इतिहास।
- पुराणों की संख्या 18 है।
- मत्स्य, वायु, विष्णु, ब्रह्माण्ड, भागवत पुराणों में राजाओं की वंशावली पायी जाती है।
- मत्स्य पुराण सबसे अधिक प्राचीन एवं प्रमाणिक है।
- विष्णुपुराण का संबंध मौर्यवंश से, मत्स्य पुराण का संबंध आन्ध्र (सातवाहन) से तथा वायु पुराण का संबंध गुप्तवंश से है।
- पुराण सरल एवं व्यावहारिक भाषा में लिखे गये हैं।
- वैदिक साहित्य के उपरान्त दो महत्वपूर्ण महाकाव्य की रचना हुई जिसमें 'रामायण' एवं 'महाभारत' है।
- रामायण की रचना 500 ई.पू. - 300 ई. के मध्य हुई जबकि महाभारत की रचना 400 ईसा-पूर्व से 400 ई. के बीच हुई थी।
- रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी, जबकि महाभारत की रचना महर्षि वेद व्यास ने की थी।
- महाभारत में एक लाख श्लोक हैं जिसके कारण इसे ''शतसहस्रसंहिता'' भी कहा जाता है।
- इन महाकाव्यों से उत्तर वैदिक कालीन आर्यों के जीवन के विषय में जानकारी मिलती है।
- धर्म सूत्र, स्मृति, भाष्य निबन्ध आदि के सम्मिलित रूप को धर्मशास्त्र कहा गया है।
- धर्मसूत्रों का काल 500-200 ई. पू. माना गया है, कालान्तर में इन्ही धर्मसूत्रों से स्मृतिग्रन्थों का विकास हुआ।

■ धर्मसूत्रों की रचना गद्य में जबकि स्मृति ग्रन्थों को रचना पद्य में की गई है।
■ सबसे प्राचीन मनु स्मृति है, इसकी रचना 200 ई.पू. से 200 ई. के बीच मानी जाती है
■ नारद, पाराशर, बृहस्पति, कात्यायन स्मृतियां गुप्तकालीन हैं, इनसे गुप्तकाल के सामाजिक व धार्मिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है।
■ मनुस्मृति के प्रमुख टीकाकार-भारुचि, मेघातिथि, गोविन्दराज, कुल्लुकभट्ट हैं।
■ याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रमुख टीकाकार-विश्वरूप, विज्ञानेश्वर तथा अपरार्क हैं।
■ स्मृति टीकाओं से हमें हिन्दू-समाज के विविध पक्षों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

❖ बौद्ध साहित्य

■ सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रन्थ त्रिपिटक हैं। इनके नाम- सुत्तपिटक, विनयपिटक, और अभिधम्मपिटक हैं।
■ सुत्तपिटक को बौद्ध धर्म का 'इनसाइक्लोपीडिया' भी कहा गया है।
■ जातक ग्रन्थों में बुद्ध के पूर्व जन्मों की काल्पनिक कथाएं हैं।
■ सिंहली बौद्ध ग्रन्थ 'दीपवंश' और 'महावंश' से भी भारत के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

❖ जैन साहित्य

■ जैन साहित्य को 'आगम' कहा जाता है जैन आगमों में सबसे महत्वपूर्ण बारह अंग हैं।
■ जैन धर्म का प्रारम्भिक इतिहास ''कल्पसूत्र'' (लगभग चौथी शती ई. पू.) से ज्ञात होता है जिसकी रचना 'भद्रबाहु' ने की थी।
■ जैन ग्रन्थों की रचना 'प्राकृत भाषा' में हुई है।
■ 'भगवतीसूत्र' से महावीर की शिक्षाओं का संग्रह किया गया है तथा उवासगदसाओ में उपासकों के जीवन-संबन्धी नियम दिए गये हैं।
■ जैन साहित्य से तत्कालीन भारतीय समाज की सामाजिक धार्मिक दशा पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

लौकिक साहित्य

■ लौकिक साहित्य के अन्तर्गत ऐतिहासिक एवं अर्द्ध-ऐतिहासिक ग्रन्थों तथा जीवनियों का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है।
■ ऐतिहासिक रचनाओं में सर्वप्रथम उल्लेख 'कौटिल्य' कृत अर्थशास्त्र'' का किया जा सकता है।
■ ''अर्थशास्त्र'' को भारत का पहला राजनीतिक ग्रन्थ माना जाता है, जिसमें मौर्य कालीन इतिहास एवं राजनीतिक ज्ञान के विषय में महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त होती है।
■ कौटिल्य कृत 'अर्थशास्त्र' पर कामन्दक ने 'नीतिसार' नामक टीका लिखा।

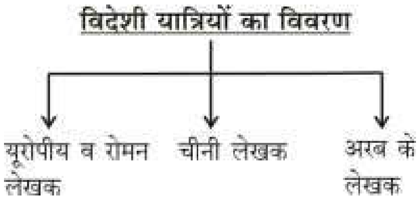

■ यूनान और रोम के लेखकों में सबसे प्राचीन हेरोडोटस और टीसियस का वृतांत है।
■ टेसियस ईरान का राजवैध था।
■ हेरोडोटस को 'इतिहास का पिता' कहा जाता है। उसने अपनी पुस्तक 'हिस्टोरिका' में पाँचवी शताब्दी ईसा-पूर्व के भारत-फारस के संबंधों का वर्णन किया है।
■ सिकन्दर के समकालीन लेखक नियार्कस, आनेसिक्रिटस, आरिस्टोबुलस के विवरण अपेक्षाकृत अधिक प्रमाणिक एवं विश्वसनीय हैं।
■ सिकन्दर के पश्चात् तीन यूनानी राजदूत 'मेगस्थनीज' 'डाइमेकस' तथा 'डायोनिसियस' पाटलिपुत्र के मौर्य दरबार में आये थे।
■ 'इण्डिका' नामक पुस्तक में मौर्ययुगीन समाज एवं संस्कृति के विषय में जानकारी मिलती है।
■ टॉलमी ने दूसरी शताब्दी में भारत का भूगोल लिखा था।
■ प्लिनी ने प्रथम शताब्दी में 'नेचुरल हिस्ट्री' नामक पुस्तक लिखी। इससे भारतीय पशुओं पेड़-पौधों, खनिज पदार्थों आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।
■ 'पेरीप्लस ऑफ द इरिथ्रियन सी' नामक पुस्तक के लेखक के बारे में जानकारी नहीं है। वह 80 ईस्वी के लगभग हिन्द महासागर की यात्रा पर आया था। उसने भारतीय बन्दरगाहों और व्यापारिक वस्तुओं के बारे में जानकारी दी है।

चीनी लेखक

■ चीनी यात्री बौद्ध मतानुयायी थे तथा भारत में बौद्ध तीर्थ स्थानों की यात्रा तथा बौद्ध धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए आये थे।
■ चीनी बौद्ध यात्री भारत को 'यिन तु' (Yin-Tu) के नाम से पुकारते थे।
■ **ह्वेनसांग** सातवीं सदी में हर्षवर्धन के शासन काल में भारत आया था। वह 16 वर्षों तक भारत में रहा तथा छः वर्षों तक नालन्दा विश्वविद्यालय में रहकर शिक्षा ग्रहण किया।
■ ह्वेनसांग का यात्रा वृत्तांत 'सि-यू-की' के नाम से जाना जाता है। जिसमें 138 देशों का यात्रा विवरण मिलता है।
■ **इत्सिंग** सातवीं शताब्दी के अंत में भारत आया था। उसने नालंदा विश्वविद्यालय एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय एवं भारतीयों की वेशभूषा तथा खान-पान आदि के विषय में लिखा है।
■ **मात्वान-लिन** के विवरण से हर्ष के पूर्वी अभियान के विषय में सूचना मिलती है तथा **चाऊ-जू-कुआ** चोलों के सन्दर्भ में सूचना देता है।

प्रागैतिहासिक काल

- इतिहास का वर्गीकरण मुख्यतः प्रागैतिहासिक, आद्य ऐतिहासिक तथा ऐतिहासिक तीन भागों में किया गया है।
- प्रागैतिहासिक का तात्पर्य उस काल से है जिसका कोई लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है।
- प्रागैतिहासिक काल को सुविधानुसार तीन भागों में बाँटा गया है - पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल, नवपाषाण काल

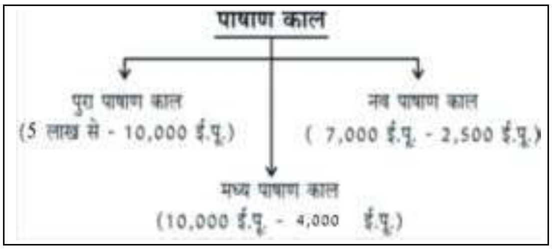

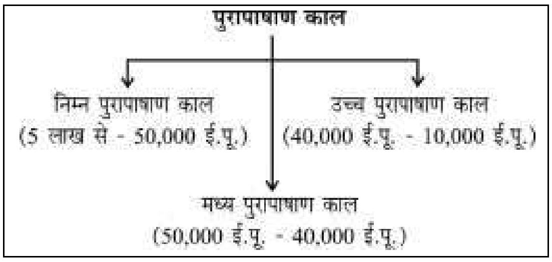

- भारत में सर्वप्रथम 1863 ई. में पुरातत्वविद् राबर्ट ब्रुस फुट ने प्रस्तर युगीन बस्तियों का अन्वेषण प्रारम्भ किया।
- राबर्ट ब्रुस फुट ने मद्रास के निकट पल्लवरम नामक स्थान से पत्थर की कुल्हाड़ी प्राप्त किया।
- आधुनिक मानव का विकास लगभग 30,000 वर्ष पहले हुआ, उसे होमोसेपियन्स या प्रज्ञ मानव जैसे नामों से जाना जाता है।
- पुरापाषाण युगीन मानव की जीविका का मुख्य आधार शिकार या आखेट था।
- पुरापाषाण कालीन चित्र भीमबेटका गुफा से प्राप्त हुए हैं।
- भीमबेटका के गुफाओं की खोज वी.एस. वाकंकर द्वारा वर्ष 1957-58 में की गई थी।

RRB NTPC 14.03.2021 (Shift-II)

- भीमबेटका के शैलाश्रय भारतीय उपमहा द्वीप पर मानव जीवन के प्राचीनतम चिह्नों की वजह से प्रसिद्ध हैं।

RRB NTPC 10.02.2021 (Shift-I)

- पुरापाषाण युग से प्राप्त उपकरणों में हस्तकुठार (हैंडएक्स) विदारणी (क्लीवर), खंडक, गड़ासा प्रमुख थे।
- मध्य पुरापाषाण युग को फलक संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है।
- वेधनी, छेदनी, खुरचनी मध्य-पुरापाषाण युग के प्रमुख उपकरण थे।
- सोहन घाटी क्षेत्र से चापर-चापिंग, पेबुल संस्कृति के उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- आर्कीबाल्ड कार्लाइल ने 1867-68 ई. में सर्वप्रथम भारत में मध्यपाषाण काल की जानकारी दी है।
- मध्यपाषाण काल के उपकरणों की खोज सर्वप्रथम आर्कीबाल्ड कार्लाइल ने विन्ध्य क्षेत्र के शैल चित्रों से प्राप्त किया।
- मध्यपाषाण काल में मानव के अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष सराय नाहर राय, महदहा से प्राप्त हुआ है।
- मध्यपाषाणिक वन्य-धान का प्रमाण चोपानीमाण्डो (प्रयागराज) से प्राप्त हुआ है।
- 'होमो इरेक्टस' मानव की खोपड़ी हथनौरा (नर्मदा घाटी-मध्य प्रदेश) से प्राप्त हुई है। **SSC CPO SI 12.12.2019**
- बेलन नदी घाटी (प्रयागराज, उत्तर प्रदेश) क्षेत्र को भारतीय प्रागैतिहास का 'टेक्स्ट बुक' कहा जाता है।
- माइक्रोलिथ उपकरण मध्यपाषाण काल की विशेषता रही है।
- मध्य पाषाण कालीन स्थल आदमगढ़ (होशंगाबाद, मध्य प्रदेश), बागोर (भीलवाड़ा, राजस्थान) से पशुपालन के प्राचीनतम् साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। **BEO Exam-2006 (1)**
- भारत में प्राचीनतम कृषि का साक्ष्य लहुरादेव (9000 ई.पू. से 7000 ई.पू.) संतकबीर नगर से तत्पश्चात् मेहरगढ़ से प्राप्त हुए हैं।
- एच.पी. लेमसूरिए ने नवपाषाण काल के प्रथम प्रस्तर उपकरण की खोज 1860 ई. में टोंस बेलन नदी घाटी (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र से की है।
- कोल्डिहवा (प्रयागराज) से सर्वप्रथम चावल का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
- बुर्जहोम नवपाषाणिक स्थल से मानव कंकाल के साथ कुत्ते के कंकाल के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

UPPCS (Mains) G.S. Ist 2011

- चिंराद (सारण, बिहार) नवपाषाणिक स्थल से पशु हड्डी के उपकरण एवं हिरण की सींगों के उपकरण मिले हैं।
- संगनकल्लू, पिकलीहल, उत्तनूर नवपाषाणिक पुरास्थल से राख के टीले के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

UPPCS (Mains) G.S. Ist Paper 2009

- मानव द्वारा सर्वप्रथम 'जौ' नामक अनाज का उत्पादन प्रारम्भ किया गया था।
- नवपाषाणिक उपकरण बसुली, छेनी, छेद वाला गोल पत्थर आदि थे।
- बुर्जहोम (जम्मू-कश्मीर) से फसल काटने का आयताकार पाषाण उपकरण (हार्वेस्टर) प्राप्त हुआ है।
- मगहड़ा (प्रयागराज, उत्तर प्रदेश) नवपाषाणिक स्थल से पशु बाड़े का प्रमाण पाया गया है।
- **नवपाषाण काल की प्रमुख देन है –**

  स्थिर ग्राम्य जीवन का विकास

  कृषि का विकास

  कुम्भकारी निर्माण

  आग का सर्वप्रथम प्रयोग

  पहिए का आविष्कार

❖ आद्य ऐतिहासिक काल

- आद्य ऐतिहासिक काल में लेखन कला का विकास हो चुका था, किन्तु इस काल की लिपियाँ अपठित हैं।
- आद्य ऐतिहासिक काल से संबंधित हमारी जानकारी केवल पुरातात्विक अनुसंधान पर निर्भर है।
- सिन्धु सभ्यता और वैदिक सभ्यता आद्य ऐतिहासिक काल की मानी जाती है।
- गैरिक एवं कृष्ण लोहित मृदभाण्ड आद्य ऐतिहासिक काल से संबंधित हैं।

❖ ताम्र-पाषाण काल

- मनुष्य ने इस काल में ताँबे के औजारों के साथ ही साथ पत्थर के बने हुए उपकरणों का प्रयोग किया।
- ताम्र पाषाणिक संस्कृति को 'कैल्कोलिथिक संस्कृति' भी कहा जाता है।
- भारतीय ताम्र पाषाणिक संस्कृति कृषि एवं ग्राम्य जीवन पर आधारित थी।
- भारत में ताम्र पाषाणिक संस्कृति से सम्बद्ध स्थल दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिण-पूर्वी भारत में पाये गये हैं।

प्रमुख ताम्रपाषाणिक संस्कृति	
अहाड़ (अहार संस्कृति)	2100 ई.पू. से 1500 ई.पू.
कायथा संस्कृति	2000 ई.पू. से 1800 ई.पू.
मालवा संस्कृति	1700 ई.पू. से 1200 ई.पू.
जोर्वे संस्कृति	1400 ई.पू. से 700 ई.पू.

- अहाड़, बालाथल, बागोर, ओजियाना एवं गिलुंद ताम्रपाषाणिक स्थल राजस्थान से संबंधित है।
- अहाड़ ताम्र पाषाणिक स्थल को 'तांबवती' के नाम से भी जाना जाता है।
- जोर्वे ताम्रपाषाणिक स्थल में 'दायमाबाद' सबसे बड़ा स्थल था।
- ताम्रपाषाणिक स्थल दायमाबाद से ताँबे का रथ प्राप्त हुआ है।
- दायमाबाद ताम्रपाषाणिक स्थल से कुत्ता और दो बैलों के रथ पर सवार खड़े रथी का प्रमाण मिला है।
- 'वृत्ताकार गर्तगृहों' की प्राप्ति इनामगाँव (महाराष्ट्र) से हुई।
- पुरातत्वविद् एम.एस. धवलीकर एवं एच.डी. संकालिया ने इनामगाँव का उत्खनन कार्य कराया था।
- इनामगाँव ताम्रपाषाणिक स्थल से सिंचाई हेतु 'पत्थर से निर्मित' बाँध के प्रमाण मिले हैं।
- गुनगेरिया (मध्य प्रदेश) ताम्रपाषाणिक स्थल से सबसे ज्यादा संख्या में ताम्र संचय की प्राप्ति हुई है।
- कायथा (मध्य प्रदेश) ताम्रपाषाणिक स्थल की खोज वी.एस. वाकणकर ने की है। यहाँ के मृदभाण्डों पर प्राक्-हड़प्पन, हड़प्पन और हड़प्पोत्तर संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है।
- महाराष्ट्र में मृतक को अस्थिकलश में रखकर घरों में फर्श के नीचे गाड़ा जाता था।
- गंगाघाटी में स्थित 'नरहन संस्कृति' ताम्र पाषाण संस्कृति से संबंधित है।

सिन्धु सभ्यता

- सिन्धु सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता एवं कांस्य युगीन सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- यह सभ्यता आद्य ऐतिहासिक काल से संबंधित है।
- रेडियो कार्बन C-14 द्वारा विश्लेषित सिन्धु सभ्यता की सर्वाधिक मान्य तिथि 2300 1700 ई.पू. है।
- इस सभ्यता का विस्तार क्षेत्र लगभग 13 लाख वर्ग किमी. है।
- सिन्धु सभ्यता का आकार त्रिभुजाकार है।

सिन्धु सभ्यता का विस्तार

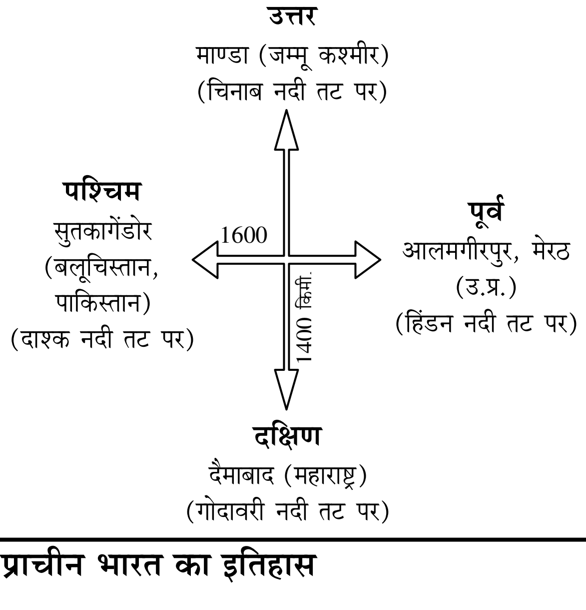

- वर्ष 1826 में 'चार्ल्स मेसन' ने हड़प्पा स्थित विशाल टीले की जानकारी दी थी।

नोट : भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक जॉन मार्शल के निर्देश पर सन् 1921 में दयाराम साहनी ने पंजाब (पाकिस्तान) के तत्कालीन मांटगोमरी जिले में रावी नदी के बायें तट पर स्थित हड़प्पा के टीले का पुनरावेषण किया।

- वर्ष 1922 में राखालदास बनर्जी ने सिंध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के दाहिने तट पर स्थित मोहनजोदड़ो के टीलों का पता लगाया।
- सिन्धु सभ्यता की प्रकृति नगरीय थी।
- सिन्धु सभ्यता से पूर्व परिपक्व अवस्था में प्राप्त होने वाले बड़े नगर हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगा, बनावली, राखीगढ़ी, धौलावीरा हैं।
- भारत के स्वतन्त्रता पश्चात् सिन्धु सभ्यता के सर्वाधिक पुरास्थल की खोज गुजरात से की गयी है।

सैन्धव सभ्यता के स्थल			
स्थल	उत्खनन वर्ष	उत्खननकर्ता	देश/राज्य
शोर्तुघई			अफगानिस्तान
सुतकागेंडोर	1927	आरेल स्टीन	बलूचिस्तान (पाकिस्तान)
सोत्काकोह	1962	जी.एफ. डेल्स	बलूचिस्तान (पाकिस्तान)

डाबरकोट	1935	अर्नेस्ट मैके	बलूचिस्तान (पाकिस्तान)
नौशारो			बलूचिस्तान (पाकिस्तान)
कोटदीजी	1953	फजल अहमद खाँ	सिंध (पाकिस्तान)
अलीमुराद		एन.जी. मजूमदार	सिंध (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ो	1922	राखलदास बनर्जी	सिंध (पाकिस्तान)
चन्हुदड़ो	1931	ननी गोपाल मजूमदार	सिंध
डाबरकोट	1935	जॉन हेनरी मैके	बलूचिस्तान (पाकिस्तान)
बालाकोट	1979	जी.एफ. डेल्स	सिंध
अल्लाहदीनों	1982	फेयर सर्विस	कराची (पाकिस्तान)
माण्डा	1982	जे.पी. जोशी	जम्मू-कश्मीर
हड़प्पा	1921	राय बहादुर दयाराम साहनी	पंजाब (पाकिस्तान)
रोपड़	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब
बाड़ा	1956	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब
राखीगढ़ी	1969	सूरजभान	हरियाणा
कुणाल	1974	जे.पी. जोशी	हरियाणा
बनावली	1973-74	रवीन्द्र सिंह बिष्ट	हरियाणा
बालू	1974-79	उदयवीर सिंह तथा सूरजभान	हरियाणा
मीताथल	1968	सूरजभान	हरियाणा
कालीबंगा	1961	ब्रजवासी लाल, बालकृष्ण थापड़	राजस्थान
आलमगीरपुर	1958	यज्ञदत्त शर्मा	मेरठ (उ.प्र.)
हुलास	1978-83	के.एन. दीक्षित	सहारनपुर (उ.प्र.)
माण्डी			मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
रंगपुर	1931-34	माधोस्वरूप वत्स	अहमदाबाद (गुजरात)
धोलावीरा	1990-91	रवीन्द्र सिंह विष्ट	गुजरात
सुरकोटडा	1964	जगपति जोशी	गुजरात
लोथल	1957-58	एस.आर. राव	गुजरात
पाद्री			गुजरात
रोजदी	1982-95		गुजरात
मालवण	1967	जे.पी. जोशी	गुजरात
कुन्तासी		एम.के. धवलीकर, एम.आर. रावल, वाई.एम. चीतलवाल	गुजरात
देसलपुर	1964	के.वी. सौन्दरराजन	गुजरात
दैमाबाद	1974-75 1975-76 1978-89	शि. रंगनाथराव एस.ए. साली	महाराष्ट्र
भगवानपुरा	1975-76	जे.पी. जोशी	हरियाणा

❖ मोहनजोदड़ो

- यह सिन्धु सभ्यता का सबसे बड़ा और प्रमुख नगर है।
- मोहनजोदड़ो का अर्थ सिंधी भाषा में मृतकों का टीला होता है।
- यहाँ से ही कुषाण कालीन स्तूप के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से प्राप्त अन्नागार संभवतः सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है।
- स्नानागार के केन्द्रीय प्रांगण में जलाशय है। जलाशय 11.89 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा एवं 2.44 मीटर गहरा है।
- मोहनजोदड़ो के वृहत्तस्नानागार में उतरने के लिए उत्तर एवं दक्षिण दिशा में सीढ़ियाँ बनी थीं।

SSC MTS 06.07.2022 (Shift-II)

- वृहत्त स्नानागार को प्राकृतिक चारकोल की परत चढ़ाकर जलरोधी बनाया गया था।

SSC GD 02.12.2021 (Shift-II)

- इस पुरास्थल से नर्तकी की एक कांस्य मूर्ति मिली है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा के ऊपर पद्मासन की मुद्रा में विराजमान एक योगी का चित्र मिला है।
- इस स्थल से प्राप्त पद्मासन योगी के चित्र के चारों ओर हाथी, भैंसा, गैंडा, चीता के भी चित्र प्राप्त हुए हैं।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक शील (मुद्रा) पर तीन मुख वाले देवता की प्रतिमा मिली है जिसे जॉन मार्शल ने 'रूद्र शिव' कहा है।
- कांचली मिट्टी की गिलहरी मोहनजोदड़ो से मिली है।
- मोहनजोदड़ो के अनेक घरों से व्यक्तिगत कुएँ के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- इस सिन्धु स्थल से कांस्य से निर्मित भैंसे एवं बकरे की प्रतिमा मिली है।

❖ हड़प्पा

- यहाँ से विशाल अन्नागार के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- इस स्थल से ही श्रमिक आवास के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

- इस पुरास्थल से लाल बलुआ पत्थर से निर्मित एक युवा का खंडित धड़ मिला है।
- हड़प्पा से स्लेटी पत्थर से निर्मित नृत्य मुद्रा का खंडित धड़ मिला है।
- हड़प्पा की मुहरों पर सर्वाधिक एक शृंगी पशु का अंकन मिलता है।
- इस सैन्धव स्थल से प्राप्त एक आयताकार मुहर से स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा दिखाया गया है।

❖ लोथल

- लोथल की नगर-निर्माण योजना के आधार पर ही इसे 'लघु हड़प्पा या लघु मोहनजोदड़ो' कहा गया है।
- लोथल एवं सुरकोटड़ा सिन्धु सभ्यता के बन्दरगाह नगर थे।
- लोथल के अनेक मकानों से वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार 'अग्नि स्थल' पाये गये हैं जिनका प्रयोग यज्ञ अनुष्ठान के लिए होता था। **SSC GD 14.12.2021 (Shift-II)**
- मनके बनाने के कारखानें लोथल एवं चन्हुदड़ों से मिले हैं।
- लोथल से ताँबे के कारखाने का स्थल भी मिला है।
- गैंडे की मृण्मूर्ति लोथल से मिली है।
- अश्व मृण्मूर्तियाँ लोथल से मिली हैं।
- लोथल में जल निकासी व्यवस्था के लिए नालियों को पक्की ईंटों से बनाया गया था।

SSC Selection Posts XI 28.06.2023

❖ धौलावीरा

- धौलावीरा सिन्धु सभ्यता का सर्वाधिक सुव्यवस्थित, खूबसूरत नगर है।
- इस स्थल से पॉलिशदार श्वेत पाषाण खण्ड मिले हैं।
- धौलावीरा में जल संरक्षण के लिए 16 जलाशयों का निर्माण किया गया था। **RRB NTPC 01.04.2021 (Shift-II)**
- इस नगर से नामपट्टिका का शिलापट मिला है।
- इस नगर से स्टेडियम के भी साक्ष्य मिले हैं।

❖ खालीबंगा

- कालीबंगा का अर्थ है काले रंग की चूड़ियाँ।
- कालीबंगा (राजस्थान) से जुते हुए खेत के प्रमाण मिले हैं।

SSC CHSL (Tier-I) 10.07.2019 (Shift-I)

- इस स्थल से अग्नि वेदिकाएं मिली हैं।
- नक्काशीदार ईंटों के प्रयोग का साक्ष्य कालीबंगा से प्राप्त हुआ है।

अन्य हड़प्पीय स्थल

- राखीगढ़ी भारत में स्थित सबसे बड़ा सैन्धव स्थल है।
- बनावली (हरियाणा) से पक्की मिट्टी की बनी हुई हल की प्रतिकृति मिली है।
- घोड़े की हड्डियों के साक्ष्य सुरकोटड़ा से प्राप्त हुई है।
- कुरन नामक सैन्धव स्थल से दो विस्तृत स्टेडियम मिले है।
- सूती वस्त्र के साक्ष्य मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुए हैं।
- चहुन्दड़ो से वक्राकार ईंटें मिली हैं।
- दायमाबाद से एक बटन की आकृति की मोहर पर सिंधु लिपि के चिह्न मिले हैं।
- बालाकोट तथा लोथल से सीप उद्योग के प्रमाण मिले हैं।
- लोथल से कुत्ते तथा कालीबंगा से वृषभ की ताम्र मूर्तियाँ मिली हैं।
- फतेहाबाद (हरियाणा) स्थित सैन्धव स्थल कुणाल से दो चाँदी के मुकुट मिले हैं।
- कालीबंगा एवं बनावली से हड़प्पा पूर्व और हड़प्पा कालीन दो सांस्कृतिक अवस्थाएं पायी गयी हैं।
- हड़प्पीय स्थल 'बनावली' रंगोई नदी पर स्थित है।

UPPCS (Pre.) Exam 2021

- बनावली से टेराकोटा हल मॉडल मिला है।

SSC CHSL 09.08.2021 (Shift-II)

- रंगपुर और रोजदी उत्तर हड़प्पा के स्थल हैं।
- सिन्धु सभ्यता मूर्तियों का निर्माण मधूच्छिष्ट विधि (Los wakx technique) से की जाती थी।

❖ लिपि

- हड़प्पाई लिपि का सबसे पुराना नमूना 1853 ई. में मिला था।
- यह लिपि 1923 ई. तक पूर्णतः प्रकाश में आ गयी।
- इस लिपि में 250 से 400 तक चित्राक्षर (पिक्टोग्राफ) हैं।
- हड़प्पाई लिपि भावचित्रात्मक है।
- हड़प्पाई लिपि वर्णात्मक नहीं, बल्कि मुख्यतः चित्र लेखात्मक है।
- यह लिपि दाँयीं से बाँयीं ओर लिखी जाती थी।
- लेखन कला को विकसित करने वाली पहली सभ्यता सुमेरियन सभ्यता है।

❖ नगर नियोजन

- सिन्धु सभ्यता की विशेषता उसकी नगर योजना प्रणाली थी।
- सिन्धु सभ्यता के लोगों ने नगरों एवं घरों के विन्यास के लिए ग्रिड पद्धति अपनायी थी।
- हड़प्पा और मोहनजोदड़ो दोनों नगरों के अपने-अपने दुर्ग थे जहाँ शासक वर्ग का परिवार रहता था।
- प्रत्येक नगर में दुर्ग के बाहर एक-एक उससे निम्न स्तर का शहर था जहाँ ईंटों के मकानों में सामान्य लोग रहते थे।
- सैन्धव सभ्यता के भवन तीन प्रकार के हैं, निवासगृह, विशाल भवन तथा सार्वजनिक स्नानागार।
- सिन्धु सभ्यता के भवन दो कमरों से लेकर बड़े महलों के आकार के होते थे।
- भवनों के दरवाजे और खिड़कियाँ सड़क की ओर न खुलकर गलियों की ओर खुलते थे।
- लोथल नगर के भवनों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर खुलते थे।
- सिन्धु सभ्यता के नगरों में जल निकास प्रणाली हेतु सड़कों के नीचे मोरियाँ (मैनहोल) बनीं थी।

❖ कृषि

- सिन्धु सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, राई, मटर आदि अनाज पैदा करते थे।
- सबसे पहले कपास उत्पादन सिन्धु सभ्यता के लोगों द्वारा किया गया।

नोट : कपास का उत्पादन सिन्धु क्षेत्र में हुआ, इसलिए यूनान के लोग इसे सिण्डन (Sindon) कहने लगे जो सिन्धु शब्द से उद्भूत हुआ है।

- सिन्धु सभ्यता के लोग लकड़ी के हलों का प्रयोग करते थे।
- फसल काटने के लिए पत्थर के हंसियों का प्रयोग करते थे।
- फसल सिंचाई हेतु गवरबन्दों या नालों को बाँधों से घेरकर जलाशय बनाते थे।
- सिन्धु सभ्यता में नहर या नालों से सिंचाई नहीं होती थी।
- लोथल, रंगपुर, बालू तथा हुलास से धान (चावल) की उपज के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली है।
- चान्हुदड़ों से सरसों, हड़प्पा से तिल एवं कुन्नाशी से कोदो की उपज के प्रमाण मिले हैं।
- रोजदी एवं अन्य सैन्धव स्थलों से मोटे अनाज की रागी, कोदो, सवा, ज्वार इत्यादि प्रजातियाँ मिली हैं।
- लोथल से बाजरे के दाने मिले हैं।
- सिन्धु सभ्यता स्थल नौशारो से मसूर के दाने मिले हैं।
- मोहनजोदड़ो से सिलबट्टा मिला है।
- लोथल से एक वृत्ताकार चक्की के दो पाट मिले हैं।
- सैन्धववासी भोजन को मीठा बनाने के लिए शहद, खजूर और ताड़ की शर्करा का प्रयोग करते थे।
- मोहनजोदड़ो से एक चाँदी के बर्तन में कपड़े के अवशेष पाये गये हैं।

सिन्धु सभ्यता में विदेश व्यापार

आयातित वस्तुएँ	प्रदेश
डामर (बिटुमिन)	बलूचिस्तान
ऐलाबास्टर	बलूचिस्तान
सेलखड़ी	बलूचिस्तान/राजस्थान
चाँदी	अफगानिस्तान/ईरान
सोना	कर्नाटक (मैसूर)
ताँबा	खेतड़ी (राजस्थान)
टिन	अफगानिस्तान/ईरान
सीसा	राजस्थान, ईरान, अफगानिस्तान
फिरोजा	फारस/अफगानिस्तान
जेडाइट	पामीर
लाजवर्द	बदख्शां
लालरंग	होरमुज (फारस)
शंख	पश्चिमी भारत/फारस
गोमेद, कार्नीलियन (तमड़ा) सुलेमानी, कैल्सीडोनी तथा स्फटिक	राजपूताना, पंजाब, मध्य भारत, काठियावाड़
स्लेटी पत्थर	राजस्थान
संगमरमर	राजस्थान
ब्लड स्टोन	राजस्थान
शंख, शीप	लोथल, बालाकोट
देवदार	हिमालय
शिलाजीत	पर्वतीय क्षेत्र

- लोथल से सेलखड़ी की वृत्ताकार बटन जैसी मुद्रा मिली हैं। ऐसी ही मुद्राएँ बहरीन द्वीप और फारस की खाड़ी के अन्य स्थलों से मिली हैं।
- सूसा (ईरान) से सिन्धु सभ्यता निर्मित एक मुद्रा, एक घनाकार बाट, हाथी दाँत की गोटी व रेखांकित मनके मिले हैं।
- मेलुहा की पहचान सिन्ध अथवा सिन्ध क्षेत्र में स्थित मोहनजोदड़ो से की जाती है।
- दिल्मुन (बहरीन) को 'सूर्योदय का क्षेत्र' 'साफ सुथरे नगरों वाला स्थान' और 'हाथियों का देश' कहा गया है।
- मगन की पहचान मकरान तट पाकिस्तान से की जाती है।
- बाटों की तौल का अनुपात 1, 2, 4, 8, 16, 32, 64, 160, 208, 320 आदि था।
- तौल की इकाई सम्भवतः 16 के अनुपात में थी।
- सैन्धव स्थलों से बाट घनाकार, वर्तुलाकार, बेलनाकार, शंक्वाकार एवं ढोलाकार मिले हैं।
- मोहनजोदड़ो से सीप का बना हुआ तथा लोथल से हाथी-दाँत का बना हुआ एक मापक (Scale) मिला है।

UP Ro/ARO - 2014

- सिन्धु सभ्यता के लोग यातायात के लिए दो पहिए और चार ठोस पहिए वाली बैलगाड़ी अथवा भैंसागाड़ी का उपयोग करते थे।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर अंकित नाव के चित्र एवं लोथल से मिट्टी की बनी खिलौना नाव मिली है।
- नाव साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि सैन्धव लोग आन्तरिक एवं बाह्य व्यापार हेतु नाव का प्रयोग करते थे।

सिंधु सभ्यता - अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सिन्धु सभ्यता का राजनैतिक संगठन स्पष्ट नहीं था, सम्भवतः वह धनिक वर्ग के हाथ में था।
- 'स्टुअर्ट पिगट' महोदय ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को विस्तृत साम्राज्य की जुड़वां राजधानी कहा है।
- सिन्धु सभ्यता के लोग ऊनी एवं सूती वस्त्रों का प्रयोग करते थे।
- इस समय स्त्री-पुरुष दोनों आभूषण पहनते थे।
- गुजरात के प्रभास पाटन (सोमनाथ) और रंगपुर जैसे कुछ स्थान हड़प्पा संस्कृति के मानस पुत्र माने जाते हैं।
- सैन्धववासी शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे।

- चन्हुदड़ों की खोजों से लिपिस्टिक के अस्तित्व का भी संकेत मिलता है।
- सैन्धववासी आमोद-प्रमोद के प्रेमी थे। पासा इस समय का प्रमुख खेल था।
- मोहनजोदड़ो से मिट्टी तथा पत्थर के पासे मिले हैं।
- लोथल से पासे खेलने के दो बोर्ड मिले हैं।
- पासे खेलने के अतिरिक्त मनोरंजन के लिए मछली पकड़ना, पशुओं का शिकार करना, पशु-पक्षियों को आपस में लड़ाना, खेल-कूद, नृत्य भी मनोरंजन का प्रिय साधन रहा।
- मोहन जोदड़ो एवं लोथल से नाग के चित्र या मॉडल प्राप्त होते हैं। **UPPCS (Pre) Exam 2022**
- सिन्धु सभ्यता के लोग तलवार से परिचित थे।
- सैन्धव काल से ही माँग में सिन्दूर भरने की प्रथा प्रचलित थी।
- हड़प्पा से एक ऐसा कब्रिस्तान मिला है जिसे समाधि R-37 नाम दिया गया है।
- मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार के सन्दर्भ में 'मार्शल' महोदय ने इसे तत्कालीन विश्व का एक आश्चर्यजनक निर्माण कहा है।
- चन्हुदड़ों से सैन्धव संस्कृति के अतिरिक्त प्राक् हड़प्पा संस्कृति झूकर, झाकर संस्कृति के अवशेष मिले हैं।
- चन्हुदड़ों एक मात्र सैन्धव पुरास्थल है जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं।
- सैन्धव स्थल मोहनजोदड़ो से पुरोहित आवास मिला है।
- दैमाबाद से रथ चलाते हुए मनुष्य, साँड़, गैंडे की आकृतियाँ प्राप्त हुई है।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, सुरकोटड़ा के स्थलों से कूबड़दार ऊँट का जीवाश्म मिला है।
- सुरकोटडा, लोथल, कालीबंगा से घोड़े की मृणमूर्तियाँ, हड्डियाँ, जबड़े आदि के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- मिस्र के साथ व्यापारिक सम्बन्ध का पता लोथल से प्राप्त 'ममी' की एक आकृति से चलता है।
- सैन्धव काल में सर्वाधिक मुहरें सेलखड़ी की बनी हैं।
- सैन्धव सभ्यता के मृदभांड मुख्यतया लाल एवं गुलाबी रंग के हैं।
- लोथल, कालीबंगा एवं बनावली के पुरास्थलों से अग्निकुण्ड अथवा यज्ञ वेदियों के साक्ष्य मिलते हैं।

मोहनजोदड़ो की जनसंख्या मिश्रित प्रजाति की थी

(1) आद्य-ऑस्ट्रेलायड
(2) भूमध्य सागरीय
(3) अल्पाइन
(4) मंगोलायड

- सिन्धु सभ्यता में अन्त्येष्टि संस्कार की तीन विधियाँ प्रचलित थी, पूर्ण समाधिकरण, आंशिक समाधिकरण एवं दाह संस्कार।
- सामान्यतः उत्तर-दक्षिण दिशा में शव दफनाने की प्रथा प्रचलित थी।
- सैन्धव पुरास्थल कालीबंगा से 'एक' और लोथल से 'तीन' युग्म समाधियाँ मिली हैं।

सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थल एवं उनसे सम्बन्धित नदी

स्थल	नदी
मोहनजोदड़ो	सिन्धु
हड़प्पा	रावी
कालीबंगा	घग्घर
लोथल	भोगवा
माण्डा	चिनाब
रोपड़	सतलज
भगवानपुरा	सरस्वती
सुतकागेंडोर	दाश्क

सिन्धु सभ्यता के विनाश के कारणों पर विद्वानों का मत

विनाश का कारण	विद्वान
आर्यों का आक्रमण	मार्टीमर ह्वीलर, गार्डन चाइल्ड, स्टुअर्ट पिगट
जलवायु परिवर्तन	अमलानन्द घोष, आरेल स्टाइन
बाढ़	मार्शल, मैके, एस.आर. राव
भू-तात्विक परिवर्तन	एम.आर. साहनी, एच. लैम्ब्रिक, जी.एफ. डेल्स
अदृश्य गाज	एम. दिमित्रियेव
महामारी	के.यू.आर. कनेडी

❖ धार्मिक जीवन

- मातृदेवी की पूजा सिन्धु सभ्यता में सर्वाधिक प्रचलित थी।
- मातृशक्ति की पूजा, पशुपति के रूप में देव-उपासना, लिंग तथा योनि पूजा, पशु एवं नाग पूजा, वृक्ष पूजा, जल की पूजा, मूर्ति पूजा आदि सैन्धव लोग करते थे।
- सैन्धववासी स्वास्तिक प्रतीक एवं पीपल वृक्ष की पूजा करते थे।
- हड़प्पा से प्राप्त एक मिट्टी की मूर्ति से स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा दिखाया गया है।
- यह संभवतः पृथ्वी देवी की प्रतिमा और इसका निकट सम्बन्ध पौधों के जन्म और वृद्धि से रहा होगा।
- सिन्धुवासी धरती को उर्वरता की देवी समझते थे और उनकी पूजा करते थे।
- पशुओं में कूबड़ वाले साँड़ की पूजा करते थे।
- सैन्धव स्थलों से किसी भी मन्दिर के अवशेष नहीं मिले हैं।
- अनेक सैन्धव पुरास्थलों से नारी मृणमूर्तियाँ मिली हैं जिससे अनुमान लगाया जाता है कि सैन्धव समाज 'मातृसत्तात्मक' था।

धार्मिक प्रतीक के चिन्ह

जल की पवित्रता – सैंधव सभ्यता के लोग जल को पवित्र मानते थे तथा धार्मिक अवसरों सामूहिक स्नान का महत्व था।

मातृदेवी – देवी-देवताओं में सबसे प्रमुख थी। इन्हें उर्वरता का प्रतीक माना जाता था।

पाषाण चक्र – विद्वानों ने इनकी पहचान योनि के रूप में की है।

शिव-पशुपति – मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा के ऊपर पद्मासन की मुद्रा में विराजमान एक योगी का चित्र मिला है।
– इसके तीन मुख हैं, जिसे त्रिभुज, पशुपति, योगेश्वर अथवा महायोगी कहा गया है।

लिंग, योनि – छोटे-छोटे छिद्रयुक्त शिव लिंग को सैन्धववासी ताबीज के रूप में धारित करते थे।

पशु-पक्षी – पशुओं में गैंडा, बैल, चीता, हाथी, भैंसा, कूबड़दार बैल आदि की पूजा करते थे। फाख्ता एक पवित्र पक्षी माना जाता था, वृक्षों में पीपल वृक्ष पवित्र माना जाता था।

स्वास्तिक तथा चक्र
– इनकी पूजा सैन्धववासी करते थे, जिन्हें वे पवित्र मानते थे। इनका सम्बन्ध सूर्योपासना से करते थे।

नागपूजा – विभिन्न बर्तनों से प्राप्त सर्प के अंकन से नागपूजा के महत्व का पता चलता है।

अग्निकुण्ड अथवा यज्ञीय वेदी
– लोथल तथा कालीबंगा से प्राप्त अग्निकुण्ड से यज्ञीय विधि का साक्ष्य मिलता है। यहाँ से अनेक पशुओं की जली हड्डियों के प्रमाण मिले हुए हैं।

वैदिक काल

■ सैंधव संस्कृति के पश्चात् जिस नवीन सभ्यता का विकास हुआ उसे वैदिक अथवा आर्य सभ्यता के नाम से जाना जाता है।
■ भारत में आगमन के पश्चात् आर्यों ने सप्तसैंधव प्रदेश को अपना निवास स्थान बनाया था।
■ आर्यों को वैदिक सभ्यता का जनक माना जाता है।
■ वैदिक साहित्य की रचना आर्यों ने की थी।
■ आर्यों की भाषा संस्कृत थी।
■ वेद शब्द की उत्पत्ति 'विद्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'जानना' अर्थात् अपने समय के ज्ञान का संग्रह।

वैदिक काल –
→ प्रारम्भिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500ई. पू.-1000 ई. पू.)
→ उत्तर वैदिक काल (1000ई. पू.-600 ई. पू.)

■ वेदों की संख्या 4 है, महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास को वेदों का संकलनकर्ता माना जाता है।
■ सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद है। **कनिष्क सहायक 2015**

वेद	उपवेद	संकलन	ऋत्विक
(1) ऋग्वेद	आयुर्वेद	ऋचाओं का संकलन	होता (ऋचाओं का पाठ करता है।)
(2) यजुर्वेद	धनुर्वेद	यज्ञ कर्म से संबंधित सूक्त	अध्वर्यु (यज्ञ का विधिपूर्वक सम्पादन)
(3) सामवेद	गंधर्ववेद	गीतों का संकलन	उद्गाता (यज्ञ में ऋचाओं का स्वरगान)
(4) अथर्ववेद	शिल्पवेद	तंत्र-मंत्र, रोग निवारक उपाय का	ब्रह्मा (यज्ञ का निरीक्षण करता है)

■ ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद को संयुक्त रूप से वेदत्रयी कहते हैं।

❖ वैदिक काल में साहित्य का विकास क्रम

(1) संहिता - (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद)
(2) ब्राह्मण - (मूल संहिता के भाष्यों के रूप में लिखे गए ग्रन्थ हैं।)
(3) आरण्यक-(इनकी रचना वनों में हुई, ये ब्राह्मण ग्रंथों के परिशिष्ट हैं)
(4) उपनिषद्-(आरण्यक का विशिष्ट भाग है, वैदिक साहित्य के अंतिम भाग में परिणत होने के कारण इसे वेदान्त कहते हैं।) उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ किसी के निकट बैठना होता है। इन्हें भारतीय दर्शन का स्रोत माना जाता है।

❖ ऋग्वेद

■ यह ऋषि परिवारों में प्रचलित अपने समय की बिखरी हुई ऋचाओं का संकलन है।
■ ऋग्वेद में 10 मंडल, 64 अध्याय, 1028 सूक्त (साकल : 1017 सूक्त तथा बालखिल्य : 11 सूक्त), 10552 ऋचाएं हैं।
RRB Group-D, 26.08.2022
■ ऋग्वेद की मूल लिपि ब्राह्मी थी।
■ मंडलों का विभाजन ऋषि या ऋषि परिवारों के आधार पर हुआ है।
■ 10 मंडलों में 2 से 7 तक (वंश मंडल) प्राचीनतम तथा प्रथम और दशम मंडल बाद में जोड़े गए माने जाते हैं।

10 मंडल

मंडल	रचयिता	विशेष
प्रथम	ऋषिगण (मधुछंदा, अंगिरा दीर्घतम आदि)	
द्वितीय	गृत्समद	
तृतीय	विश्वामित्र	गायत्री मंत्र का वर्णन
चतुर्थ	वामदेव	कृषि से सम्बन्धित मंत्र
पंचम	अत्रि	
षष्ठम	भारद्वाज	

सप्तम्	वशिष्ठ	दासराज्ञ युद्ध का वर्णन
अष्ठम्	कण्व एवं अंगिरस	
नवम	ऋषिगण	सोम मंडल कहा जाता है
दशम्	ऋषिगण (विमदा, इन्द्र, शची और अन्य)	पुरूष सूक्त है जिसमें चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) की उत्पत्ति का वर्णन है। नदी सूक्त है।

- **ऋग्वेद की ऋचाओं की रचयिता ऋषिकाएं**-लोपामुद्रा, अपाला, घोषा, रोमशा, विश्ववारा, शची, पौलोमी, विशपला, मुद्गलानी, काक्षावृत्ति ।
- ऐतरेय ब्राह्मण में शासकों को दिशानुसार इस प्रकार संबोधित किया गया है।

उत्तर दिशा के शासक	विराट
पूर्व दिशा के शासक	सम्राट
दक्षिण दिशा के शासक	भोज
पश्चिम दिशा के शासक	स्वराट
मध्य क्षेत्र के शासक	राजा

वेद	शाखा	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद	विशेष
ऋग्वेद	शाकल, वाष्कल, अश्वालायन आदि	ऐतरेय कौषीतकी (शंखायन)	ऐतरेय कौषीतकी	ऐतरेय कौषीतकी	ऐतरेय ब्राह्मण में राजसूय यज्ञ एवं सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग का वर्णन मिलता है।
यजुर्वेद	कृष्ण यजुर्वेद काठक कपिष्ठल मैत्रायणी तैत्तिरीय	तैत्तिरीय	तैत्तिरीय मैत्रायणी	तैत्तिरीय मैत्रायणी श्वेताश्वर कठोपनिषद	शतपथ ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य - मैत्रेयी संवाद, जलप्लावन की कथा, विदेह माधव की कथा, पुरूरवा-उर्वशी आख्यान का उल्लेख है। बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य-गार्गी संवाद है। कठोपनिषद् में यम-नचिकेता संवाद का वर्णन है। स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार तैत्तिरीय उपनिषद देता है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' कथन बृहदारण्यक उपनिषद से लिया गया है।
	शुक्ल यजुर्वेद (वाजसनेयी संहिता) कण्व माध्यन्दिन	शतपथ	बृहदारण्यक	ईशोपनिषद बृहदारण्यक	
सामवेद	कौथुम राणायनीय जैमिनीय	पंचविश (तांड्य) छान्दोग्य जैमिनीय षड्विंश	छान्दोग्य जैमिनीय	छान्दोग्य केन	छान्दोग्य उपनिषद सबसे प्राचीन उपनिषद है। सर्वप्रथम इसी उपनिषद् में 'कृष्ण' का उल्लेख है। इसमें सत्यकाम-जाबाल कथा, उद्दालक आरूणि व श्वेतकेतु संवाद का उल्लेख है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ नामक तीन आश्रमों का उल्लेख छान्दोग्य उपनिषद में है।
अथर्ववेद	शौनक पिप्पलाद	गोपथ	-	मुण्डको माण्डूक्य प्रश्न	मुण्डकोपनिषद में 'सत्यमेव जयते' का उल्लेख है। सबसे छोटा उपनिषद् माण्डूक्य है।

- मूल वैदिक साहित्य को समझाने तथा उनका उपयोग बताने हेतु वेदांग ग्रन्थ की रचना की गई। इनकी संख्या 6 है।
  (1) शिक्षा (उच्चारण की विधि)
  (2) कल्प (कर्मकाण्ड तथा आचार)
  (3) व्याकरण (शब्दों की व्युत्पत्ति)
  (4) निरूक्त (वैदिक शब्दों की व्याख्या)

RRB NTPC 23.02.2021 (Shift-I)

(5) छन्द (अक्षरों की गणना के आधार पर पद्यात्मक मन्त्रों के स्वरूप का निर्धारण तथा नामकरण)

(6) ज्योतिष (यज्ञ के समय का निरूपण)

- सामवेद से संगीत शास्त्र की उत्पत्ति हुई।
- अथर्ववेद में अध्यात्म विद्या, शत्रुनाश, आरोग्य प्राप्ति, कृषि वृद्धि, विवाह, वाणिज्य, अभिचार आदि से सम्बद्ध मंत्रों का संकलन है।
- ऋग्वेद के नदी सूक्त में 19 नदियों का (कुछ साक्ष्यों में 21 नदियों का) उल्लेख मिलता है गंगा नदी का एक बार तथा यमुना का तीन बार उल्लेख है।

ऋग्वैदिक कालीन नदियाँ	
वर्तमान नाम	**प्राचीन नाम**
झेलम	वितस्ता
चेनाब	अस्किनी
रावी	परूष्णी
व्यास	विपासा
सतलज	शुतुद्रि/शतुद्रि
गंडक	सदानीरा
काबुल	कुभा (अफगानिस्तान)
कुर्रम	क्रुमु (अफगानिस्तान)
गोमल	गोमती (अफगानिस्तान)
स्वात	सुवास्तु (अफगानिस्तान)
घग्गर	दृश्द्वती
सरस्वती	सुरसती
सिंधु	सिंधु

- ऋग्वैदिक आर्यों की सबसे महत्वपूर्ण नदी सरस्वती थी जबकि ऋग्वेद में सर्वाधिक बार उल्लेख सिंधु नदी का हुआ है।
- सरस्वती नदी को नदीतमा, मातेतमा तथा देवीतमा कहा गया है।

UPPCS (Mains) Spl. G.S. Ist 2008

- क्लासिकीय संस्कृत में आर्य 'शब्द' का अर्थ है-उत्तम, श्रेष्ठ या कुलीन व्यक्ति।
- आर्यों के मूल निवास के सम्बन्ध में इतिहासकारों में मतभेद है-

विद्वान	आर्यों का मूल निवास
स्वामी दयानन्द सरस्वती	तिब्बत
बाल गंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव
डी. एस. द्विवेदी	मुल्तान के निकट (देविका नदी)
पं. गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
डॉ. अविनाश चन्द्र दास	सप्त सैन्धव प्रदेश
एल. डी. कल्ला	कश्मीर और हिमालय के पर्वतीय प्रदेश
डॉ. राजबली पाडेय	मध्य देश (उत्तर प्रदेश)
मैक्स मूलर	मध्य एशिया
गार्डन चाइल्ड	दक्षिणी रूस
एडवर्ड मेयर	पामीर का पठार
हर्ट एवं पेंका	जर्मनी
पी. गाइल्स	हंगरी
विलियम जोन्स एवं फिलिप्पो सेसटी	यूरोप

- पुराणों की रचना लोमहर्ष ऋषि और उनके पुत्र उग्रश्रवा द्वारा की गई है। पुराणों की संख्या 18 है –

(1) मत्स्य	(2) मार्कंडेय	(3) भविष्य
(4) भागवत्	(5) ब्रह्मांड	(6) ब्रह्मवैवर्त
(7) ब्रह्मा	(8) वामन	(9) वराह
(10) विष्णु	(11) वायु	(12) अग्नि
(13) नारद	(14) पद्म	(15) लिंग
(16) गरूड़	(17) कूर्म	(18) स्कन्द।

- **पुराणों में पांच संकेतक** - सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, तथा वंशानुचरित हैं।
- ऋग्वैदिक समाज पितृसत्तात्मक था। समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार (कुल) था।
- **कुलप** - परिवार का स्वामी, ग्रामीण-ग्राम का मुखिया तथा विशपति-विश का प्रमुख होता था।
- अनु, द्रह्यु, पुरू, यदु और तुर्वसु को पंचजन कहा गया है। जन के मुखिया को राजा कहा जाता था।
- गोत्र शब्द का मूल अर्थ वह स्थान जहाँ समूचे कुल का गोधन पाला जाता था। गोत्र का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में हुआ है।

UPPCS (Mains) G.S. Ist 2005

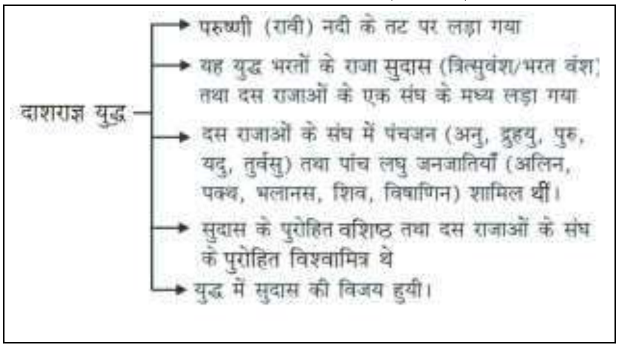

- शतपथ ब्राह्मण में सबसे अधिक 12 रत्निनों का उल्लेख किया गया है।

रत्निन	कार्य
ग्रामणी	ग्राम का मुखिया
राजा	राजा स्वयं
पट्टमहिषी	प्रधान रानी

पुरोहित	राजा का प्रधान परामर्शदाता
सेनानी	सेना का प्रमुख
सूत	रथ सेना का नायक या राजा का सारथी
अक्षवाप	आय व्यय गणनाध्यक्ष तथा द्यूत क्रीड़ा अधिकारी
क्षता/क्षति	प्रतिहार या दौवारिक (द्वार रक्षक)
भागदुध	अर्थमंत्री
संग्रहीता	कोषाध्यक्ष
पालागल	विदूषक
गाविकर्तृ	प्रधान वन संरक्षक

■ 1400 ई. पू. के बोगजकोई (एशिया माइनर) के अभिलेख (हिट्टाइट तथा मितानी राजाओं के मध्य सन्धि में) में वैदिक देवताओं-इन्द्र, वरूण, मित्र तथा नासत्य का उल्लेख है।

यज्ञ	सम्बन्ध
अश्वमेध यज्ञ	राजा के चक्रवर्ती विजय से
राजसूय	राजा के सिंहासनारोहण से
वाजपेय	राजा के रथ दौड़ से
पुरूषमेध	मनुष्य की बलि से

■ ऋग्वैदिक कालीन सबसे महत्वपूर्ण देवता इन्द्र थे जिन्हें सर्वाधिक 250 सूक्त समर्पित हैं। **UPPCS (Mains) G.S. Ist 2010**
■ इस काल में दूसरे महत्वपूर्ण देवता अग्नि (200 सूक्त समर्पित) थे।
■ वैदिक काल में गाय को अघन्या (न मारे जाने योग्य) माना गया है। गाय को सबसे मूल्यवान सम्पत्ति समझा जाता था। गाय का व्यापारी गोवणिज था।
■ वैदिक काल में पशुपालन सबसे महत्वपूर्ण तथा कृषि द्वितीय महत्वपूर्ण व्यवसाय था।
■ ऋग्वैदिक काल में वस्त्र, सूत, ऊन तथा मृगचर्म से बनाया जाता था। वस्त्र तीन प्रकार के थे।
(1) **नीवी** जो कमर के नीचे पहना जाता था।
(2) **वासस्** जो कमर के ऊपर पहना जाता था।
(3) अधिवास शरीर के ऊपरी हिस्से में धारण किया जाने वाले वस्त्र।
■ ऋग्वेद में नाई का उल्लेख 'वप्ता' के रूप में मिलता है।

कृषि संबंधी शब्दावली	
लांगन/सीर	हल
वृष	बैल
उर्वरा	जुते हुए खेत
सीता/फाल	हल से बनी नालियां
अवट	कुआँ
पर्जन्य	बादल
करीब	गोबर की खाद
कीनाश	हलवाहे
स्थिवि	अनाज जमा करने वाले कोठार

■ कृषि योग्य भूमि को 'उर्वरा' अथवा 'क्षेत्र' कहा जाता था।
■ कूप, अवट (खोदकर बने हुए गड्ढे), कुल्या (नहर), अश्मचक्र (रहट की चर्खी) आदि का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
■ आर्यों का प्रिय पशु अश्व था, कुछ सूक्तों में 'दध्रिका' नामक एक दैवी अश्व की प्रशंसा की गयी है
■ गाय को 'अष्टकर्णी' कहा गया है।
■ व्यापार- वाणिज्य 'पणि' वर्ग के लोग करते थे। 'पणि' शब्द का उल्लेख ऋग्वेद में कई स्थानों पर किया गया है।
■ 'वेकनाट' (शूदखोर) शब्द का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
■ ऋग्वेद में समुद्र शब्द का उल्लेख मिलता है। पतवार को 'अरित्र' तथा नाविक को 'अरितृ' कहा गया है।

❖ ऋग्वैदिक व्यावसायिक वर्ग

तक्षा (बढ़ई)
कर्मा (धातु कर्म करने वाले)
स्वर्णकार, कर्मकार
वाय (जुलाहे)
कुम्भकार

❖ अन्य महत्वपूर्ण शब्दावली

उर्दर —अनाज मापने का पात्र
गौरी — भैंस को कहते थे
ब्रीही —चावल
व्रजपति — चारागाह अधिकारी

■ गन्धार प्रदेश सुन्दर ऊनी वस्त्रों के लिए विख्यात था।
■ भट्टी में धातु गलाने को 'ध्याता' 'द्रविता' एवं मिट्टी के बर्तन बनाने वाले को 'कुलाल' कहा गया है।
■ वैद्य (भिषक), नर्तक-नर्तकी (वाप्तृ), मापक, वादक, नर्तक तथा सुरा बेचने वाले का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
■ श्रीमद्भागवतगीता महाभारत के भीष्म पर्व का अंश है।
■ ऋग्वेद में धनाढ्य व्यक्ति के लिए गोमत शब्द का प्रयोग हुआ है
■ ऋग्वेद में सूर्य देवता को देवी अदिति और दयुस का पुत्र कहा गया है।
■ आकाश के देवता— सूर्य, द्यौस, मित्र, पूषन, वरुण, सवितृ, विष्णु, आदित्य, ऊषा, अश्विन आदि।
■ अन्तरिक्ष के देवता— इन्द्र, रुद्र, वायु, वात, पर्जन्य, यम, प्रजापति, अदिति आदि।
■ पृथ्वी के देवता—पृथ्वी, अग्नि, सोम, बृहस्पति, भातश्विन आदि।
■ नैतिक व्यवस्था के देवता वरुण को माना गया है। इन्हें 'ऋतस्यगोपा' भी कहा गया है।
■ गुरु बृहस्पति को वैदिक देवताओं का पुरोहित माना जाता था।

ऋग्वैदिक कालीन देवता	
देवता	**संबंध**
इन्द्र	युद्ध एवं वर्षा का देवता
अग्नि	देवताओं एवं मनुष्य के बीच मध्यस्थ

वरुण	जगत नियंता, ऋतु का नियामक, जल का देवता, सत्य का प्रतीक, ऋतु परिवर्तन एवं दिन रात का कर्ता
द्यौ	आकाश का देवता
सोम	वनस्पति का देवता
ऊषा	प्रगति एवं उत्थान की देवी
अश्विन	विपत्तियों का हरण करने वाला
विष्णु	विश्व पालनकर्ता एवं संरक्षक
मरुत	झंझावात का देवता
रुद्र	आसुरी शक्तियों को खत्म करने वाला

षोडश संस्कार	
गर्भाधान	संतान की प्राप्ति के लिए किया जाने वाला प्रथम महत्वपूर्ण संस्कार
पुंसवन	पुत्र-प्राप्ति के निमित्त यह संस्कार किया जाता था
सीमान्तोनयन	गर्भ में संतान की रक्षा हेतु किया जाता था
जातकर्म	शिशु के जन्म के समय यह संस्कार किया जाता था
नामकरण (नामधेय)	बच्चे के जन्म के दसवें अथवा बारहवें दिन 'नामकरण' संस्कार होता था।
निष्क्रमण	बच्चे के जन्म के तीसरे या चौथे माह यह संस्कार होता था। इस संस्कार में बच्चे को पहली बार घर से बाहर निकाला जाता था।
अन्नप्राशन	अन्नप्राशन संस्कार बच्चे के जन्म से छठे माह में किया जाता था जिसमें बच्चे को अन्न खिलाया जाता था।
चूड़ाकरण (चौल कर्म)	इस संस्कार द्वारा बच्चे का पहली बार बाल काटा जाता था
कर्णवेध	इस संस्कार में बालक का कान छेदकर उसमें बाली अथवा कुण्डल पहनाया जाता था।
विद्यारम्भ	इस संस्कार द्वारा बच्चे की शिक्षा प्रारम्भ होती थी।
उपनयन	इस संस्कार द्वारा बच्चे को यज्ञोपवीत धारण कराया जाता था
वेदारम्भ	इसमें बच्चे को वेदों का अध्ययन गायत्री मंत्र द्वारा कराया जाता था।
केशान्त अथवा गोदान	सोलह वर्ष की आयु में प्रथम बार विद्यार्थी की दाढ़ी-मूँछ बनवायी जाती थी।
समावर्तन	शिक्षा की समाप्ति पर किया जाने वाला संस्कार
विवाह	गृहस्थाश्रम का प्रारम्भ इसी संस्कार द्वारा होता था जिसमें दो वयस्क स्त्री –पुरुष शादी करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते थे।
अन्त्येष्टि	अंतिम संस्कार अंत्येष्टि है जो मृत्यु के पश्चात् सम्पादित की जाती थी।

■ **गोपथ ब्राह्मण के अनुसार**

यज्ञ	कर्ता
राजसूय यज्ञ	राजा
वाजपेय यज्ञ	सम्राट
अश्वमेध यज्ञ	स्वराट
पुरूषमेध यज्ञ	विराट
सर्वमेध यज्ञ	भोज
उपनिषद	**सूक्ति**
बृहदारण्यक	अहम् ब्रह्मास्मि
मुण्डकोपनिषद्	सत्यमेव जयते
माण्डूक्य	सत्यं शिवं सुन्दरं अयम् आत्मा ब्रह्म
छान्दोग्य	तत् त्वम् असि, एकमेवद्वितीय ब्रह्म
महाउपनिषद्	वसुधैव कुटुम्बकम्

■ शतपथ ब्रह्मण में 12 रत्निनों (उच्च पदाधिकारी) का उल्लेख है। ऋग्वैदिक राजा राजसूय यज्ञ के समय 12 रत्निनों के घर जाता था जिनमें 4 महिलाएं होती थीं।

■ यजुर्वेद अंशतः गद्य में और अंशतः पद्य में लिखा गया है।

ऋग्वैदिक शब्द	-	**अर्थ**
ऋत	-	नैतिक नियम
कानीन	-	अविवाहित कन्या का पुत्र
धान्यकृत	-	ओसाने वाला
गोमत	-	धनाढ्य व्यक्ति
व्रीहि	-	चावल
इश्रु	-	गन्ना

उपनिषद् कालीन राजा	राज्य
अजातशत्रु	काशी
अश्वपति	कैकेय
जनक	विदेह
प्रवाहण जवालि	पांचाल
निचक्षु	वत्सभूमि
प्रद्योत महासेन	अवन्ति

■ विदथ वैदिक युग की सर्वाधिक प्राचीन संस्था थी।

■ वैदिक सभ्यता एक ग्रामीण सभ्यता थी।

■ सभा संभ्रांत लोगों की संस्था थी जबकि समिति साधारण जनता का प्रतिनिधित्व करती थी।

- अथर्ववेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।
- शुनः शेप आख्यान जिसमें एक पिता अपने पुत्र को बेचते हुए वर्णित है, ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेखित है।
- ऋग्वेद में दो कृषि योग्य भूमि (उर्वरा या क्षेत्र) के बीच की भूमि पट्टी को खिल्य कहा जाता था।
- ऋग्वैदिक आर्यों की भाषा संस्कृत थी।
- ऋग्वैदिक काल में कोई नियमित भूमिकर नहीं था।
- अथर्ववेद में वर्णित प्रथम कृषि वैज्ञानिक पृथुवैन्य थे।

आश्रम व्यवस्था

- 'आश्रम' शब्द की उत्पत्ति 'श्रम' धातु से हुई है जिसका अर्थ है परिश्रम या प्रयास करना।
- चारों आश्रमों का सर्वप्रथम उल्लेख जाबालोपनिषद में किया गया है।
- उपनयन संस्कार के पश्चात् व्यक्ति ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश करता था।
- ब्रह्मचारी दो प्रकार के होते थे— नैष्ठिक एवं उपकुर्वाण।
- चारों आश्रम का विधान केवल द्विज वर्ण के लिए किया गया था

आश्रम	वर्ष
ब्रह्मचर्य आश्रम	0 वर्ष से 25वर्ष तक
गृहस्थ आश्रम	26 वर्ष से 50 वर्ष तक
वानप्रस्थ आश्रम	51 वर्ष से 75 वर्ष तक
संन्यास आश्रम	76 वर्ष से 100 वर्ष तक

तीन ऋण

देव ऋण – याज्ञिक अनुष्ठान द्वारा देवताओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करे।

ऋषि ऋण – विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन करके ऋषि ऋण से मुक्ति मिलती थी।

पितृ ऋण – धर्मानुसार सन्तानोत्पन्न करके व्यक्ति पितृ ऋण से मुक्ति पाता था।

पंच महायज्ञ

ब्रह्म यज्ञ, पितृ यज्ञ, देव यज्ञ, भूत यज्ञ, मनुष्य यज्ञ

पुरुषार्थ

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

- **अर्थ तथा काम –** ये पुरुषार्थ मनुष्य के भौतिक सुखों के प्रतिनिधि हैं।
- **धर्म तथा मोक्ष–** ये पुरुषार्थ मनुष्य के आध्यात्मिक सुखों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

❖ विवाह

- विवाह शब्द "वि" उपसर्ग के वह धातु से बनता है जिसका शाब्दिक अर्थ है, वधू को वर के घर ले जाना या पहुँचना।

वैदिक काल में विवाह के प्रकार

ब्रह्म विवाह	वेदज्ञ एवं शीलवान वर के साथ कन्या का विवाह कर दिया जाता था
दैव विवाह	याज्ञिक अनुष्ठान सम्पन्न कराने वाले पुरोहित के साथ कन्या का विवाह होता था।
आर्ष विवाह	इसमें कन्या का पिता यज्ञ कार्य हेतु एक अथवा दो गाय/बैल के बदले अपनी कन्या का विवाह कर देता था।
प्रजापत्य विवाह	विवाह का प्रस्ताव विवाहार्थी की तरफ से आता था कि दोनों साथ मिलकर सामाजिक एवं धार्मिक कार्य करें।
असुर विवाह	इसमें धन लेकर कन्या का विवाह कर दिया जाता था।
गन्धर्व विवाह	माता-पिता के विरुद्ध, यह प्रेम विवाह था।
राक्षस विवाह	इसमें बलपूर्वक कन्या का अपहरण करके उसके साथ विवाह कर लिया जाता था।
पैशाच विवाह	सोती हुई, बेहोश या पागल कन्या के साथ छल करके समागम स्थापित कर विवाह करना।

जैन धर्म

- संस्कृत के जिन शब्द से जैन शब्द बना है जिसका अर्थ विजेता होता है। **RRb Group-D 17.08.2022 (Shift-I)**
- जैन धर्म के संस्थापक एवं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे।
- ऋषभदेव का जन्म अयोध्या में हुआ था। इन्हें आदिनाथ भी कहा जाता है ये कोशल नरेश नाभिराज तथा रानी मरूदेवी के पुत्र थे।
- ऋषभदेव का प्रतीक चिह्न वृषभ है।
- ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर) और अरिष्टनेमि (22वें तीर्थंकर) का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर थे। **UPP Constable 2013**
- ये काशी के इक्ष्वाकु वंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे। इनकी माता वामादेवी थी।
- पार्श्वनाथ ने 30 वर्ष की आयु में संन्यास ग्रहण किया और 83 दिनों की कठिन तपस्या के बाद उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- इनके द्वारा दी गई शिक्षाएं है- (1) सत्य (2) अहिंसा (3) अस्तेय (चोरी न करना) (4) अपरिग्रह (संपत्ति न रखना)
- इनके अनुयायियों को निर्ग्रन्थ कहा जाता है।

- महावीर स्वामी जैन धर्म के 24वें और अंतिम तीर्थंकर थे।
- इनको जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

महावीर स्वामीः संक्षिप्त परिचय	
जन्म	599 ईसा पूर्व, (कुछ पुस्तकों में 540 ई.पू.) कुण्डग्राम (वैशाली) में
पिता	सिद्धार्थ (ज्ञातृक कुल के प्रधान)
माता	त्रिशला अथवा विदेहदत्ता (लिच्छवि के राजा चेटक की बहन)
बचपन का नाम	वर्द्धमान/वर्धमान
पत्नी	यशोदा (कुंडिन्य गोत्र की कन्या)
पुत्री	अणोज्जा (प्रियदर्शना)
दामाद	जामालि
प्रथम उपदेश	राजगृह में (बराकर नदी के तट पर)
प्रथम विरोधी	जामालि (संघ छोड़कर बहुरतवाद का प्रतिपादन किया)
द्वितीय विरोधी	तिसगुप्त
मृत्यु	527 ईसा पूर्व (कुछ पुस्तकों में 468 ई.पू.) (72 वर्ष की आयु में) राजगृह के समीप पावा में मल्ल गणराज्य सस्तिपाल के राज प्रसाद में 527 ई.पू. (निर्वाण वर्ष) के जैन धर्म में ''वीर निर्वाण'' संवत् की शुरूआत माना जाता है।

- माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् महावीर स्वामी ने 30 वर्ष की आयु में बड़े भाई नंदिवर्धन से अनुमति लेकर संन्यास ग्रहण किया।
- नालंदा में उसकी भेंट मक्खलिपुत्त गोशाल नामक संन्यासी से हुई वह उनका शिष्य बन गया किन्तु छः वर्ष के पश्चात् उसने महावीर का साथ छोड़कर 'आजीवक' नामक संप्रदाय की स्थापना की। **UPPCS (Pre.) 1996**
- 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद 'जृम्भिक' ग्राम के समीप 'ऋजुपालिका नदी' के तट पर एक शाल के वृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य (ज्ञान) की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद वे 'केवलिन',(सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त व्यक्ति) जिन (विजेता), 'अर्हत' (पूज्य) तथा निर्ग्रन्थ (बन्धन रहित) कहलाए।
- अपनी साधना में अटल रहने तथा अतुल पराक्रम दिखाने के कारण उन्हें 'महावीर' नाम से सम्बोधित किया गया।
- महावीर स्वामी ने अपना उपदेश प्राकृत (अर्धमागधी) भाषा में दिया।
- महावीर स्वामी का दामाद जामालि उनका प्रथम शिष्य बना।
- चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री 'चन्दना' प्रथम जैन भिक्षुणी बनी और जैन भिक्षुणी संघ की प्रथम अध्यक्षा बनीं।
- महावीर स्वामी ने एक संघ की स्थापना की जिसमें उन्होंने अपने अनुयायियों को 11 गणों में विभाजित कर प्रत्येक गण में एक गणधर नियुक्त किया।
- महावीर स्वामी का प्रधान गणधर इंद्रभूति गौतम था।
- 10 गणधरों की मृत्यु महावीर के जीवनकाल में ही हो गई थी।
- महावीर की मृत्यु के बाद केवल गणधर सुधर्मन् जीवित था, जो उसकी मृत्यु के बाद जैन संघ का प्रथम अध्यक्ष बना।
- सुधर्मन् जैन धर्म का अंतिम गणधर था।

जैन धर्म के पाँच महाव्रत
1. अहिंसा
2. सत्य
3. अस्तेय
4. अपरिग्रह
5. ब्रह्मचर्य

जैन धर्म के त्रिरत्न
1. सम्यक् दर्शन
2. सम्यक् ज्ञान
3. सम्यक् आचरण

VDO Shift-I 23.12.2018

- पाँचवां महाव्रत 'ब्रह्मचर्य' महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया।
- गृहस्थ जैनियों के लिए इन्ही पांच महाव्रतों को कठोरता में कमी करके उन्हें पंच अणुव्रत के रूप में प्रस्तुत किया गया।
- गृहस्थ पुरुष जैन मतावलंबी श्रावक तथा महिला श्राविका कही जाती थी।
- जैन धर्म में ईश्वर की मान्यता नहीं है।
- जैन धर्म आत्मा में विश्वास करता है।
- जैन धर्म पुनर्जन्म तथा कर्मवाद में विश्वास रखता है।
- जैन धर्म में जीवन का परम लक्ष्य कैवल्य (मोक्ष) की प्राप्ति है।
- महावीर स्वामी ने वेदों की अपौरूषेयता को स्वीकार नहीं किया।
- उन्होंने आत्मवादियों तथा नास्तिकों के एकान्तिक मतों को छोड़कर बीच का मार्ग अपनाया जिसे अनेकान्तवाद या स्यादवाद कहा जाता है।
- अनेकान्तवाद/स्यादवाद को सप्तभंगीनय भी कहा जाता है।
- उदयिन, चंद्रगुप्त मौर्य, कलिंग नरेश खारवेल, राष्ट्रकूट राजा अमोघ वर्ष जैन मत को मानने वाले राजा थे।
- मगध में लगभग 300 ईसा पूर्व में भीषण अकाल पड़ा जो 12 वर्षों तक चला। इस दौरान भद्रबाहु के नेतृत्व में उनके शिष्य कर्नाटक चले गए तथा स्थूलभद्र के नेतृत्व में उसके शिष्य वहीं रह गए।
- भद्रबाहु के वापस लौटने पर मगध के साधुओं से उनका मतभेद हो गया, फलतः जैन धर्म दो संप्रदायों श्वेताम्बर एवं दिगंबर में विभाजित हो गया।

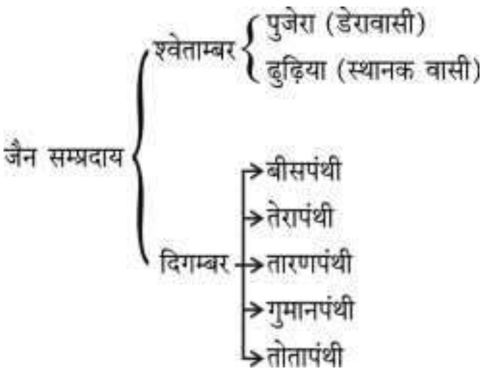

RRB Group-D, 25.08.2022 (Shift-I)

- स्थूलभद्र के शिष्य श्वेताम्बर (श्वेत वस्त्र धारण करने वाले) एवं भद्रबाहु के शिष्य दिगम्बर (नग्न रहने वाले) कहलाए।

श्वेताम्बर	दिगम्बर
(i) श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।	पूर्णतः नग्न रहते हैं।
(ii) महावीर स्वामी को विवाहित मानते हैं।	महावीर स्वामी को अविवाहित मानते हैं।
(iii) 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ को स्त्री मानते हैं।	मल्लिनाथ को पुरुष मानते हैं।
(iv) स्त्रियों का मोक्ष प्राप्ति संभव है।	स्त्रियों हेतु मोक्ष संभव नहीं है।
(v) प्रमुख केन्द्र गिरनार है।	प्रमुख केन्द्र पुण्ड्रवर्धन (बंगाल) है।

- दिगंबर और श्वेताम्बर दोनों की मान्यताओं का पालन करने वाला 'यापनीय संप्रदाय' था।

जैन संगीतियाँ			
संगीति	**समय**	**स्थल**	**अध्यक्ष**
प्रथम	300 ईसा पूर्व	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र
द्वितीय	512 ईस्वी	बल्लभी	देवर्धिगण (क्षमाश्रमण)

- खजुराहो के जैन मंदिरों का निर्माण चंदेल शासकों द्वारा किया गया है।
- मौर्योत्तर युग में 'मथुरा' जैन धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र था।
- मथुरा कला जैन धर्म से संबंधित है।
- 10 वीं शताब्दी में मैसूर के गंग वंश के मंत्री चामुण्ड राय की देख-रेख में कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में बाहुबलि की मूर्ति (गोमतेश्वर की मूर्ति) का निर्माण किया गया। श्रवणबेलगोला में जैन धर्म से सम्बन्धित उत्सव 'महामस्तकाभिषेक' प्रत्येक 12 वर्ष पर आयोजित किया जाता है। यह प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में है।
- आगम में 12 अंग, 12 उपांग, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र, 10 प्रकीर्णन, 2 चूलिका सूत्र, नदी सूत्र, अनुयोग द्वार द्वितीय जैन सभा संगीति की देन हैं।
- जैन तीर्थंकरों की जीवनी भद्रबाहु द्वारा रचित 'कल्पसूत्र' में मिलती है।

प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिह्न		
	तीर्थंकर	**प्रतीक चिह्न**
1.	ऋषभदेव/आदिनाथ	वृषभ
2.	अजितनाथ	हाथी/गज
3.	संभवनाथ	अश्व
4.	अभिनंदन	बन्दर/वानर
5.	सुमतिनाथ	क्रौंच पक्षी
6.	पद्म प्रभु	कमल/पद्म
7.	सुपार्श्वनाथ	स्वास्तिक
8.	चन्द्रप्रभु	अर्द्धचन्द्र
9.	पुष्पदत्त/सुविछिनाथ	मकर
10.	शीतलनाथ	कल्पवृक्ष
11.	श्रेयांसनाथ	खड्ग/गैंडा
12.	वासुपूज्य	भैंसा
13.	विमलनाथ	वाराह
14.	अनंतनाथ	सेही/बाज
15.	धर्मनाथ	वज्रदंड
16.	शान्तिनाथ	हरिण/हिरन
17.	कुंथनाथ	बकरा
18.	अर्हनाथ	मत्स्य
19.	मल्लिनाथ	कलश
20.	मुनि सुव्रत	कूर्म/कछुआ
21.	नमिनाथ	नीला कमल
22.	अरिष्टनेमि/ नेमीनाथ	शंख
23.	पार्श्वनाथ	सर्प
24.	महावीर	सिंह

- जैन साहित्य (जैन साहित्य को 'आगम' कहा जाता है)

प्रमुख जैन ग्रन्थ	
ग्रंथ	**रचनाकार**
परिशिष्ट पर्वन	हेमचंद
कल्पसूत्र	भद्रबाहु
न्यायावतार	सिद्धसेन दिवकर
न्यायदीपिका	धर्मभूषण
द्रव्य संग्रह	नेमिचंद्र
स्यादवाद मंजरी	मल्लिसेन
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी
आदिपुराण	जिनसेन
हरिवंश पुराण	जिनसेन
उत्तरपुराण	गुणभद्र
जैनेन्द्र सिद्धांत कोष	झुल्लक जिनेन्द्र वर्णी

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म का प्रवर्तक गौतम बुद्ध को माना जाता है।
- बौद्ध धर्म की उत्पत्ति छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुई।

गौतम बुद्ध : संक्षिप्त परिचय	
जन्म वर्ष	563 ईसा पूर्व
जन्म स्थल	कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी (रुमिन्देई)
पिता	शुद्धोधन- कपिलवस्तु के शाक्य गणराज्य के प्रधान
माता	माया देवी या महामाया-कोलिय गणराज्य (कोलिय वंश) की कन्या
बचपन का नाम	सिद्धार्थ
पालन-पोषण	मौसी प्रजापति गौतमी द्वारा
विवाह	शाक्य कुल की एक कन्या यशोधरा (अन्य नाम बिम्बा, गोपा, भद्कच्छना) के साथ
विवाह के समय बुद्ध की उम्र	16 वर्ष
पुत्र का नाम	राहुल
मृत्यु	483ईसा पूर्व, मृत्यु स्थल - कुशीनारा

- गौतम बुद्ध या तो चक्रवर्ती राजा बनेंगे या महान संन्यासी इस संबन्ध में भविष्यवाणी, काल देव तथा ब्राह्मण कौंडिन्य ने की थी।
- सिद्धार्थ ने 29 वर्ष की आयु में गृहत्याग दिया था।
- बौद्ध ग्रन्थों में गृहत्याग को 'महाभिनिष्क्रमण' की संज्ञा दी गई है।
  UPPCS (Pre.) 2014
- गृह त्याग के पश्चात् गौतम बुद्ध ने सर्वप्रथम आलार कालाम के आश्रम में तपस्या की थी।
- गौतम बुद्ध के गुरू सांख्य दर्शन के आचार्य आलार कालाम (वैशाली) एवं रुद्रक रामपुत्त (राजगृह) थे।
- गौतम बुद्ध ने सांख्य दर्शन की शिक्षा आलार कालाम से ली थी।
- गौतम बुद्ध को अपने गुरुओं की शिक्षा से शांति नहीं मिली अतः अकेले तपस्या करने का निश्चय किया।
- उरुवेला (बोधगया) में छः वर्षों की साधना के पश्चात् 35 वर्ष की अवस्था मे वैशाख पूर्णिमा की रात्रि को निरंजना नदी (फल्गु नदी) के किनारे एक पीपल के वृक्ष के नीचे गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ। **UPSSSC PET 16.10.2022 Shift-I**

बुद्ध का प्रथम उपदेश
बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ (ऋषिपत्तन) के मृगदाव में दिया। **विधान भवन रक्षक 02.12.2018 (Shift-II)** **UP Constable (Pre.) 2013** प्रथम उपदेश पाँच ब्राह्मण संन्यासियों को दिया। (यह घटना –'धर्मचक्रप्रवर्तन' कहलाती है) प्रथम उपदेश का चित्रण 'मृग सहित चक्र' द्वारा हुआ है।

- वाराणसी में बुद्ध ने यश नामक श्रेष्ठि को अपना शिष्य बनाया।

गौतम बुद्ध का राजगृह प्रवास
- मगध के राजा बिम्बिसार ने बुद्ध के निवास के लिए 'वेलुवन' नामक विहार बनवाया।
- बुद्ध ने द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्षाकाल राजगृह में व्यतीत किया था।
- राजगृह में सारिपुत्र तथा मोदगलायन बुद्ध के शिष्य को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।

- राजगृह में रहते हुए बुद्ध ने एक बार अपने गृहनगर कपिलवस्तु की भी यात्रा की तथा परिवार के लोगों को दीक्षा दी।
- अनुपिय नामक स्थान पर शाक्य शासकों को भी बौद्ध मत की दीक्षा दी।

गौतम बुद्ध का वैशाली प्रवास
- लिच्छिवियों ने बुद्ध के निवास के लिए महावन में कूटाग्रशाला का निर्माण करवाया।
- वैशाली की प्रसिद्ध नगर-वधू आम्रपाली उनकी शिष्या बनीं उसने भिक्षु संघ के लिए अपनी आम्रवाटिका दान कर दी।
- यहीं पर पहली बार बुद्ध ने संघ में महिलाओं को प्रवेश करने की अनुमति दी। (मौसी प्रजापति गौतमी एवं प्रिय शिष्य आनन्द के आग्रह पर)
- संघ में प्रवेश पाने वाली प्रथम महिला प्रजापति गौतमी थी।
- बुद्ध ने अपने जीवन की अन्तिम वर्षा ऋतु वैशाली में बितायी थी।

- कौशाम्बी के राजा वत्सराज उदयन बौद्ध भिक्षु पिण्डोला भारद्वाज के प्रभाव से बौद्ध बना। घोषित नामक श्रेष्ठि ने बौद्ध संघ को घोषिताराम विहार प्रदान किया।
- कौशाम्बी स्थित-घोषिताराम विहार तथा पावरिया के आम्रविहार का स्थापत्यकार घोषित था।

गौतम बुद्ध का कोशल प्रवास
- बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश कोशल राज्य की राजधानी श्रावस्ती में दिये।
- यहाँ पर इन्होंने कुल 21 वर्षावास व्यतीत किये थे।
- बौद्ध धर्म का सबसे अधिक प्रचार कोशल राज्य में हुआ।
- अनाथपिण्डक नामक व्यापारी ने बुद्ध को जेतवन विहार प्रदान किया।
- कोशल नरेश प्रसेनजीत ने संघ के लिए पुब्बाराम (पूर्वा-राम) नामक विहार बनवाया।
- श्रावस्ती में ही बुद्ध ने अंगुलिमाल नामक डाकू को दीक्षा दी।

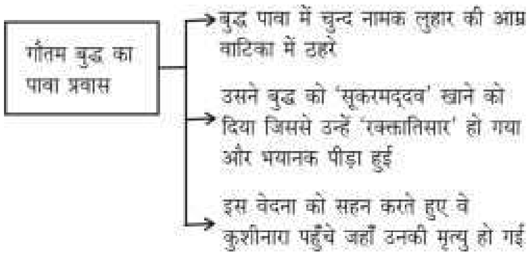

- अशोक ने पाटलिपुत्र में अशोकाराम विहार का निर्माण कराया।
- बुद्ध ने कुशीनारा में ही सुभद्द (सुभग) को अपना अंतिम उपदेश दिया। **UP RO/ARO (Pre.) 2016**

गौतम बुद्ध की मृत्यु
▪ 483 ईसा पूर्व में (80 वर्ष की आयु में) हुई। ▪ गौतम बुद्ध की मृत्यु मल्लों की राजधानी कुशीनारा (देवरिया, उ.प्र.), हिरण्यवती नदी के तट पर हुई। **नोट-** इस घटना को 'महापरिनिर्वाण' कहा गया।

- मल्लों ने अत्यंत सम्मानपूर्वक उनका अंत्येष्टि संस्कार किया।
- एक अनुश्रुति के अनुसार बुद्ध के शरीर-धातु के आठ भाग किये गए जिसका बंटवारा 'द्रोण' नामक विद्वान द्वारा किया गया तथा प्रत्येक भाग पर स्तूप बनवाये गये।
- महापरिनिर्वाण सूत्र के अनुसार बुद्ध की शरीर-धातु (भस्मावेष) के आठ दावेदारों के नाम इस प्रकार मिलते हैं।

1. पावा तथा कुशीनारा के मल्ल
2. कपिलवस्तु के शाक्य
3. वैशाली के लिच्छवी
4. अलकप्प के बुलि
5. रामगाम के कोलिय
6. पिप्पलिवन के मोरिय
7. मगध नरेश अजातशत्रु
8. वेठद्वीप के ब्राह्मण

- बुद्ध की अन्त्येष्टि के बाद पिप्पलिवन के मोरिय पहुँचे थे, जिससे उन्हें चिता भस्म ही मिली। इसी चिता भस्म के ऊपर उन्होंने 'अंगार स्तूप' का निर्माण करवाया।
- बुद्ध के शवदाह के पश्चात् बचे हुए अवशेषों को भूमि मे गाड़कर उनके ऊपर समाधियाँ बनायी गई जिन्हे चैत्य या स्तूप कहा गया। कालान्तर में ये उपासना के केन्द्र बन गए। भिक्षुओ के रहने के लिए चैत्यगृहो के समीप ही आवास बनाए गए; जिन्हें 'विहार' कहा गया।

बुद्ध के जीवन से संबंधित बौद्ध धर्म के प्रतीक

घटना	प्रतीक
गर्भ	हाथी
जन्म	कमल एवं सांड
गृहत्याग (महाभिनिष्क्रमण)	अश्व
ज्ञान	पीपल (बोधि वृक्ष)
प्रथम उपदेश (धर्म - चक्र प्रवर्तन)	धर्मचक्र निर्वाण पद - चिन्ह
मृत्यु (महापरिनिर्वाण)	स्तूप

- बुद्ध ने 'पालि' भाषा में उपदेश दिये, जो जनसाधारण की भाषा थी।
- बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के सम्बन्ध में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया।

चार आर्य सत्य
1. **दुःख**- संसार में सर्वत्र दुःख ही दुःख है
2. **दुःख समुदाय**- दुःख का कारण है
3. **दुःख निरोध**- दुःख से मुक्ति सम्भव है
4. **दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा**- मुक्ति का मार्ग

- बुद्ध के अनुसार दुःखों से मुक्ति का उपाय अष्टांगिक मार्ग है।

अष्टांगिक मार्ग
1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक् संकल्प
3. सम्यक् वाक्
4. सम्यक् कर्मान्त
5. सम्यक् आजीव
6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि

- बुद्ध ने वेदों की अपौरुषेयता एवं आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार कर दिया।
- वे पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धान्त को मानते थे।
- बौद्ध धर्म क्षणिकवाद, अनीश्वरवाद, अनात्मवाद/नैरात्यवाद, संघातवाद तथा अर्थक्रियाकारित्व सिद्धान्त को मानता है।
- बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वाण प्राप्ति मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।
- निर्वाण का अर्थ है जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाना।
- 'प्रतीत्यसमुत्पाद' बुद्ध की सभी शिक्षाओं का सार है जिसका अर्थ है संसार की सभी वस्तुएं किसी न किसी कारण से उत्पन्न हुई हैं। इसे कार्य-कारण सिद्धांत भी कहा जाता है।
- बुद्ध ने स्वयं अनित्यवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था।
- बुद्ध के अपने मत को मध्यम मार्ग (मध्यमा प्रतिपदा) बताया है।
- बुद्ध ने यज्ञीय कर्मकाण्ड तथा पशुबलि का विरोध किया।
- बुद्ध के समस्त अनुयायी दो वर्गों में बंटे हुए थे

1. भिक्षु/ भिक्षुणी **2. उपासक/ उपासिका**

- वर्षा ऋतु के दौरान मठों मे प्रवास के समय भिक्षुओं द्वारा किए गए अपराधों की स्वीकारोक्ति हेतु बौद्ध मठों में पवरन नामक समारोह आयोजित किया जाता था।
- बुद्ध के संघ के भिक्षुओं एवं उपासकों के नैतिक आचरण के दसशील का प्रावधान किया था। जो निम्नवत है।

बौद्ध धर्म के दसशील
1. अहिंसा
2. सत्य भाषाण
3. अस्तेय (चोरी न करना)
4. ब्रह्मचर्य
5. मादक पदार्थों का त्याग

6. असमय भोजन का त्याग
7. विलासिता पूर्ण शयन का त्याग
8. कंचन-कामिनी (स्वर्ण-चाँदी) का त्याग
9. नृत्य-संगीत, स्त्री संसर्ग आदि का त्याग
10. सुगंधी, माला, आदि का त्याग

- बौद्ध धर्म का पंचशील का सिद्धान्त 'छान्दोग्य उपनिषद' से लिया गया है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न
1. बुद्ध 2. धम्म 3. संघ

- बुद्ध के जीवनकाल में ही बौद्ध संघ की स्थापना हो गयी थी। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
- बौद्ध संघ में प्रवेश को 'उपसम्पदा' कहा जाता था।
- बौद्ध संघ में प्रवेश के उपरान्त प्रवज्या नामक संस्कार किया था।
- बुद्ध का चेचरा भाई 'देवदत्त' बुद्ध के जीवन काल में ही बौद्ध संघ का प्रमुख बनना चाहता था।

बुद्ध के समकालीन अनुयायी शासक

शासक	राज्य
बिम्बिसार, अजातशत्रु	मगध
प्रसेनजीत	कोशल
उदयन	वत्स
भद्रिक	शाक्य नरेश
अवन्ति पुत्र	शूरसेन (मथुरा)
बोधि कुमार	सुसुमारगिरि भग्ग

बौद्ध संगीतियां/सभाएँ

क्रम	समय	स्थान	अध्यक्ष	शासक
प्रथम	483 ई.पू.	राजगृह	पूरण महाकस्सप	अजातशत्रु
द्वितीय	383 ई.पू.	वैशाली	सर्वकामी	कालाशोक (काकवर्णा)
तृतीय	247 ई. पू.	पाटलिपुत्र	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक
चतुर्थ	ईसा की प्रथम शताब्दी	कुण्डल वन (कश्मीर)	वसुमित्र (अध्यक्ष), अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क

- प्रथम संगीति में बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन किया गया और उन्हें सुत्त और विनय नामक दो पिटकों में विभाजित किया गया।
- आनन्द द्वारा सुत्त पिटक तथा उपालि द्वारा विनय पिटक का संकलन किया गया।
- द्वितीय बौद्ध संगीति में बौद्ध धर्म स्थविर/थेरवादी तथा महासंघिक/सर्वास्तिवादी सम्प्रदायों में विभक्त हो गया।
- स्थविर/थेरवादी परम्परागत नियमों में आस्था रखने वाला सम्प्रदाय था, इसका नेतृत्व महाकच्चायन ने किया।
- महासंघिक/सर्वास्तिवादी परिवर्तन के साथ नियम को स्वीकार करने वाला सम्प्रदाय था। इसका नेतृत्व महाकस्सप ने किया।
- लोकोत्तरवादी संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासांघिक संप्रदाय की एक शाखा थी।
- तृतीय बौद्ध संगीति में 'अभिधम्म पिटक' जोड़ा गया।
- चतुर्थ बौद्ध संगीति में बौद्ध धर्म 'हीनयान' और 'महायान' सम्प्रदाय में विभक्त हो गया। चतुर्थ बौद्ध संगीति के समय में भाषा के रूप में संस्कृत को अपनाया गया।

हीनयान तथा महायान सम्प्रदाय में भिन्नता

हीनयान	महायान
1. हीनयान का शाब्दिक अर्थ है- निम्न मार्ग	1. महायान का शाब्दिक अर्थ है- उत्कृष्ट मार्ग
2. हीनयान की साधना पद्धति अत्यन्त कठोर है	2. महायान के सिद्धान्त सरल एवं सर्वसाधारण के लिए सुलभ है
3. यह मूर्तिपूजा एवं भक्ति में विश्वास नहीं रखता	3. आत्मा तथा पुनर्जन्म में विश्वास करता है
4. हीनयान व्यक्तिवादी धर्म है। इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रयत्नों से ही मोक्ष प्राप्त करना चाहिए।	4. महायान में परसेवा तथा परोपकार पर बल दिया गया है। इसका उद्देश्य समस्त मानव जाति का कल्याण है।
5. इसमें बुद्ध को एक महापुरूष माना जाता है।	5. इसमें बुद्ध को एक देवता के रूप में स्वीकार किया जाता है।
6. हीनयान का आदर्श 'अर्हत' पद को प्राप्त करना है।	6. महायान का आदर्श 'बोधिसत्व' है।
7. हीनयान में बुद्ध का पूजन संकेतों (हाथी, अश्व, बैल, कमल, बोधिवृक्ष, धर्मचक्र) के माध्यम से होता है।	7. महायान मूर्तिपूजा, शक्ति व तीर्थों में विश्वास करता है।
8. हीनयान के प्रमुख सम्प्रदाय वैभाषिक तथा सौत्रान्तिक हैं।	8. महायान के प्रमुख सम्प्रदाय शून्यवाद तथा विज्ञानवाद हैं।
9. हीनयान के प्रमुख दार्शनिक- वसुमित्र, बुद्धदेव, घोषक, कुमारलाट, धर्मत्रात आदि।	9. महायान के प्रमुख दार्शनिक- नागार्जुन, मैत्रेय, असंग, वसुबन्धु आदि।

❖ बौद्ध धर्म के विस्तार के कारण

धर्म की सादगी

धर्म की मिशनरी भावना

स्थानीय भाषा का प्रयोग

दलितों के लिए विशेष अपील

ब्राह्मण वर्ग की सर्वोच्च सामाजिक कोटि को चुनौती दी।

❖ बौद्ध धर्म के प्रमुख बोधिसत्व

अमिताभ— इन्हें स्वर्ग का मुख्य देवता माना गया है।

अवलोकितेश्वर— ये प्रधान बोधिसत्व हैं। दया इनका विशेष गुण है। इन्हें पद्मपाणि (हाथ में कमल लिए हुए) भी कहा जाता है। इनकी समानता विष्णु से की जाती है।

मंजुश्री— यह प्रखर बुद्धि के प्रतीक हैं। इनके एक हाथ में पुस्तक प्रज्ञापारमितासूत्र तथा दूसरे हाथ में खड्ग रहती है।

वज्रपाणि— इसका प्रतीक वज्र है।

मैत्रेय— इन्हें भावी बुद्ध कहा गया है।

- वैभाषिक सम्प्रदाय हीनयान सम्प्रदाय का एक मत है।
- इसकी उत्पत्ति कश्मीर में हुई इसे प्रत्यक्षवाद भी कहा जाता है।
- सौत्रांतिक सम्प्रदाय भी हीनयान से संबंधित है।
- सौत्रांतिक सम्प्रदाय चित्त तथा बाह्य जगत दोनों की सत्ता में विश्वास करता है।

शून्यवाद (माध्यमिक सम्प्रदाय)
इसे सापेक्ष्यवाद भी कहा जाता है।
महायान सम्प्रदाय का एक मत है।
प्रवर्तक- नागार्जुन **चकबन्दी लेखपाल 08.11.2015** **Beo Exam 2003, 2006**
नागार्जुन की प्रसिद्ध रचना- माध्यमिककारिका तथा प्रज्ञापारमितासूत्र है।
यह बुद्ध द्वारा प्रतिपादित मध्यम मार्ग का विकास करता है।
इसमें शून्यता की अवधारणा का प्रतिपादन किया गया है।

- नागार्जुन की तुलना 'मार्टिन लूथर' से की जाती है।
- नागार्जुन को 'भारत का आइंस्टीन' भी कहा जाता है।

विज्ञानवाद (योगाचार) सम्प्रदाय
इसकी स्थापना मैत्रेय या मैत्रेयनाथ ने की थी।
असंग तथा वसुबन्धु ने इसका विकास किया।
यह चित अथवा विज्ञान की ही एक मात्र सत्ता स्वीकार करता है।
इसमें योग तथा आचार पर विशेष बल दिया गया है।

❖ वज्रयान सम्प्रदाय

- मंत्रयान, सहजयान तथा कालचक्रयान, व्रजयान के कालक्रमिक स्वरूप हैं।
- वज्रयान में मंत्रों और तांत्रिक क्रियाओं पर जोर दिया गया है।
- वज्रयान सम्प्रदाय में तारा देवी को महत्व दिया गया।
- वज्रयान का सबसे अधिक विकास आठवीं शताब्दी में हुआ।
- इसके सिद्धांत मंजुश्रीमूलकल्प तथा गुह्यसमाज नामक ग्रन्थों में मिलते हैं।
- वज्रयान ने भारत से बौद्धधर्म के पतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

❖ बौद्ध साहित्य

- बुद्ध के उपदेशों के संग्रह को पिटक कहा जाता है। जिनकी संख्या तीन हैं।
- यह पालि भाषा में रचित है

त्रिपिटक : सुत्तपिटक, विनय पिटक अभिधम्म पिटक।
सुत्तपिटक- (संकलन : आनंद द्वारा) यह बौद्ध धर्म के सिद्धांतों, बुद्ध की शिक्षाओं और उपदेशों का संग्रह है।
विनय पिटक- (संकलन : उपालि द्वारा) यह संघ संबंधी नियमों, आचारों-विचारों और विधि-निषेधों का संग्रह है। **UPPCS (Pre.) 1996**
अभिधम्म पिटक – (संकलन : मोग्गलिपुत्त तिस्स) यह बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धान्तों का संग्रह है। **अभिधम्म के अंतर्गत सात ग्रंथ सम्मिलित हैं -** धम्म संगणि, धातु कथा, विभंग, पुग्गल, पंचति, कथावत्थु, यमक तथा पट्ठान

- सुत्तपिटक के पाँच निकाय है- (1) दीर्घ निकाय (2) मज्झिम निकाय (3) संयुक्त निकाय (4) अंगुत्तर निकाय (5) खुद्दक निकाय।
- बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएं 'जातक' ग्रन्थों में संकलित हैं, यह पालि भाषा में रचित है।

प्रमुख बौद्ध ग्रंथ एवं उसके रचनाकार

साहित्य	रचनाकार
बुद्धचरित, सौन्दरानन्द	अश्वघोष
मिलिन्दपन्हो (मिलिन्द प्रश्न)	नागसेन
माध्यमिक कारिका	नागार्जुन
विशुद्धिमग्ग	बुद्धघोष
अभिधम्मकोष	वसुबन्धु
कथावत्थु	मोग्गलिपुत्त तिस्स

अष्ट महास्थानः महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़े आठ स्थान

स्थान	महत्व
लुंबिनी	जन्म स्थान
बोधगया	संबोधि प्राप्ति स्थल
सारनाथ	धर्मचक्र प्रवर्तन
कुशीनगर	महापरिनिर्वाण
संकिसा	बुद्ध त्रयस्त्रिंश स्वर्ग से उतरे
राजगृह	देवदत्त द्वारा बुद्ध के विरूद्ध किए गये विद्रोह के लिए प्रसिद्ध है।
श्रावस्ती	सर्वाधिक वर्षावास, सर्वाधिक उपदेश
वैशाली	बुद्ध का अंतिम वर्षावास

❖ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- महायान का सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ 'प्रज्ञापारमितासूत्र' है।
- बुद्धघोष बौद्ध धर्म के महान टीकाकार थे।
- दीपवंश और महावंश सिंहली अनुश्रुतियां हैं।

- सुत्तपिटक को प्रारंभिक बौद्ध धर्म का 'इनसाइक्लोपीडिया' भी कहा जाता है।
- बुद्ध की भूमिस्पर्श मुद्रा से तात्पर्य अपने तप की शुचिता और निरंतरता बनाये रखने से है।
- बुद्ध की भूमिस्पर्श मुद्रा की मूर्ति सारनाथ से प्राप्त हुई है जो गुप्तकाल से संबंधित है।
- प्राचीन काल में नालंदा , वल्लभी और विक्रमशिला बौद्ध शिक्षा के तीन प्रमुख केंद्र थे।
- नालंदा, महायान से और वल्लभी, हीनयान संप्रदाय से संबंधित था।
- पुणे के मावल तालुका में स्थित कार्ले में हीनयान अवस्था का विशालतम एवं सर्वाधिक विकसित शैलकृत चैत्यगृह स्थित है।
- भारत में पूजा की जाने वाली प्रथम मूर्ति संभवतः बुद्ध की थी।
- बुद्ध की सर्वाधिक मूर्तियों का निर्माण गान्धार शैली के अन्तर्गत किया गया। लेकिन बुद्ध की प्रथम मूर्ति संभवतः मथुरा कला के अन्तर्गत बनी थी।
- बौद्ध धर्म का सबसे पवित्र त्यौहार वैशाख पूर्णिमा है, जिसे बुद्ध पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है, इसका महत्व इसलिए है कि बुद्ध पूर्णिमा के दिन ही बुद्ध का जन्म, ज्ञान की प्राप्ति और महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुई थी।
- गौतम बुद्ध को 'एशिया का ज्योति पुंज' कहा जाता है।
- एडविन अर्नाल्ड ने गौतम बुद्ध के जीवन पर "The Light of Asia" नामक काव्य पुस्तक की रचना की है। यह 'ललितविस्तार' की विषयवस्तु आधारित है।
- नेत्ति प्रकरण ग्रन्थ बौद्ध धर्म के तर्क विज्ञान का ग्रन्थ है। इसके रचयिता महाकच्चायन हैं।

संगम युग

- कवियों के समागम को 'संगम' कहा जाता है। संगम साहित्य की रचना लगभग 300 ई. से 600 ई. के मध्य की गई।
- संगम साहित्य में रची गई कविताएं प्रेम और युद्ध पर आधारित थी।
- संगम युग में तमिल क्षेत्र के तीन राज्य चोल, चेर तथा पांड्य का शासन था।

❖ संगम राज्य

राज्य	राजधानी	वर्तमान क्षेत्र	राजकीय चिह्न	महत्वपूर्ण शासक
चोल	प्रारम्भिक राजधानी उत्तरी मनलूर थी, तत्पश्चात् उरैयुर तथा तंजौर (तंजावुर) राजधानी बनी	तमिलनाडु का मध्य व उत्तरी क्षेत्र	बाघ	करिकाल
चेर	वांजी/वांची	केरल का मध्य व उत्तरी क्षेत्र	धनुष	उदियनजेरल, शेनगुट्टवन
पाण्ड्य	मदुरै (प्रारम्भिक राजधानी कोरकई)	मदुरै क्षेत्र	मछली	नेडियोन, नेडुंजेलियन

❖ चोल राज्य

- तीनों राज्यों में सबसे पहले चोल राज्य का उद्भव हुआ।
- करिकाल इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था।

RRB NTPC 16.04.2016 (Shift-III)

- करिकाल द्वारा पुहार (कावेरीपत्तनम) शहर की स्थापना की गई। इसने अपनी राजधानी उरैयूर से पुहार स्थानान्तरित की।
- वेणि (कोविलवेन्नी) के युद्ध में करिकाल ने चेर, पाण्ड्य सहित 11 राजाओं के संघ को पराजित किया।
- करिकाल ने श्रीलंका पर विजय प्राप्त कर, 12000 युद्ध बंदियों को लाकर कावेरी नदी पर 160 किमी. लम्बा बांध तथा पुहार बंदरगाह बनवाया।
- चोल शासक पेरुनरकिल्लि द्वारा राजसूय यज्ञ कराया गया।

❖ चेर राज्य

- इस वंश का प्रथम शासक उदियनजेरल को माना जाता है।
- उदियनजेरल के विषय में मान्यता है कि वह महाभारत (कुरुक्षेत्र) युद्ध में भाग लेने वाले सभी योद्धाओं को भोजन कराया था।
- शेनगुट्टवन इस वंश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक था। इसने चेर राज्य में पत्नी पूजा (कण्णगी पूजा) प्रारंभ की।

❖ पाण्ड्य राज्य

- इस वंश का पहला शासक नेडियोन को माना जाता है।
- नेडुंजेलियन इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था । नक्कीरर और भांगुदिमरुदन जैसे विद्वानों को इसने संरक्षण दिया था।
- नेडुंजेलियन ने चोल, चेर और अन्य पांच राजाओं के संघ को तलैयालंगानम (तंजौर) के युद्ध में पराजित किया।
- पाण्ड्य राज्य की जीवनरेखा वेंगी नदी थी।
- पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में तीन संगम का आयोजन किया गया।

संगम	स्थान	अध्यक्ष	संकलन
प्रथम संगम	मदुरै	अगस्त्य ऋषि	वर्तमान में उपलब्ध नहीं
द्वितीय संगम	कपाट्पुरम	अगस्त्य ऋषि व तोलकापियर	वर्तमान में एकमात्र ग्रंथ 'तोल्काप्पियम' उपलब्ध है।
तृतीय संगम	मदुरै	नक्कीरर	कई ग्रन्थ उपलब्ध है।

UPPCS (Pre.) 2006

- इस काल के पाँच महाकाव्यों का वर्णन प्राप्त है जिसमें से वर्तमान में तीन ही उपलब्ध हैं-

महाकाव्य	लेखक	विषयवस्तु
शिलापादिकारम्	इलांगो आडिगल	कोवलन तथा कण्णगी (कन्नगी) की कथा
मणिमेखलै	सीतलैसत्तनार	कोवलन व माधवी की पुत्री मणिमेखलै की कथा
जीवक चिंतामणि	तिरुतक्कदेवर	जीवक की जीवन कथा
वलयपति	-	-
कुण्डल केशि	-	-

- द्वितीय संगम के दौरान संकलित, एकमात्र उपलब्ध ग्रन्थ 'तोलकाप्पियम्' है। यह तमिल व्याकरण एवं अलंकार शास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थ है। **UPPCS (Pre) 2014**
- तोलकाप्पियम् का लेखक 'तोलकाप्पियर' है।
- कुरल (तिरुक्कुरल) के रचयिता 'तिरूवल्लुवर' हैं।
- कुरल को 'पंचम वेद' एवं तमिल 'साहित्य की बाइबिल' के नाम से भी जाना जाता है। **UP RO/ARO (Mains) 2013**

❖ संगम कालीन शासन व्यवस्था

- संगमकालीन प्रशासन वंशानुगत राजतन्त्रात्मक था।
- संगमकाल में राजा को 'काक', 'को', 'कोन', 'मन्नम', 'वेन्दन', 'कारेवन', 'इरैवन' आदि उपाधियाँ दी जाती थी।

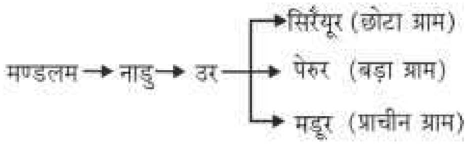

❖ संगम काल में भूमि का वर्गीकरण

पालै (पलाई)	मरूभूमि या शुष्क भूमि
मुल्लै (भुलाई)	चारागाह या वन क्षेत्र
मरूडम	कृषि योग्य उपजाऊ भूमि
कुरिंजी	पर्वतीय क्षेत्र
नैडल/ नेयतल	समुद्र तटीय प्रदेश

- तमिल प्रदेश के प्राचीन देवता मुरुगन या वेलन थे। जिन्हें बाद में सुब्रह्मण्यम भी कहा जाने लगा।
- पुहार चोलों का, मुजरिस तथा तोण्डी चेरों का तथा कोरकई (कोल्वी), शलियुर पाण्ड्यों का प्रमुख बन्दरगाह था।
- काली मिर्च का प्रमुख निर्यातक पत्तन मुजरिस था।
- पूर्वी समुद्री तट पर अवस्थित अरिकामेडु बन्दरगाह को पेरिप्लस ऑफ एरिथ्रियन सी में 'पोडुका' कहा गया है।

संगम कालीन कर	
करई	भूमिकर (उपज का 1/6)
पादुवाडी	राजा को उपहार के रूप में दिया गया कर
उलगू	पथकर या सीमा शुल्क

- कर वसूलने वाले अधिकारी को वरियार कहा जाता है।

महाजनपद

- जनपद का शाब्दिक अर्थ एक ऐसा भूखंड है जहां कोई जन (लोग, कुल या जनजाति) अपना पाँव रखता है या बस जाता है।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक आते-आते छोटे-छोटे जनपद, महाजनपदों में तब्दील हो गये।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर-निकाय तथा जैनग्रंथ भगवतीसूत्र में 16 महाजनपदों का उल्लेख है। इसमें से आठ महाजनपद वर्तमान उत्तर प्रदेश में स्थित है। **UPSSSC Van Rakshak 21.08.2022**

16 महाजनपद		राजधानी	वर्तमान अवस्थिति
1.	अंग	चम्पा	बिहार राज्य का भागलपुर व मुंगेर जिला
2.	अश्मक	पैठन या पोटन	गोदावरी नदी के तट पर
3.	अवंती	उज्जयिनी (उत्तरी अवंती की) माहिष्मती (दक्षिणी अवंती की)	पश्चिमी और मध्य मालवा क्षेत्र
4.	चेंदि	शुक्तिमती या सोत्थिवती	बुन्देलखण्ड क्षेत्र
5.	गांधार	तक्षशिला या पुष्कलावती	पाकिस्तान में पेशावर तथा रावलपिंडी का क्षेत्र
6.	काशी	वाराणसी	वाराणसी का आस-पास का क्षेत्र
7.	कंबोज	हाटक या राजपुर	कश्मीर का पुंछ क्षेत्र तथा पाकिस्तान का राजौरी और हजारा जिला
8.	कोशल	कुशावती व श्रावस्ती (सहेत-महेत)	उत्तर प्रदेश का गोण्डा, बहराइच और फैजाबाद मण्डल।
9.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ	दिल्ली व मेरठ के निकटवर्ती क्षेत्र
10	मगध	गिरिव्रज या राजगृह	पटना एवं दक्षिणी बिहार का क्षेत्र
11.	मल्ल	कुशीनारा व पावा	उत्तर प्रदेश का देवरिया गोरखपुर, सिद्धार्थ नगर, बस्ती जिला
12.	मत्स्य	विराटनगर	राजस्थान के अलवर, भरतपुर, जयपुर जिले
13.	पांचाल	अहिच्छत्र (उत्तरी पांचाल) काम्पिल्य (दक्षिणी पांचाल)	उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद, बरेली और बदायूँ का क्षेत्र
14.	शूरसेन	मथुरा	उत्तर प्रदेश का ब्रज क्षेत्र
15.	वज्जि	वैशाली	मुजफ्फरपुर (बिहार) का समीपवर्ती क्षेत्र
16.	वत्स	कौशांबी	उत्तर प्रदेश का प्रयागराज, बांदा और कौशाम्बी जिला।

- छठी शताब्दी ई. पू. का सबसे दक्षिणी महाजनपद अश्मक था।
- विश्व का पहला गणतंत्र वैशाली में लिच्छवियों द्वारा स्थापित किया गया।

❖ बुद्ध कालीन भारत के गणराज्य

- **10 महत्वपूर्ण गणराज्य**
  - वैशाली के - लिच्छवी
  - मिथिला के - विदेह
  - कुशीनारा के - मल्ल
  - पावा के - मल्ल
  - रामगाम के - कोलिय
  - कपिलवस्तु - शाक्य
  - पिप्पलिवन के - मोरिय
  - अलकप्प - बुलि
  - केसपुत्त के - कालाम
  - सुंसुमार गिरि के - भग्ग
- वज्जि संघ आठ कुलों का संघ था।
- ज्ञातृक, विदेह, वज्जि तथा लिच्छवी,वज्जि संघ के प्रमुख कुल थे।
- महावीर स्वामी ज्ञातृक कुल में जन्म लिए थे।
- बुद्ध के समकालीन वत्स महाजनपद के शासक उदयन का विवाह अवंति के शासक चंड प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता से हुआ था।
- कोशल के राजा प्रसेनजित ने अपनी पुत्री 'वजिरा' का विवाह अजातशत्रु से किया था।
- पांडु रोग से ग्रसित अवंति के शासक चण्डप्रद्योत के उपचार के लिए बिंबिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को भेजा था।
  SSC CPO 11.12.2019
- प्रथम मगध साम्राज्य का उत्कर्ष ई.पू. छठवीं शताब्दी में हुआ था।
- आजातशत्रु अपने मंत्री सुनीध तथा वास्सकार की मदद से लिच्छवी गणराज्य में फूट डालकर, लिच्छवी गणराज्य को समाप्त कर दिया।
- बसाड़ की पहचान प्राचीन वैशाली से की जाती है।

बौद्ध साहित्य के अनुसार मगध के शासक-

वंश	शासक	शासनकाल	उपाधि
हर्यक वंश (544-412 ई.पू.)	बिंबिसार	544-492 ई.पू.	श्रेणिक
	अजातशत्रु	492-460 ई.पू.	कुणिक
	उदयिन	460-444 ई.पू.	
	उदयिन के उत्तराधिकारी, अनिरूद्ध, मुंडक, नागदशक ने 412 ई. पू. तक शासन किया।		
शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.)	शिशुनाग	412-394 ई.पू.	
	कालाशोक	394-366 ई.पू.	
	कालाशोक के पश्चात उसके 10 पुत्रों ने 344 ई.पू. तक शासन किया। इस वंश का अंतिम राजा नंदिवर्धन था।		
नंद वंश (344-322 ई.पू.)	महापद्म नन्द धनानन्द	344-340 ई.पू.	

- बिंबिसार ने वैवाहिक सम्बन्धों के माध्यम से अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसने कोशल नरेश प्रसेनजित की बहन महाकोशला से, वैशाली के राजा चेटक की पुत्री चेल्लना से तथा मद्रदेश की राजकुमारी क्षेमा से विवाह किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से धनानन्द की हत्या कर मौर्य वंश की स्थापना की।
- हर्यंक वंश के शासकों ने अपने पिताओं की हत्या कर सिंहासन ग्रहण किया था इसलिए इस वंश को पितृहंता वंश कहा गया है।
- कलिंग नरेश खारवेल चेदिवंश से सम्बन्धित था।
- खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से साक्ष्य प्रकट होता है कि नंद राजा महापद्मनंद के आदेश से कलिंग में एक नहर निकाली गई थी। **UPPCS (Pre.) G.S. 1999**
- खारवेल अभिलेख से ज्ञात होता है कि महापद्मनंद ने कलिंग की विजय की और जिनसेन की एक प्रतिमा उठा ले गया। महापद्मनंद को पुराणों में 'सर्वक्षत्रांतक' और 'अपरोपरशुराम' कहा गया है। **UP UDA/LDA Spl. (Pre.) I[st] 2010**
- अजातशत्रु के उत्तराधिकारी उदयिन ने मगध साम्राज्य की राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानान्तरित की।
  UPP Constable 18.06.2018
- शिशुनाग ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से वैशाली स्थानान्तरित किया। शिशुनाग का उत्तराधिकारी कालाशोक राजधानी को पुनः पाटलिपुत्र ले गया।

मौर्य काल

❖ मौर्य वंश

शासक	शासन अवधि
चन्द्रगुप्त मौर्य	322 ई. पू. - 298 ई. पू.
बिन्दुसार	298 ई. पू. - 273 ई. पू.
अशोक	273 ई. पू. - 232 ई. पू.
दशरथ	232 ई. पू. - 224 ई. पू.

सम्प्रति	224 ई. पू. - 215 ई. पू.
शालिसुक	215 ई. पू. - 202 ई. पू.
देववर्मन	202 ई. पू. - 195 ई. पू.
शतधनवन	195 ई. पू. - 187 ई. पू.
बृहद्रथ	187 ई. पू. - 184 ई. पू.

■ मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अंतिम शासक बृहद्रथ था। **UPP Constable 19.06.2018 (Shift-I)**

चन्द्रगुप्त मौर्य का नामकरण	
स्ट्रैबो, मेगस्थनीज, जस्टिन	सैन्ड्रोकोट्स
ऐरियन, प्लूटार्क	एण्ड्रोकोट्स
जूनागढ़ अभिलेख	चन्द्रगुप्त

■ वर्ष 1793 में 'विलियम जोन्स' ने सैन्ड्रोकोटस की पहचान चन्द्रगुप्त मौर्य के रूप में की।

बिन्दुसार का नामकरण	
यूनानी लेखक एथेनियस	अमित्रोकेड्स
स्ट्रैबो	अमित्रोकेड्स
जैन ग्रन्थ	सिंह सेन
वायु पुराण	भद्रसार

■ वर्ष 1837 में जेम्स प्रिन्सेप ने अशोक का दिल्ली टोपरा लेख पढ़ने में सफलता प्राप्त की। अतः ब्रह्मी लिपि और अशोक के शिलालेखों को सर्वप्रथम 'जेम्स प्रिंसेप' ने पढ़ा। परन्तु जेम्स प्रिंसेप ने देवनांपिय (अशोक) की पहचान सिंहल राजा तिस्स से कर दी। **SSC MTS 26.10.2021 (Shift-II)**

अशोक का नामकरण	
मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर, उद्यगोलम अभिलेख	अशोक
भब्रु शिलालेख	पियदस्सी राजा
गिरनार अभिलेख	अशोक मौर्य

■ **चन्द्रगुप्त मौर्य से सम्बन्धित जानकारी के स्रोत**

स्रोत	**संदर्भ**
विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस	वृषल और कुलहीन कहा
हेमचंद्र कृत परिशिष्टपर्वन	मयूर पोषकों के ग्राम के मुखिया की पुत्री का पुत्र
क्षेमेन्द्र कृत 'बृहतकथामंजरी' तथा सोमदेव कृत 'कथासरित्सागर'	शुद्र उत्पत्ति का विवरण

❖ सेल्युकस पर चन्द्रगुप्त मौर्य की विजय

सेल्युकस - सिकन्दर के साम्राज्य के पूर्वी भाग का शासक

युद्ध - सेल्युकस और चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना के बीच 305 ई.पू. में

संधि -सेल्युकस ने अरकोसिया के राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा

RRB NTPC 15.06.2022 (Shift-III)

- सेल्युकस ने अपनी पुत्री 'हेलना' का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से कर दिया।

सेल्युकस ने -
- एरिया (हेरात)
- अरकोसिया (कंधार)
- जेड्रोसिया (मकरान-बलूचिस्तान)
- पेरीपेनिसदाई (काबुल) का प्रदेश चन्द्रगुप्त मौर्य को संधि स्वरूप दिया।

-प्लूटार्क के कथनानुसार, चन्द्रगुप्त ने सेल्युकस को उपहार स्वरूप 500 हाथी दिए।

❖ मेगस्थनीज की इंडिका

UPSSSC PET 24.08.2021 (Shift-II)

■ अपने मूल स्वरूप में उपलब्ध नहीं है।

■ स्ट्रैबो, एरियन, प्लूटार्क, डियोडोरस जैसे परवर्ती लेखकों द्वारा इसके महत्वपूर्ण अंशों का उल्लेख किया गया है।

मेगस्थनीज के अनुसार-

■ पाटलिपुत्र पूर्वी भारत का सबसे बड़ा नगर था।

■ यह गंगा और सोन नदी के संगम पर स्थित था।

■ मौर्य सम्राट का नाम सैंड्रोकोट्स के रूप में वर्णित था।

■ मौर्य सम्राट की राजधानी पोलिब्रोथा थी।

■ राजधानी 80 स्टेडिया लंबी तथा 15 स्टेडिया चौड़ी थी।

■ सोना निकालने वाली चीटियों व सोने की खानों का जिक्र करता है।

■ भारत में 7 प्रकार की जातियाँ हैं

SSC JE Civil 11.10.2023 (Shift-II)

(1) दार्शनिक (2) कृषक (3) पशुपालक (4) कारीगर (5) योद्धा (6) निरीक्षक (7) मंत्री

■ भारत में दास प्रथा नहीं थी।

■ लेखन कला का अभाव था।

■ भारत में कभी अकाल नहीं पड़ा।

■ कर की दर भूराजस्व का 1/4 थी।

■ नगर प्रशासन हेतु 6 समितियाँ उत्तरदायी थी। प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

■ दक्षिण भारत के पाण्ड्य राजवंश का उल्लेख किया है।

पोरस का राज्य वर्तमान पंजाब में झेलम (हाइडेस्पीज) और चेनाब (एसी सेंस) नदियों तक था।

326 ई.पू. में भारत पर आक्रमण करने के लिए सिकन्दर ने सबसे पहले सिन्धु नदी को पार किया।

326 ई.पू. में सिकन्दर में झेलम नदी के तट पर 'हाइडेस्पीज के युद्ध' में पुरु (पोरस) को पराजित किया।

सिकन्दर के विरुद्ध, मस्सग नामक भारतीय राज्य की स्त्रियों ने युद्ध भूमि में बड़ी संख्या में सैनिकों के मारे जाने के बाद शस्त्र धारण किया था।

❖ कौटिल्य (विष्णुगुप्त) का अर्थशास्त्र

■ मौर्य प्रशासन की जानकारी (शासन के सिद्धान्त) का स्रोत है।

■ संस्कृत में लिखे गए इस ग्रंथ में 15 अधिकरण हैं।

■ अर्थशास्त्र में राज्य के शासन हेतु 'सप्तांग सिद्धान्त' का जिक्र है-
(1) राजा - शीश के समान
(2) आमात्य - राज्य की आखें
(3) जनपद - राज्य की जंघाएं
(4) दुर्ग - राज्य की भुजाएं
(5) कोष - राज्य का मुख
(6) दण्ड - राज्य का मस्तिष्क
(7) मित्र - राज्य का कान

■ कौटिल्य के अर्थशास्त्र की तुलना मैकियावेली के 'प्रिंस' से की जाती है।

❖ चन्द्रगुप्त मौर्य

■ चन्द्रगुप्त मौर्य ने 322 ईसा पूर्व में कौटिल्य की सहायता से अंतिम नंद शासक घनानन्द को पराजित कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। **SSC MTS/Havaldar 07.07.2023**

■ चन्द्रगुप्त मौर्य के दक्षिण विजय की जानकारी संगम ग्रन्थ 'अहनानुरू' तथा 'पुरूनानुरू' से प्राप्त होती है।

■ रूद्रदामन के जूनागढ़ या गिरनार शिलालेख के अनुसार-पश्चिम में सौराष्ट्र चन्द्रगुप्त के अधिकार में था। चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रान्तीय गवर्नर पुष्यगुप्त वैश्य ने सिंचाई हेतु सुदर्शन झील पर एक बाँध बनवाया था।

■ चन्द्रगुप्त मौर्य अपने जीवन के अंतिम दिनों में जैन भिक्षु भद्रबाहु का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया था।

■ चन्द्रगुप्त मगध में पड़े 12 वर्षीय अकाल से निपटने में असफल रहने पर भद्रबाहु के साथ कर्नाटक स्थित श्रवणबेलगोला चले गये।

■ श्रवणबेलगोला में ही उन्होंने 298 ई. पू. में संल्लेखना (आमरण उपवास) द्वारा शरीर त्याग दिया। **UPPCS AE 2011**

❖ बिंदुसार

■ बिंदुसार की माता का नाम दुर्धरा था।

■ बिंदुसार का मंत्री विष्णुगुप्त तथा बाद में खल्वाटक (खल्लाटक) था।

■ बिंदुसार ने अपने बड़े पुत्र सुसीम (सुमन) को तक्षशिला का तथा अशोक को उज्जैन का प्रांताध्यक्ष नियुक्त किया था।

■ बिंदुसार की राज्यसभा में आजीवक संप्रदाय का ज्योतिषी पिंगलवत्स रहता था।

■ **बिंदुसार के दरबार में भेजे गए राजदूत**

देश	शासक	राजदूत
मिस्र	टॉलेमी II फिलाडेल्फस	डायनोसियस
सीरिया	एंटियोकस	डाइमेकस

■ बिन्दुसार ने सीरिया के शासक एंटियोकस से तीन वस्तुओं (1) मीठी मदिरा (2) सूखी अंजीर (3) एक दार्शनिक की मांग की थी।

■ एंटियोकस ने मीठी मदिरा तथा सूखी अंजीर भेजवा दी, तथा दार्शनिक के संबंध में यूनानी कानून का हवाला देते हुए संदेश दिया कि दार्शनिकों का विक्रय नहीं किया जा सकता।

❖ अशोक

राज्याभिषेक	माता-पिता	पत्नी	प्रचलित नाम
269 ई. पू. (राज्यारोहण के चार वर्ष बाद)	सुभद्रांगी व बिन्दुसार	देवी, तिष्यरक्षिता, कारूवाकी, असंधिमित्रा, पद्मावती	देवानांपियदासि

■ मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर तथा उडेगोलम के लेखों में अशोक का व्यक्तिगत नाम मिलता है।

■ अशोक के अभिलेखों का विभाजन तीन वर्गों में किया जा सकता है।

(1) शिलालेख → दीर्घ शिलालेख
→ लघु शिलालेख
(2) स्तम्भलेख
(3) गुहालेख

■ अशोक के शिलालेखों में चार लिपियों-ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाइक तथा यूनानी का प्रयोग किया गया है। अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत है।

■ वृहत/दीर्घ शिलालेख प्रशासन व धम्म से सम्बन्धित है, इनकी संख्या 14 है जो 10 विभिन्न स्थलों से प्राप्त हुए हैं।

दीर्घ शिलालेख	अवस्थित	खोजकर्ता
गिरनार	जूनागढ़, गुजरात	कर्नल जेम्स टाड (1822 ई.)
शाहबाजगढ़ी	पेशावर, पाकिस्तान	जनरल एम कोर्ट (1836 ई.)
धौली	पुरी, ओडिशा	मार्खम किट्टो (1837 ई.)
जौगढ़	गंजाम, ओडिशा	इलियट (1850 ई.)
कालसी	देहरादून, उत्तराखंड	फॉरेस्ट (1860ई.)
सोपारा	ठाणे, महाराष्ट्र	भगवान लाल (1882ई.)
मानसेहरा	हाजरा, पाकिस्तान	कनिंघम (1889ई.)
एर्रगुडी	कुर्नूल, आंध्रप्रदेश	अणुघोष (1929 ई.)
कांधार	अफगानिस्तान	डॉ. श्लुम्बर्गर (1964 ई.)
सन्नति	गुलबर्गा (कर्नाटक)	1989 ई.

❖ अशोक के 14 वृहत/दीर्घ शिलालेख

क्रम - विषय

■ **पहला** - जीव हत्या का निषेध

■ **दूसरा** - चोल, पाण्ड्य, सतियपुत्त, ताम्रपर्णि तथा एंटीयोक, यवनराज व पड़ोसी राज्यों में भी मनुष्यों व पशुओं की चिकित्सा ।

- **तीसरा** - युक्त, रज्जुक व प्रादेशिक नामक तीन नए अधिकारियों के राज्य में दौरा करना।
- **चौथा** - भेरी घोष, धम्म घोष में बदल गया
- **पाँचवा** - राज्याभिषेक के 13वें वर्ष धम्म महामात्रों की नियुक्ति
- **छठा** - प्रतिवेदकों को प्रजा का हाल बताने का आदेश
- **सातवां** - सभी संप्रदाय के लोग सब जगह निवास करें
- **आठवां** - अशोक द्वारा धम्म यात्राओं का प्रारम्भ
- **नौवां** - 'धम्म मंगल' सर्वश्रेष्ठ घोषित
- **दसवां** - धम्म नीति की श्रेष्ठता पर बल
- **ग्यारहवां** - धम्मदान का उल्लेख
- **बारहवां** - धार्मिक सहिष्णुता पर बल **UPPCS (Pre) 2022**
- **तेरहवां** - कलिंग विजय का वर्णन (261 ई. पू.)

UPPCS (Pre) 2016
SSC CGL Tier-I 21.07.2023 Shift-III

पांच यवन राजाओं का उल्लेख

चोल पाण्ड्, सतियपुत्त, केरलपुत्त एवं ताम्रपर्णी का उल्लेख

- चौदहवां - सभी लेखों हेतु उपसंहार के स्वरूप है।

13वें शिलालेख में वर्णित पांच यवन राजा

यवन राजा	देश
टॉलमी फिलाडेल्फस II (तुरमय)	मिस्र
एलेक्जेंडर (अलिकसुंदर)	एपिरस
मैगस (मग)	साइरीन
एंटीगोनस गोनाट्स (अंतकिन)	मेसीडोनिया
एंटीयोकस II (अंतियोक)	सीरिया

- अशोक के दीर्घशिलालेखों में 13वाँ शिलालेख सबसे बड़ा शिलालेख है। **लोअर II 06.03.2016**

अशोक के 7 स्तंभ लेख 6 स्थानों से प्राप्त हुए हैं

- (1) लौरिया-अरराज (पूर्वी चंपारण, बिहार), (2) लौरिया-नंदनगढ़ (पश्चिमी चंपारण, बिहार) (3) रामपुरवा (पश्चिमी चंपारण) (4) दिल्ली-टोपरा (5) दिल्ली-मेरठ (6) प्रयाग

- केन्द्रीय प्रशासन के प्रत्येक विभाग का प्रमुख तीर्थ के नाम से जाना जाता था जिनकी संख्या 18 थी।

❖ 18 तीर्थ

(1) प्रधानमंत्री (पुरोहित)
(2) युवराज (राजा का उत्तराधिकारी)
(3) समाहर्ता (राजस्व मंत्री)

SSC CGL (Tier-I) 17.07.2023 (Shift-II)

(4) सन्निधाता (कोषाध्यक्ष)
(5) सेनापति (सैन्यमंत्री)
(6) प्रदेष्टा (फौजदारी न्यायालयों के न्यायाधीश)
(7) व्यावहारिक (दीवानी न्यायालयों के न्यायाधीश)
(8) दण्डपाल (सैन्य संसाधन एकत्रित करने वाला)
(9) अंतपाल (सीमांत प्रदेशों के दुर्गों की देखभाल करने वाला प्रमुख)
(10) कर्मांतिक (उद्योग मंत्री)
(11) दुर्गपाल (देश के भीतर दुर्ग की देखभाल करने वाला प्रमुख)
(12) नागरक (नगरों की व्यवस्था का प्रमुख)
(13) प्रशास्ता (राजकीय दस्तावेजों को सुरक्षित रखने वाला प्रमुख)
(14) दौवारिक (राजप्रसादों का अधिकारी)
(15) अंतर्वशिक (राजा की निजी अंगरक्षक सेना का प्रमुख)
(16) आटविक (वन विभाग का प्रमुख)
(17) मंत्रीपरिषदाध्यक्ष (मंत्रि परिषद का प्रमुख)
(18) नायक (सेना का संचालनकर्ता)

❖ अन्य महत्वपूर्ण पदाधिकारी

- सीताध्यक्ष-कृषि विभाग का अध्यक्ष
- विवीताध्यक्ष-चारागाहों व पशु सुरक्षा अध्यक्ष
- सूनाध्यक्ष-बूचड़खाने का अध्यक्ष
- पण्याध्यक्ष-वाणिज्य विभाग का अध्यक्ष
- पौतवाध्यक्ष-मापतौल विभाग का अध्यक्ष
- सूत्राध्यक्ष-व्यवसाय विभाग का अध्यक्ष
- लक्षणाध्यक्ष-टकसाल का अध्यक्ष
- अकराध्यक्ष-खान विभाग का अध्यक्ष
- कुप्याध्यक्ष-वन विभाग का अध्यक्ष
- मानाध्यक्ष-दूरी व मापन विभाग का अध्यक्ष
- अक्षपटलाध्यक्ष-महालेखाकर
- लवणाध्यक्ष-नमक व्यापार का अध्यक्ष
- जांगलिविद - मौर्यकाल में सदैव राजा के पास रहने वाला विष परीक्षण वैद्य **UPPSC Ayuvedacharya 2022**
- मौर्यकाल में प्रशासन की सबसे बड़ी इकाई प्रान्त थी। अशोक के अभिलेख में **पांच प्रान्तों** की चर्चा की गई है-

प्रांत	राजधानी
उत्तरापथ (उदीच्ची)	तक्षशिला
अवंति रट्ढ	उज्जयिनी
दक्षिणापथ	सुवर्णगिरी
प्राच्य व प्राची	पाटलिपुत्र
कलिंग	तोशली

- पाटलिपुत्र (पटना) के निकट अवस्थित बुलंदी बाग एवं कुम्रहार में मौर्यकालीन लकड़ी के भवनों का अवशेष प्राप्त हुआ है। जिसके खोज का श्रेय स्पूनर महोदय को जाता है।
- सोहगौरा ताम्रपत्र अभिलेख (गोरखपुर से प्राप्त) तथा महास्थान अभिलेख (बोगरा, बांग्लादेश से प्राप्त) में खाद्यान्न को अकाल के समय सुरक्षित रखने के सम्बन्ध में प्राचीनतम शाही आदेश है।

❖ मौर्य प्रशासन की इकाई

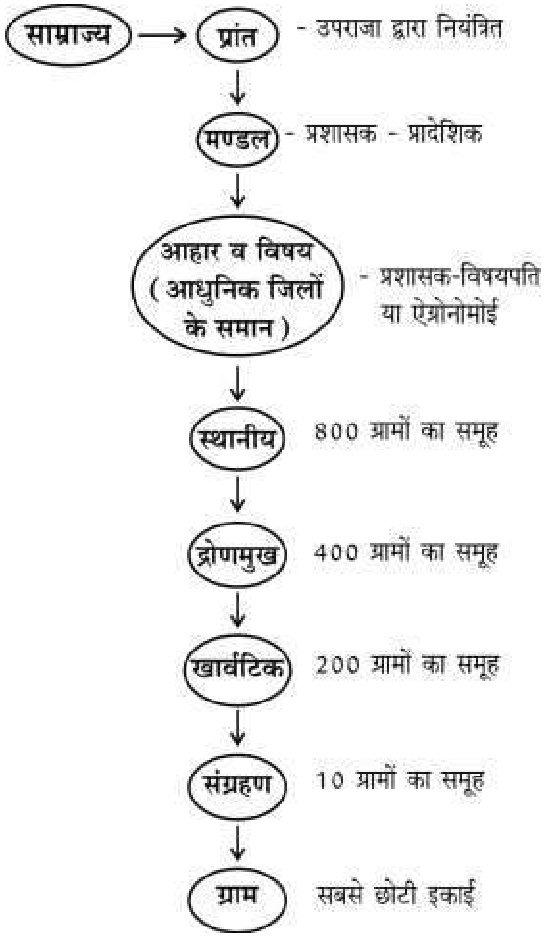

■ **कर** - मौर्य काल में कर नकद एवं वस्तु दोनों रूपों में लिए जाते थे।
■ ब्राह्मण, बच्चे एवं विकलांग कर से मुक्त थे।

प्रमुख कर -

■ रज्जु - भूमि माप के समय लिया जाने वाला
■ पिंडकर - गाँव पर सामूहिक रूप से लगाया जाने वाला
■ भाग - भूमिकर या जो उपज का 1/6 था।
■ बलि - धार्मिक भेंट के रूप में लिया जाने वाला कर था।

- प्रणय - आपातकालीन कर
- तरदेय - पुलपार करने पर
- हिरण्य - नकद कर
- विष्टि - बेगार
- प्रवेश्य - आयात कर
- सेतु - फल, फूल सब्जियों पर कर
- परहीनक - चराई पर कर
- उदयक भाग - सिंचाई कर
- गुल्मदेय - सैनिकों का शुल्क
- अतिवाहिका - मार्ग दर्शन कर
- उत्संग - राजा को प्रजा द्वारा दिया जाने वाला उपहार
- कौष्ठेयक - सरकारी जलाशय के नीचें की भूमि पर लगाया गया कर

मौर्य काल में राजकीय भूमि से प्राप्त आय को सीता कहा जाता है।

सड़क पर कीचड़ फैलाने पर मौर्य प्रशासन द्वारा पंकोदक-सन्निरोधे नामक जुर्माना लिया जाता था।

■ भब्रू शिलालेख (जयपुर) में अशोक स्वयं को 'पियदसि लाजा मगधे' कहता है।
■ बौद्ध ग्रन्थ महावंश के अनुसार अशोक ने धम्म प्रचार हेतु कई देशों में धर्म प्रचारक भेजे।

■ **धर्म प्रचारक**		**देश**
महेन्द्र तथा संघमित्रा	-	ताम्रपर्णी (श्रीलंका)
मज्झान्तिक	-	कश्मीर व गन्धार
महारक्षित	-	यूनान देश (यवन)
महाधर्म रक्षित	-	महाराष्ट्र
महादेव	-	महिषमण्डल (मैसूर)
रक्षित	-	वनवासी (कर्नाटक)
धर्म रक्षित	-	अपरान्तक (मुम्बई तट)
मज्झिम	-	हिमालय देश
सोन तथा उत्तरा	-	सुवर्ण भूमि

अशोक ने पाटलिपुत्र में अशोकाराम तथा कुक्कुटाराम बिहार का निर्माण करवाया।

अशोक द्वारा बराबर की पहाड़ियों में राज्याभिषेक के 12 वर्ष बाद सुदामा की गुफा तथा विश्व झोपड़ी नामक गुहा विहार का निर्माण करवाया गया तथा राज्याभिषेक के 19 वर्ष बाद 'कर्ण चौपड़' की गुफा का निर्माण करवाया।

अशोक ने श्रीनगर (कश्मीर) तथा ललित पाटन (नेपाल) नामक नगरों का निर्माण करवाया।

अशोक के स्तंभ लेखों के लिए पत्थर चुनर से निकाला जाता था। **UPPSC Unani Medical Officer 2018**

अशोक द्वारा निर्मित स्तूप	विशेषता
साँची (रायसेन जिला, मध्य प्रदेश)	चार सिंह युक्त शीर्षक
भरहुत (सतना जिला, मध्य प्रदेश)	धर्म चक्र, बोधिवृक्ष व त्रिरत्नों का अंकन प्राप्त होता है।
बोधगया (बिहार)	यहां महाबोधिबिहार नामक महासंघाराम का निर्माण
तक्षशिला	स्तंभ यूनान की कोरिथ शैली में निर्मित
सारनाथ	गौतम बुद्ध को समर्पित शारीरिक स्तूप
अमरावती	

■ सांची के स्तूप का निर्माण अशोक ने करवाया था। सांची का प्राचीन नाम 'काकणाम' भी था।
■ कौशाम्बी या प्रयाग लघु स्तंभ लेख को रानी का शिलालेख कहा जाता है। इसमें अशोक की पत्नी 'करूवाकी' और पुत्र 'तीवर' का उल्लेख है।

■ मौर्यकाल में व्यापारिक काफिलों के प्रधान को सार्थवाह कहा जाता था।
■ रूपदर्शक-मुद्राओं का परीक्षण करने वाला अधिकारी था।
■ अशोक के लौरिया नन्दनगढ़ स्तंभ लेख पर मोर का उत्कीर्णन है।
■ मौर्य शासकों में अशोक और दशरथ ने देवानामपिय की उपाधि धारण की थी।
■ गुजरात के गिरनार में सुराष्ट्र प्रांत में स्थित सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त के प्रांतपति पुष्यगुप्त ने करवाया था। इस झील की मरम्मत से सम्बन्धित प्रांतपति हैं-

सौराष्ट्र के गवर्नर (प्रांतपति)	शासक
• पुष्यगुप्त	चन्द्रगुप्त मौर्य
• तुषाष्य	अशोक
• सुविशाख	रूद्रदामन
• चक्रपालित	स्कन्दगुप्त

■ अशोक के शीर्ष युक्त स्तम्भ

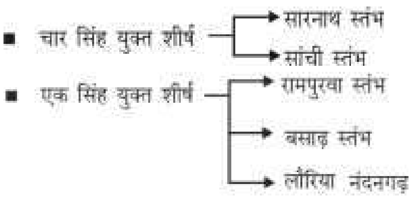

■ गज युक्त शीर्ष - संकिसा स्तंभ
■ अश्व युक्त शीर्ष (नष्ट) - रूम्मिनदेई स्तंभ
■ वृषभ युक्त शीर्ष - रामपुरवा
■ गरुड़ युक्त शीर्ष (नष्ट) - लौरिया अरराज स्तंभ

■ रूम्मिनदेई लघु स्तंभ लेख के अनुसार अशोक राज्याभिषेक के 20वें वर्ष लुम्बिनी की यात्रा की। लुम्बिनी ग्राम को बलि कर से मुक्त घोषित कर भूराजस्व 1/6 से घटाकर 1/8 कर दिया।
■ राज्याभिषेक के 14 वर्ष बाद अशोक नेपाल की तराई में स्थित निग्लीवा में कनक मुनि के स्तूप के निर्माण को संवर्धित (दोगुना) कराया। **UP UDA/LDA Spl. 2006**

मौर्योत्तर काल

वंश	संस्थापक	राजधानी	अंतिम शासक
शुंग वंश	पुष्यमित्र शुंग	पाटलिपुत्र	देवभूति
कण्व वंश	वसुदेव कण्व		सुशर्मा
सातवाहन	सिमुक या सिंधुक	प्रतिष्ठान या पैठन (आरम्भिक राजधानी अमरावती)	पुलुमावि चतुर्थ
वाकाटक	विन्ध्यशक्ति	पुरी (बरार)	
कदंब वंश	मयूर शर्मन	बनवासी	हरिवर्मन
चेदि	महामेघवाहन	कलिंग	महाराजा कुदेय

❖ शुंगवंश (184 ई.पू. से 75 ई.पू.)

■ 184 ई. पू. में पुष्यमित्र शुंग ने मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की। **SSC GD 14.12.2021 (Shift-I)**
■ पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मण धर्मानुयायी था।
■ धनदेव के अयोध्या लेख के अनुसार, पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ किया। जिसमें पतंजलि एक के पुरोहित थे। **UPPCS (Pre.) 2011, लोअर प्रथम - 2016**
■ कालिदास के नाटक मालविकाग्निमित्रम में अग्निमित्र (पुष्यमित्र शुंग का पुत्र) और उसकी प्रेयसी मालविका की कथा है। **UPSI Batch-I 2017**
■ पुष्यमित्र शुंग के काल में ही मनु द्वारा 'मनुस्मृति' और पतंजलि द्वारा 'महाभाष्य' की रचना की गई। पतंजलि मूलतः गोनर्द (गोंडा जिला) के निवासी थे।
■ 'भागवत धर्म' स्वीकार कर बेसनगर (विदिशा) में गरूड़ध्वज स्थापित करने वाला हेलियोडोरस शुंग शासक भागभद्र की राजसभा में यवन शासक ऐण्टियालकीड्स का राजदूत बनकर आया था।

❖ कण्व वंश (75 ई.पू. से 30 ई.पू.)

■ अंतिम शुंग शासक देवभूति की हत्या कर उसके प्रधानमंत्री वासुदेव ने 'कण्व वंश' की स्थापना की।
■ कण्व वंश के चार शासकों-वासुदेव, भूमिमित्र, नारायण, सुशर्मा ने लगभग 45 वर्ष शासन किया।
■ **सातवाहन वंश के शासक -** सिमुक कान्ह शातकर्णी I हाल गौतमीपुत्र शातकर्णी वशिष्ठीपुत्र पुलुमावि शिवश्री शातकर्णी यज्ञश्री शातकर्णी
■ सिमुक ने अंतिम कण्व शासक सुशर्मा की हत्या कर सातवाहन वंश की स्थापना की।
■ सातवाहन शासकों को पुराणों में आन्ध्रभृत्य अथवा आन्ध्रजातीय कहा गया है।
■ सातवाहन वंश का प्रथम प्रमुख शासक शातकर्णी प्रथम था। उसने दो अश्वमेध और एक राजसूय यज्ञ किया था।
■ शातकर्णी प्रथम ने नयनिका अथवा नागनिका से विवाह किया । नागनिका द्वारा स्थापित ''नानाघाट शिलालेख'' में शातकर्णी प्रथम को दक्षिणापथ का अधिस्वामी बताया गया है।
■ सातवाहन वंश का महानतम शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी था। वह अपने नाम के आगे मातृनाम जोड़ने वाला पहला सातवाहन शासक था।
■ गौतमी पुत्र शातकर्णी की माता का नाम 'गौतमी बलश्री' था। गौतमी बलश्री के नासिक शिलालेख में उसकी उपलब्धियों का वर्णन है। उसे वर्ण व्यवस्था का रक्षक कहा जाता है। नासिक शिलालेख में उसे 'एका ब्राह्मण' कहा गया है। **SSC JE Civil 25.01.2018 (Shift-I)**
■ 'दो पतवारों वाले जहाज' का अंकन वाशिष्ठीपुत्र पुलुमावी के सिक्कों पर मिलता है।
■ वाशिष्ठीपुत्र पुलुमावी ने 'दक्षिणा-पथेश्वर' की उपाधि धारण की। कन्हेरी अभिलेख के अनुसार, इसने शक शासक रूद्रदामन की पुत्री से विवाह किया।

- सातवाहन काल के सर्वाधिक सिक्के सीसे के हैं। सातवाहन शासकों द्वारा सीसा, चाँदी, ताँबा, कांसा तथा पोटीन की मुद्रा चलाई गई।
- सातवाहन शासकों ने सोने के सिक्के नहीं चलाए।
- मत्स्य पुराण में 29 सातवाहन राजाओं का नाम मिलता है।
- सातवाहन शासक प्राकृत भाषा के पोषक थे।
- आन्ध्र प्रदेश के गुंटूर जिले से प्राप्त भट्टिप्रोलू अभिलेख चाँदी से निर्मित है।

❖ वाकाटक वंश

- इस वंश का वास्तविक संस्थापक प्रवरसेन प्रथम था।
- प्रवरसेन प्रथम ने चार अश्वमेध और एक वाजपेय यज्ञ किया था। वह 'सम्राट' की उपाधि धारण करने वाला इस वंश का इकलौता शासक था।
- वाकाटक शासक रूद्रसेन द्वितीय का विवाह गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती के साथ हुआ था।
- वाकाटक शासक प्रवरसेन द्वितीय द्वारा 'सेतुबन्ध' नामक ग्रन्थ की रचना की गई।

मौर्योत्तर कालीन भारत में विदेशी आक्रांता

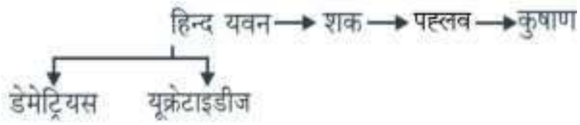

- लगभग 183 ई. पू. में बैक्ट्रिया के शासक डेमेट्रियस ने पंजाब के एक बड़े भाग को जीत कर साकल को राजधानी बनायी।
- इसी दौरान यूक्रेटाइडीज ने बैक्ट्रिया पर अधिकार कर भारत पर आक्रमण किया, पश्चिमी पंजाब को जीतकर तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया।
- डेमेट्रियस वंश का प्रसिद्ध शासक मिनांडर था। मिनांडर बौद्ध धर्म का संरक्षक था।
- बौद्ध भिक्षु नागसेन और मिनांडर के मध्य किया गया संवाद 'मिलिंदपन्हों' नामक ग्रन्थ में वर्णित है।
- स्ट्रैटो II ने सीसे के सिक्के चलवाये अगाथोक्लीज के सिक्कों पर संकर्षण एवं वासुदेव का अंकन हुआ है।
- यूक्रेटाइडीज वंश का प्रसिद्ध शासक एण्टियालकीडस था।
- हेलियोडोरस, एण्टियालकीडस का राजदूत था।
- हेलियोडोरस का उल्लेख बेसनगर के गरुड़ स्तंभ में हुआ है।
- भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के हिन्द यवन शासकों ने ही चलाए तथा लेखों और चित्रों युक्त सिक्कों का सर्वप्रथम प्रचलन करवाया।

❖ शक या सीथियन

- ये सीर दरिया के मैदानों में रहने वाले कबायली थे।
- 165 ई. पू. में अपने मूल स्थान से ये यू-ची कबीले द्वारा खदेड़े जाने पर भारत आए।
- भारत में शकों की आने वाली पांच शाखाएं थी-(1) पश्चिमी भारत के कार्दमक वंश (2) नासिक का क्षहरात वंश (3) मथुरा (4) पंजाब (5) अफगानिस्तान
- कार्दमक वंश का संस्थापक चष्टन था। इस वंश का प्रसिद्ध शासक रूद्रदामन (130-150 ई.) था।
- भारत में चम्पू शैली (गद्य-पद्य मिश्रित) में संस्कृत भाषा का प्रथम अभिलेख रूद्रदामन का 'जूनागढ़' अभिलेख है।
- रूद्रदामन ने 'महाक्षत्रप' की उपाधि धारण की थी।
- लगभग 58 ई.पू. में उज्जैन के शासक विक्रमादित्य ने शकों को पराजित कर, विजय स्मृति में नया संवत् - विक्रम संवत् (57 ई. पू.) चलाया। हिन्दू पंचांग विक्रम संवत् पर आधारित है।

UPPCS (Pre.) 1992
जूनियर इंजीनियर/तकनीकी 31.07.2016

- क्षहरात वंश की शाखा का संस्थापक भूमक था। इस वंश का प्रसिद्ध शासक नहपान था।

❖ पह्लव अथवा पार्थियाई

- भारत पर आक्रमण करने वाले पह्लव मूलतः सीस्तान एवं आरकोसिया के निवासी थे।
- इस वंश का प्रसिद्ध शासक गोण्डोफर्नीज (20-41 ई.) था। इसने 'देवव्रत' की उपाधि धारण की तथा तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया।
- ईसाई धर्म प्रचारक 'सेंट टॉमस' गोण्डोफर्नीज के शासन काल में इस्राइल से भारत आया।
- गोण्डोफर्नीज के शासन काल का 'तख्त-ए-बही'अभिलेख पेशावर में मिला है।
- गोण्डोफर्नीज द्वारा मिश्रधातु (ताँबा + टिन + रजत) की मुद्रा चलाई गई।

❖ कुषाण

- कुषाण (यू-ची कबीला) अपने मूल निवास स्थान चीन की पश्चिमोत्तर सीमा से हूण (हिउंगन्नू) कबीले द्वारा खदेड़े गए।
- कुषाणों ने हिंदूकुश पार कर, गान्धार पर अधिकार कर लिया। कुजुल कडफिसेस (15ई.-65ई.) के नेतृत्व में कुषाणों ने काबुल, कान्धार तथा कश्मीर को अपने अधिकार में कर लिया।
- भारत में कुषाण सत्ता का वास्तविक संस्थापक विम कडफिसेस (65 ई.-78ई.) था। उसने अपना विस्तार सिन्धु नदी के पूरब में गंगा-यमुना दोआब तक किया।
- भारत में विम कडफिसेस सर्वप्रथम अपने नाम के सोने के सिक्के चलाया तथा इनका प्रचलन वह नियमित उपयोग के लिए किया था। नंदी, त्रिशूल तथा त्रिशूलधारी शिव की आकृति उसके सिक्कों पर मिलती है।
- विम कडफिसेस ने महाराजाधिराज, महाराज, महीश्वर, सर्व-लोकेश्वर की उपाधि धारण की।
- कुषाण वंश का सबसे महान शासक कनिष्क (78ई.–101ई.) था।
- कुछ इतिहासकारों का मत है कि कनिष्क अपने राज्यारोहण की स्मृति में शक संवत् (78ई. में) चलाया। **RRB JE - 2014**
- कनिष्क की राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) थी तथा उसने अपनी दूसरी राजधानी मथुरा को बनाया ।
- उसने महाराजाधिराज एवं देवपुत्र की उपाधि धारण की। उसने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को राजाश्रय प्रदान किया।

- कनिष्क के ताँबे के सिक्कों पर 'शाक्य मुनि बुद्ध' अंकित हैं। **UPPCS (Pre.) 2010**
- उसने सिरकप (तक्षशिला में) और कनिष्कपुर (कश्मीर में) नामक नगर बसाया था।
- कनिष्क के दरबार में राजकवि अश्वघोष, बौद्ध आचार्य नागार्जुन, राजवैद्य चरक, बौद्ध भिक्षु पार्श्व को आश्रय प्राप्त था। **UPSSSC Supply Inspector 17.07.2022**
- अश्वघोष द्वारा बुद्धचरित, सौदरानन्द तथा 'सारिपुत्र प्रकरण' की रचना की गई। नागार्जुन द्वारा 'प्रज्ञापारमिता सूत्र', की तथा चरक द्वारा 'चरक संहिता' की रचना की गई।
- अफगानिस्तान से प्राप्त कनिष्क के 'रबतक अभिलेख' में चम्पा, पाटलिपुत्र, कौशांबी, साकेत, कौडिन्य तथा उज्जियिनी का उल्लेख है।
- कनिष्क के उत्तराधिकारियों में क्रमशः वासिष्क, हुविष्क, कनिष्क द्वितीय तथा वासुदेव I का नाम आता है।
- हुविष्क के सिक्कों पर यूनानी एवं रोमन लिपि के लेख के साथ रोमन वेशधारी देवी की आकृति अंकित है जिस पर 'रोमा' नाम लिखा है। इसके सिक्कों पर पारसी देवता 'अहुरमज्दा' का अंकन है।
- पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (अनाम लेखक द्वारा लिखित ग्रन्थ) के अनुसार, भारत और रोम के मध्य आयात और निर्यात की जाने वाली वस्तुएं निम्नलिखित थीं-
- **रोम से भारत को आयात की गई वस्तुएं :** सोना, चाँदी, ताँबा, कांच, मूँगा, लोहबान, मदिरा, रांगा, चीनी मिट्टी के बर्तन आदि।
- **भारत से रोम को निर्यात की जाने वाली वस्तुएं :** काली मिर्च, अदरक, सूती वस्त्र, रेशम, मलमल, रत्न, मोती, गरम मसाले, मनोरंजक पशुपक्षी आदि।
- **मौर्योत्तर काल के भारत के प्रमुख बन्दरगाह -**

→ पूर्वी तट : कावेरीपट्टनम या पुहार, कोल्वी,अरिकामेडु, पलूरा (ओडिसा) ताम्रलिप्ति (बंगाल)

→ पश्चिमी तट : नौरा, तोंडिस, नेससिण्डा, मुजरिस (केरल), सुपरिक या सोपारा, कल्याण (महाराष्ट्र),बेरिगाजा (गुजरात),बारबेरिकस (सिन्धु के मुहाने पर)

- वर्तमान कैलेण्डर में 78 घटा देने पर शक संवत् तथा 57 जोड़ देने पर विक्रम संवत् प्राप्त होता है।
- सिरविहीन कनिष्क की प्रतिमा मथुरा से प्राप्त हुई थी।
- गांधार शैली भारतीय और यूनानी (ग्रीक) शैली का सम्मिश्रण है। इसके प्रमुख संरक्षक शक एवं कुषाण थे।

❖ इक्ष्वाकु वंश

- इक्ष्वाकु वंश का संस्थापक श्री शांतमूल था। इक्ष्वाकु पहले सातवाहनों के सामंत थे।
- इस वंश के शासकों को पुराणों में श्रीपर्वतीय तथा आन्ध्रभृत्य कहा गया है।

❖ चेदि वंश

- महामेघवाहन कलिंग के चेदिवंश का संस्थापक था।
- इस वंश का महानतम शासक खारवेल था। वह जैन धर्मानुयायी था।
- खारवेल का उदयगिरी पहाड़ी (ओडिशा) की 'हाथीगुम्फा' से बिना तिथि का अभिलेख प्राप्त हुआ है। **RRB Group-D 12.12.2018 (Shift-II)**
- खारवेल का इतिहास जानने का एकमात्र स्रोत हाथीगुम्फा अभिलेख है। **UPPCS (Pre.) 2018**
- भरध-वस (भारतवर्ष) का प्रथम अभिलेखीय संदर्भ खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से प्राप्त होता है।

गुप्त वंश

गुप्त शासक	शासनकाल	विशेष
श्री गुप्त	लगभग 275-290 ई.	गुप्तवंश का संस्थापक था
घटोत्कच	लगभग 290-319 ई.	महाराज की उपाधि धारण की।
चन्द्रगुप्त प्रथम	319-335 ई.	महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। 319 ई. में गुप्त संवत् प्रारंभ किया। सोने के सिक्के जारी करने वाला पहला गुप्त शासक था। लिच्छवि राजकुमारी **कुमारदेवी** से विवाह किया।
समुद्रगुप्त	335-375 ई.	**उपाधि** : अश्वमेध पराक्रम, अप्रतिवार्य वीर्य, अप्रतिरथ, पराक्रमांक, व्याघ्रपराक्रम, कृतांत परशु समुद्रगुप्त ने **दत्तादेवी** से विवाह किया। बी. ए. स्मिथ ने समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहा है।
काच तथा रामगुप्त	ऐतिहासिकता संदिग्ध है।	देवीचंद्रगुप्तम (विशाखदत्त कृत) नाटक में रामगुप्त शासक के रूप में वर्णित है।
चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य)	375-415 ई.	**उपाधि** : सिंह विक्रम, सिंह चंद्र, शकारि, गणारि, देवराज, देवश्री, देव, श्रीविक्रम, विक्रमादित्य, ध्रुवादेवी विक्रमांक, अजित विक्रम, परम भागवत। ध्रुवादेवी तथा नाग राजकुमारी **'कुबेरनागा'** से विवाह किया। चीनी यात्री फाह्यान (399-414 ई.) ने इसी के शासन काल में भारत की यात्रा की।

कुमारगुप्त प्रथम	415-455 ई.	**उपाधिः** महेन्द्रादित्य, श्रीमहेन्द्र, अश्वमेध महेन्द्र इसी ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना करायी। कदंब राजकुमारी **अनंत देवी** से विवाह किया।
स्कन्दगुप्त	455-467 ई.	**उपाधिः** क्रमादित्य, सकारा-द्य, शक्रोपम, क्षितिपशत, परमभागवत भारत पर हूणों का पहला आक्रमण स्कन्दगुप्त के काल में हुआ एवं हूण बुरी तरह पराजित हुए।
पुरुगुप्त	467-473 ई.	इसकी उपाधि 'प्रकाशादित्य थी' परमार्थ के अनुसार यह बौद्ध मतानुयायी गुप्त शासक (प्रथम गुप्त शासक) था।
कुमारगुप्त द्वितीय	473-477 ई.	
बुधगुप्त	477-495 ई.	**उपाधिः** श्री विक्रम, परमदैवत ह्वेनसांग के अनुसार बुद्धगुप्त ने नालंदा महाविहार को धन दिया था।
नरसिंहगुप्त बालादित्य	495-530 ई.	इसने हूण नरेश मिहिरकुल को पराजित किया। अपनी माता महादेवी चंद्रदेवी के कहने पर इसने मिहिरकुल को मुक्त कर दिया।
कुमारगुप्त तृतीय	530-540 ई.	
विष्णुगुप्त	540-550 ई.	

- गुप्तवंश ने लगभग 275-550 ई. तक शासन किया।
- समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, कुमारगुप्त के विलसड स्तंभ लेख तथा स्कन्दगुप्त के भीतरी स्तंभ लेख के अनुसार गुप्त वंश की स्थापना श्रीगुप्त द्वारा की गई थी।
- गुप्तों का प्रारम्भिक राज्य पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में था।
- गुप्त साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक चन्द्रगुप्त प्रथम था। कुमार देवी से विवाह के उपलक्ष्य में इसने 'राजा - रानी' प्रकार की मुद्राएं चलवायी।
- समुद्रगुप्त को लिच्छवि दौहित्र (लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी का पुत्र होने के कारण) कहा गया।
- समुद्रगुप्त के लिए अभिलेखों में 'सर्वराजोच्छेन्' कहा गया है।
- समुद्रगुप्त ने 6 प्रकार के सिक्के जारी किए

(1) अश्वमेध प्रकार	(2) व्याघ्र हनन प्रकार
(3) धनुर्धारी प्रकार	(4) गरूड़ प्रकार
(5) परशु प्रकार तथा	(6) वीणा वादन प्रकार

- समुद्रगुप्त के संधिविग्रहिक, महादण्डनायक तथा कुमारामात्य हरिषेण द्वारा रचित 'प्रयाग प्रशस्ति' चम्पूशैली (गद्य-पद्य मिश्रित) में अशोक के स्तम्भ लेख पर उत्कीर्ण है।

RRB NTPC (Shift-III) Stage-II 17.06.20220

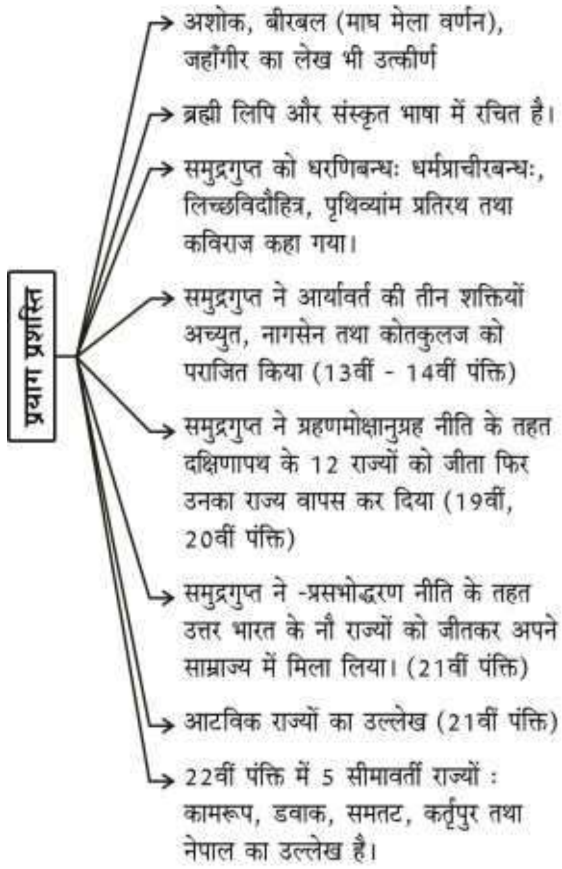

- समुद्रगुप्त ने विजयों के पश्चात् अश्वमेधयज्ञ किया तथा अश्वमेध प्रकार के सोने के सिक्के जारी किये।

समुद्रगुप्त के समकालीन दक्षिणापथ के 12 राज्य

राज्य		शासक
आवमुक्त	-	नीलराज
एरण्डपल्ल	-	दमन
कोशल	-	महेन्द्र
कौशल	-	मन्टराज
कोट्टूर	-	स्वामीदत्त
कांची	-	विष्णुगोप
कोस्थलपुर/कुस्तलपुर	-	धनञ्जय
देवराष्ट्र	-	कुबेर
महाकान्तार	-	व्याघ्रराज
पिष्टपुर	-	महेंद्रगिरि
पाल्लक	-	उग्रसेन
वेंगी	-	हस्तिवर्मा

❖ चन्द्रगुप्त द्वितीय

- चन्द्रगुप्त द्वितीय की माता दत्तदेवी तथा पिता समुद्रगुप्त थे।
- इसने शकों पर विजय के उपलक्ष्य में 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण किया।
- दिल्ली स्थित मेहरौली के लौह स्तम्भ पर वर्णित 'चंद्र' नामक राजा की पहचान चन्द्रगुप्त द्वितीय से की जाती है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय रजत सिक्के जारी करने वाला प्रथम गुप्त शासक था। **UPSI - 1999**
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार के नवरत्न **UPSSSC PRT 16.10.2022 (Shift-II)**

(1) कालिदास	-	संस्कृत कवि और लेखक
(2) धनवन्तरि	-	चिकित्सक
(3) शंकु	-	वास्तुकार
(4) वाराहमिहिर	-	खगोलविज्ञानी एवं ज्योतिषी
(5) घटकर्पर	-	कूटनीतिज्ञ
(6) बेताल भट्ट	-	जादूगर
(7) अमरसिंह	-	कोषकार
(8) क्षपणक	-	फलित ज्योतिषी
(9) वररूचि	-	वैयाकरण

> फाह्यान के यात्रा वृतान्त का नाम फो-क्यो-की है।
> ह्वेनसांग के यात्रा वृतान्त का नाम सी-यू-की है।
> चीनी यात्री सुंग युन ने 518 ई. से 521 ई. तक भारत की यात्रा की।

- चन्द्रगुप्त द्वितीय की पत्नी कुबेरनागा से प्रभावती गुप्ता नामक पुत्री का जन्म हुआ। प्रभावती गुप्ता का विवाह वाकाटक शासक रुद्रसेन द्वितीय से हुआ। प्रभावती गुप्ता के दो पुत्र दिवाकर सेन और दामोदर सेन थे। **SSC CHSL 13.04.2021 (Shift-III)**
- प्रभावती गुप्ता ने रूद्रसेन द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् 20 वर्षों (390-410 ई.) तक अपने अवयस्क पुत्रों की ओर से प्रतिशासक के रूप में शासन किया। **UDA/LDA 29.11.2015**
- प्रभावती गुप्ता ने पूना ताम्रपत्र में अपनी माता को नागकुल संभूता (नागकुल में जन्मीं) कहा है।
- तालगुण्डा अभिलेख के अनुसार कदंब शासक काकुत्सवर्मन द्वारा अपनी पुत्री का विवाह गुप्त राजकुमार से किया गया।
- वाकाटक शासक प्रवरसेन प्रथम ने चार अश्वमेध यज्ञ किया था।

❖ कुमार गुप्त प्रथम

- इसके पिता चन्द्रगुप्त II तथा माता ध्रुवदेवी थी।
- इसकी मुद्राओं में गरूड़ के स्थान पर 'मयूर' आकृति अंकित की गई।
- कुमारगुप्त कालीन ताम्रपत्र बंगाल के तीन स्थानों से प्राप्त हुए हैं-
  (1) धनदैह ताम्रपत्र (राजशाही, बांग्लादेश)
  (2) बैग्राम ताम्रपत्र (बोगरा, बांग्लादेश)
  (3) दामोदर ताम्रपत्र (दीनाजपुर, बांग्लादेश)
- दामोदर ताम्रपत्र लेख में भूमि बिक्री सम्बन्धी विवरण दिया गया है।

> **मंदसौर (दशपुर) अभिलेख**
> UPPCS RO/ARO (Mains) 2021
> इस अभिलेख की रचना वत्सभट्टि ने की थी।
> इसमें कुमारगुप्त के राज्यपाल बंधुवर्मा का उल्लेख मिलता है।
> इसमें सूर्यमंदिर निर्माण का भी उल्लेख मिलता है।
> यहाँ से प्राप्त लेख में पट्टवाय श्रेणी (रेशम बुनकरों की समिति) का उल्लेख मिलता है। **UP UDA/LDA Spl. 2006**

❖ कुमारगुप्तकालीन अभिलेख

- मन्दसौर अभिलेख (वत्सभट्टि द्वारा रचित) (प्राचीन मालवा, म.प्र.)
- गढ़वा अभिलेख (प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में)
- करमदण्डा अभिलेख (फैजाबाद, उत्तर प्रदेश)
- बिलसढ़ अभिलेख (एटा, उत्तर प्रदेश)
- मनकुँवर अभिलेख (प्रयागराज, उत्तर प्रदेश)
- तुमैन अभिलेख (ग्वालियर, मध्यप्रदेश)

❖ स्कन्दगुप्त

- स्कन्दगुप्त के पिता का नाम कुमारगुप्त प्रथम तथा माता का नाम देवकी था।
- हूण नेता खुशेनबाज के नेतृत्व में हूणों ने स्कन्दगुप्त के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण किया।
- स्कन्दगुप्त ने हूणों को अंतिम रूप से पराजित किया। इसी परिप्रेक्ष्य में उसे गुप्तवंश का एक मात्र वीर (गुप्त वंशैक वीर) की उपाधि दी गई।

स्कन्दगुप्त से सम्बन्धित प्रमुख अभिलेख

जूनागढ़ अभिलेख - इसमें स्कन्दगुप्त के सौराष्ट्र के गोप्ता **(सौराष्ट्र, गुजरात)** पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित (गिरनार के पुरपति) द्वारा सुदर्शन झील के जीर्णोद्धार का वर्णन है।

- **भीतरी स्तंभ लेख** - **(गाजीपुर, उत्तर प्रदेश)** पुष्यमित्रों और हूणों के साथ हुए स्कन्दगुप्त के युद्ध का वर्णन है। **UPSI Batch-3 22.12.2017**
- **सूपिया अभिलेख** - **(रीवां, मध्यप्रदेश)** गुप्तवंश का प्रथम शासक घटोत्कच को माना गया।
- **गुप्त शासक भानुगुप्त का एरण (सागर जिला, मध्य प्रदेश) अभिलेख-**
  - इसमें सती प्रथा का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य है। **UPPSC Food Safety Inspector 2013**
  - इसमें भानुगुप्त के मित्र गोपराज की पत्नी द्वारा गोपराज की मृत्यु के बाद आत्मदाह किए जाने (सती प्रथा) का उल्लेख है।
  - 510 ई. में भानुगुप्त के इस लेख में भानुगुप्त को जगति प्रवीरो (संसार का सर्वश्रेष्ठ वीर) कहा गया है।

प्रशासनिक इकाई		प्रमुख
भुक्ति/भोग (प्रांत)	-	उपरिक/भोगपति
विषय (जिला)	-	विषयपति
वीथि (ग्रामों का समूह)	-	वीथिमहत्तर
ग्राम (गाँव)	-	ग्रामिक

- गुप्तकाल में कुल्यावाप, द्रोणवाप तथा अधवाप भूमि माप की इकाईयां थी।
- गुप्तकाल में भूमिकर को भाग या उद्रंग कहा जाता था। कर अदायगी हिरण्य (नकद) अथवा मेय (अन्न) के रूप में की जा सकती थी।
- स्थायी रैयतों से वसूले जाने वाला कर को 'उद्रंग', धार्मिक कर को 'बलि' तथा बेगार को 'विष्टि' कहा जाता था। सिंचाई कर को विदकभागम या उदकभाग कहा गया है।
- स्वर्ण सिक्के को 'दीनार', चाँदी के सिक्के को 'रूपक' तथा ताँबे के सिक्कों को 'माषक' कहा जाता था। फाह्यान के अनुसार, दैनिक क्रय-विक्रय में लोग कौड़ियों का प्रयोग करते थे।

UPPCS RO/ARO (Mains) 2017

- वैष्णव और शैव नामक हिन्दू धर्म के दो महत्वपूर्ण संप्रदायों का विकास गुप्त काल में ही हुआ। उस युग में वैष्णव संप्रदाय को राजकीय संरक्षण प्रदान किया गया था।
- भारत में मंदिर निर्माण कला का आरंभ गुप्तकाल में हुआ।

मंदिर	अवस्थिति	विशेषता
(1) देवगढ़ का दशावतार मन्दिर	ललितपुर, उ.प्र.	चारों दिशाओं में चार मंडप है, मंदिर निर्माण में शिखर का प्रथम उदाहरण प्राप्त होता है
(2) भूमरा का मन्दिर	नागोद, मध्य प्रदेश	त्रिनेत्र का अंकन किया गया है।
(3) नचनाकुठार का पार्वती मन्दिर	पन्ना, मध्य प्रदेश	-
(4) तिगवां का विष्णु मन्दिर	जबलपुर, मध्य प्रदेश	-
(5) भीतरगांव का कृष्ण मन्दिर	कानपुर, उ.प्र.	ईंट द्वारा निर्मित मन्दिर का पहला उदाहरण है।
(6) सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर	छत्तीसगढ़	रा निर्मित मन्दिर है।

- महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित अजंता की गुफा संख्या 16, 17 एवं 19 गुप्तकालीन हैं।
- अजंता में गुफाओं की कुल संख्या 29 है।
- मध्य प्रदेश के धार जिले में बाघ की गुफाएं स्थित हैं।
- त्रिमूर्ति के अंतर्गत ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की पूजा गुप्तकाल में ही शुरू हुयी।
- गुप्तकाल में शैव, पाशुपत, कपालिक, कालामुख जैसे सम्प्रदायों का विकास हुआ।

आर्यभट्ट द्वारा पाई ( ) का मान लगभग 3.1416 बताया गया। आर्यभट्ट द्वारा सर्वप्रथम बताया गया कि पृथ्वी अपनी धूरी पर घूमते हुए सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है।

साहित्य एवं ग्रन्थ

	लेखक	-	ग्रन्थ
(1)	आर्यभट्ट	-	आर्यभट्टीयम् आर्याष्टाशतक दशगीतिक सूत्र सूर्य सिद्धांत
(2)	भास्कराचार्य (भास्कर II)	-	सिद्धांत शिरोमणि (इसके चार भाग हैं : बीजगणित, गृहगणिताध्याय,गोलाध्याय, लीलावती)
(3)	वराहमिहिर	-	पंचसिद्धांतिका
		-	वृहत संहिता
		-	बृहज्जातक
		-	योगमाया
(4)	ब्रह्मगुप्त	-	ब्रह्म सिद्धांत
		-	खण्डखाद्य
(5)	विष्णुशर्मा	-	पंचतंत्र
(6)	भर्तृहरि	-	नीतिशतक
		-	श्रृंगारशतक
		-	वैराग्य शतक
(7)	सुबन्धु	-	वासवदत्ता
(8)	अमरसिंह	-	अमरकोश (नामलिङ्.गानुशासनम्)
(9)	चण्ड	-	प्राकृत लक्षण
(10)	वररूचि	-	प्राकृत प्रकाश
(11)	कालिदास	-	कुमार संभव (महाकाव्य)
		-	रघुवंश (महाकाव्य)
		-	ऋतुसंहार (खण्डकाव्य)
		-	मेघदूत (खण्डकाव्य)
		-	अभिज्ञान शाकुंतलम् (नाटक)
		-	विक्रमोर्वशीयम् (नाटक)
		-	मालविकाग्निमित्रम (नाटक)
(12)	विशाखदत्त	-	मुद्राराक्षस
		-	देवीचंद्रगुप्तम्
(13)	शूद्रक	-	मृच्छकटिकम

कालिदास की प्रथम रचना 'ऋतुसंहार' है।

'कविकुल चूड़ामणि' कालिदास की उपाधि है।

प्रथम भारतीय साहित्य जिसका यूरोपीय भाषा में सर विलियम जोन्स द्वारा 1789 ई. में अनुवाद किया गया 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' है।

ईसा पूर्व दूसरी सदी में किसी अज्ञात भारतीय द्वारा 'शून्य' का आविष्कार किया गया।

'ग्वालियर अभिलेख' से शून्य का प्राचीनतम् अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होता है।

❖ प्रमुख अधिकारी

- सन्धिविग्रहिक - युद्ध एवं शान्तिमंत्री
- महाबलाधिकृत - सेनापति
- महादण्डनायक - न्यायाधीश
- सार्थवाह - व्यापारिक कारवाँ का प्रमुख
- अग्रहारिक - दान विभाग का प्रमुख
- पुस्तपाल - भूमि का लेखा-जोखा रखने वाला
- अक्षपटलाधिकृत - राजकीय पत्रों का रिकॉर्ड रखने वाला अधिकारी
- महाक्षपटलिक - आय-व्यय का लेखा-जोखा रखने वाला अधिकारी
- कुमारामात्य - उच्च अधिकारियों का समूह
- पुरपाल - नगर का प्रधान
- दण्डपाशिक - सर्वोच्च पुलिस अधिकारी
- महाप्रतिहार/कंचुकी - अंतःपुर का अधिकारी

वर्द्धन वंश

❖ थानेश्वर का पुष्यभूति या वर्द्धन वंश

शासक	शासनकाल	विशेष
पुष्यभूति	लगभग 500 ई.	वर्द्धन वंश का संस्थापक
नरवर्द्धन	500-525 ई.	बांसखेड़ा व मधुवन लेख के अनुसार इस वंश का प्रथम शासक था।
राज्यवर्द्धन I	525-555 ई.	
आदित्यवर्द्धन	555-580 ई.	मगध के राजा दामोदर गुप्ता की पुत्री से विवाह किया था।
प्रभाकरवर्द्धन	580-605 ई.	यशोमती (हर्ष की माँ) इसकी प्रधान रानी थी।
राज्यवर्द्धन II	605-606 ई.	गौड़ नरेश शशांक ने इसकी हत्या कर दी।
हर्षवर्द्धन	606-647 ई.	हर्ष ने प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानंद नामक संस्कृत के तीन नाटक लिखे।

- हर्षवर्द्धन के पिता प्रभाकर वर्द्धन ने 'परमभट्टारक' एवं 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की थी।
- प्रभाकर वर्द्धन की प्रधान रानी यशोमती से-राज्यवर्द्धन-II, हर्ष वर्द्धन तथा एक पुत्री राज्यश्री का जन्म हुआ।
- राज्यश्री का विवाह, कन्नौज के मौखरि शासक 'ग्रहवर्मा' के साथ हुआ था। ग्रहवर्मा की हत्या मालवा के शासक देवगुप्त ने की थी। (अभिलेखीय पहचान 'देवगुप्त' के रूप में)
- प्रभाकर वर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् राज्यवर्द्धन II (जो संन्यास ग्रहण करना चाहता था) सिंहासनारूढ़ हुआ । राज्यवर्द्धन II ने मालवा के शासक -'देवगुप्त' को मार डाला।
- प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु के बाद यशोमती 'सती' हो गई।
- राज्यवर्द्धन II की हत्या गौड़ शासक शशांक ने की।
- राज्यवर्द्धन II की मृत्यु के पश्चात् हर्षवर्द्धन शासक हुआ।

हर्षवर्द्धन

जन्म	पिता	माता	उपनाम	सिंहासनारोहण	मंत्री	उपाधि
590 ई.	प्रभाकर वर्द्धन	यशोमती	शिलादित्य	16वर्ष की आयु में	ममेरा भाई भाण्डी	सकलोत्तरपथनाथ, माहेश्वर, मगधराज, भारतीय हातिम

- हर्षवर्द्धन, बौद्ध भिक्षु 'दिवाकर मित्र' की सहायता से विन्ध्याचल के जंगलों से अपनी विधवा बहन को खोजा।
- शशांक की मृत्यु के पश्चात् कामरूप के शासक भास्करवर्मन् की सहायता से हर्ष ने मगध और गौंड को जीत लिया।
- हर्ष ने अपनी राजधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थानान्तरित की। कन्नौज को 'महोदया'या 'महोदयाश्री' नाम दिया गया है। **UPSSSC PET 16.10.2022 (Shift-I)**
- जयभट्ट के नौसारी दानपत्र के अनुसार, हर्ष ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित किया तत्पश्चात् ध्रुवसेन को उसका राज्य लौटाकर अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दिया।
- ऐहोल अभिलेख के अनुसार, 618 ई. में नर्मदा नदी के तट पर हर्ष और वातापी के चालुक्य शासक पुलकेशिन II के मध्य लड़े गये युद्ध में पुलकेशिन II विजयी रहा।
- हर्ष वर्द्धन के शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेन सांग भारत आया था। **SSC CGL (Tier-I) 17.07.2023 (Shift-III)**
- हर्ष प्रारम्भ में शैव था। किन्तु दिवाकर मित्र और ह्वेनसांग के प्रभाव में बौद्ध मतानुयायी हो गया। उसने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को राज्याश्रय प्रदान किया।
- ह्वेनसांग ने हर्षकाल में कन्नौज तथा प्रयाग में आयोजित धर्म सभाओं का वर्णन किया है। कन्नौज सभा की अध्यक्षता ह्वेनसांग ने की थी।
- प्रयाग के संगम क्षेत्र में हर्ष प्रत्येक पाँचवें वर्ष 'महामोक्ष परिषद्' (धार्मिक अनुष्ठान परिषद्) का आयोजन करता था। ह्वेनसांग छठे समारोह में उपस्थित था।

❖ ह्वेनसांग

यात्रा विवरण : सि-यू-की नामक ग्रन्थ में

चीन से प्रस्थान : 629 ई. में तांग शासकों की राजधानी चंगन से

भारत आगमन : 630 ई. में हिन्दूकुश पहाड़ियों को पार कर भारतीय राज्य कपिशा पहुँचा।

शिक्षा प्राप्त की : थानेश्वर में बौद्ध विद्वान जयगुप्त से
: नालन्दा में डेढ़ वर्ष तक योगशास्त्र की (उस समय नालन्दा विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य शीलभद्र थे।)

उपाधि : यात्रियों का राजकुमार, वर्तमान शाक्यमुनि

हर्ष की राजधानी कन्नौज में आगमन : 636 ई. में
(i) ह्वेनसांग ने सिंध और मतिपुर के राजाओं को शूद्र बताया है।
(ii) हर्ष को 'फीसे' या 'वैश्य जाति' का बताया है।
स्वदेश जाने हेतु विदाई ली : हर्ष से प्रयाग में
ह्वेनसांग की वापसी : जालन्धर से, सिन्ध नदी पार करके, पामीर, खोतान होता हुआ चीन गया।
यात्रा काल : 629-645 ई.

- नालन्दा विश्वविद्यालय को हर्ष ने सौ ग्रामों की आय प्रदान की थी।

मौखरि, गुप्तों के सामंत थे, उनकी राजधानी कन्नौज थी। इस वंश के प्रमुख शासकों का क्रम है- हरि वर्मा आदित्य वर्मा ईशानवर्मा सर्ववर्मा अवन्तिवर्मा ग्रहवर्मा (600-605 ई.)

❖ प्रशासन

इकाई	आशय	प्रशासन
केन्द्र	-	सम्राट
भुक्ति	प्रान्त	राजस्थानीय (बड़ी भुक्ति) उपरिक (छोटी भुक्ति)
विषय	जिला	विषयपति
पाठक	तहसील	
ग्राम	-	महत्तर या ग्रामिक

❖ साहित्य

हर्ष →
- नागानंद (बौद्ध धर्म से सम्बन्धित)
- रत्नावली (वत्सराज उदयन और उसकी रानी वासवदत्ता की परिचारिका सागरिका की प्रणय कथा।)
- प्रियदर्शिका (वत्सराज उदयन तथा प्रियदर्शिका की प्रणय कथा)

हर्ष के दरबारी कवि बाण की रचनाएँ →
- हर्षचरित
- कादम्बरी

RRB NTPC 08.02.2021 (Shift-II) Stage-I
SSC CGL (Tier-I) - 2019

मयूर सूर्यशतक

बाण द्वारा -
हर्षचरित में तुलायंत्र (रहट) का सिंचाई के साधन में प्रयोग का उल्लेख
उज्जयिनी निवासियों को कोट्याधीश (करोड़पति) के रूप में उल्लेख
थानेश्वर नगरी व्यापारियों हेतु 'लाल भूमि' तथा अतिथियों हेतु 'चिंतामणि भूमि' के रूप में उल्लिखित है।

- वाक्पति एवं भवभूति कन्नौज के शासक यशोवर्मन (700-740 ई.) के दरबार में रहते थे।
- वाक्पति ने गौडवाहों की रचना की
- भवभूति ने तीन नाटक ग्रंथों-मालती माधव, उत्तररामचरित, महावीर चरित की रचना की।
- बांसखेड़ा तथा मधुवन अभिलेख से हर्ष द्वारा ग्राम दान दिए जाने का उल्लेख प्राप्त होता है।

प्रमुख शब्दावली
- चीनांशुक : कुलीन समाज में प्रचलित वस्त्र था।
- यम चेटि : रात में पहरा देने वाली औरतें
- प्रमातार : भूमि पर्यवेक्षण का मुख्य अधिकारी
- तारिक : नदी घाट पर कर वसूलने वाला अधिकारी
- शौल्किक : चुंगी वसूलने वाला अधिकारी
- हट्टमति : बाजार में बिकने वाली वस्तुओं पर कर वसूलने वाला अधिकारी
- खिल : बंजर भूमि
- अप्रदा : न रहने योग्य भूमि
- अप्रहता : खेती न करने योग्य भूमि

चालुक्य वंश

- दक्कन में वाकाटकों के पश्चात् बादामी या वातापी (बीजापुर जिला) के चालुक्य सत्ता में आए।
- इनकी एक शाखा वेंगी अथवा पिष्टपुर के पूर्वी चालुक्य थे तथा दूसरी शाखा कल्याणी के चालुक्य थे, जिन्हें बाद में पश्चिमी चालुक्य कहा गया।

- बादामी के चालुक्य (प्रारम्भिक पश्चिमी चालुक्य) →
  - पूर्वी चालुक्य (वेंगी के चालुक्य)
  - पश्चिमी चालुक्य (कल्याणी के चालुक्य)

❖ बादामी के चालुक्य की वंशावली

जयसिंह रण राग पुलकेशिन प्रथम (550-566 ई.) कीर्तिवर्मन प्रथम (566-597 ई.)	कीर्तिवर्मन द्वितीय (746-757 ई.) **वेंगी के चालुक्य** विष्णुवर्धन प्रथम (615-633 ई.) जयसिंह प्रथम (633-663 ई.)	विष्णुवर्धन चतुर्थ (764-799 ई.) विजयादित्य द्वितीय (799-847 ई.) विष्णुवर्धन पंचम (847-848 ई.) विजयादित्य तृतीय

मंगलेश (597-609 ई.)	इन्द्रवर्मन (663 ई.)	(848-892 ई.)
पुलकेशिन द्वितीय (609-642 ई.)	विष्णुवर्धन द्वितीय (663-672 ई.)	भीम प्रथम (892-921 ई.)
विक्रमादित्य प्रथम (655-681 ई.)	सर्वलोकाश्रय (672-696 ई.)	भीम द्वितीय (935-946 ई.)
विनयादित्य (681-696 ई.)	जयसिंह द्वितीय (696-709 ई.)	शक्तिवर्मन प्रथम (999ई.)
विजयादित्य (696-733 ई.)	कोकुल विक्रमादित्य (709 ई.)	**कल्याणी के प्रमुख चालुक्य शासक**
विक्रमादित्य द्वितीय (733-746 ई.)	विष्णुवर्धन तृतीय (709-746 ई.)	तैल द्वितीय (973-997ई.)
	विजयादित्य प्रथम (746-764 ई.)	सत्याश्रय (997-1008ई.)
		जयसिंह द्वितीय (1015-1043ई.)
		सोमेश्वर प्रथम (1043-1068ई.)
		सोमेश्वर चतुर्थ (1181-1189ई.)

❖ बादामी के चालुक्य

- महाकूट अभिलेख (602 ई.) के अनुसार, बादामी में चालुक्य वंश की स्थापना जयसिंह द्वारा की गई थी।
- पुलकेशिन प्रथम इस वंश का वास्तविक संस्थापक था। इसने वातापी (बादामी) के किले का निर्माण करवाया तथा बादामी को अपनी राजधानी बनाया।
- मालप्रभा नदी के तट पर स्थित पट्टदकल, चालुक्य वंश की पूर्व राजधानियों बादामी तथा ऐहोल के पश्चात् तीसरी राजधानी थी।
- कीतिवर्मन प्रथम ने कदम्ब, कोंकण, नल आदि शासकों को पराजित किया।
- कोंकण विजय के फलस्वरूप चालुक्यों को गोवा (रेवती द्वीप) प्राप्त हुआ।
- कीर्तिवर्मन प्रथम ने पृथ्वी बल्लभ, बल्लभ, सत्याश्रय, कीर्तिराज की उपाधि धारण की।

❖ पुलकेशिन द्वितीय

- रविकीर्ति के ऐहोल प्रशस्ति (634 ई.) के अनुसार, कीर्तिवर्मन के पुत्र पुलकेशिन द्वितीय ने अपने चाचा मंगलेश की हत्या कर चालुक्य राज्य प्राप्त किया।
- उसने दक्षिण में कदम्बों को, मैसूर के गंग और आलूप शासकों को, कोंकण के मौर्य शासकों को, उत्तर में लाट, मालव और गुर्जर शासकों को, पूर्व में कलिंगों को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।
- पुलकेशिन द्वितीय और हर्षवर्धन के मध्य नर्मदा तट पर युद्ध (630-634 ई. के मध्य) हुआ, जिसमें संभवतः पुलकेशिन द्वितीय विजयी रहा और परमेश्वर की उपाधि धारण की।
- पुलकेशिन द्वितीय के समय चालुक्यों और पल्लवों के मध्य संघर्ष प्रारम्भ हुआ। इसने पल्लव शासक महेन्द्रवर्मन प्रथम को पराजित किया।
- महेन्द्रवर्मन के पुत्र नरसिंह वर्मन प्रथम ने पुलकेशिन द्वितीय को युद्ध में मार कर, बादामी पर अधिकार कर लिया तथा 'वातापी कोंड' की उपाधि धारण की।
- पुलकेशिन द्वितीय ने फारस के शासक खुसरों परवेज के दरबार में दूत भेजा था।
- कीर्तिवर्मन द्वितीय बादामी के चालुक्यों का अंतिम शासक था। राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने बचे हुए भाग को छीनकर बादामी के चालुक्यों के राज्य को समाप्त कर दिया।

❖ वेंगी के चालुक्य

- इस वंश का संस्थापक पुलकेशिन द्वितीय का भाई विष्णुवर्धन प्रथम था ।
- इस वंश की पहली राजधानी पिष्टपुर थी, उसके बाद वेंगी बनी, अंत में राज महेन्द्री हुयी।

❖ कल्याणी के चालुक्य

- राष्ट्रकूट शासक कर्क को उसके सामंत तैल द्वितीय ने परास्त कर इस वंश की स्थापना की।
- तैल द्वितीय ने मान्यखेत को अपनी राजधानी बनाया।
- सोमेश्वर प्रथम ने राजधानी मान्यखेत से विस्थापित कर 'कल्याणी' में स्थापित किया।
- विज्ञानेश्वर ('मिताक्षरा' के लेखक) चालुक्य शासक विक्रमादित्य षष्ठ का मंत्री था।
- विल्हण कृत -'विक्रमांकदेवचरित' में विक्रमादित्य षष्ठ की उपलब्धियों का वर्णन है।
- सोमेश्वर चतुर्थ इस वंश का अंतिम शासक था।

पल्लव वंश

- सातवाहन वंश के पतन के पश्चात् तीसरी सदी ई. में उनके राज्य के दक्षिण पूर्वी भाग पर पल्लवों ने अधिकार कर लिया तथा कांची को अपनी राजधानी बनाया।
- ऐसा माना जाता है कि सिंहवर्मा (280-335 ई.) इस वंश का संस्थापक (कुछ इतिहासकार बप्पदेव को संस्थापक मानते हैं) था। 'प्रयाग प्रशस्ति' के अनुसार समुद्रगुप्त के समय कांची का पल्लव शासक विष्णुगोप था।
- पल्लव वंश का उत्थान छठी सदी के अन्तिम चरण में सिंहविष्णु के समय हुआ।

❖ महत्वपूर्ण पल्लव शासक

शासक	महत्वपूर्ण तथ्य
सिंहविष्णु (575-600ई.)	विष्णु का उपासक था और अवनिसिंह (पृथ्वी का शेर) की उपाधि धारण की थी। संस्कृत के विद्वान **भारवि** (किरातार्जुनीयम के लेखक) उसके दरबार में थे। इसी के काल में मामल्लपुरम् के वाराह मन्दिर का निर्माण किया गया।
महेन्द्रवर्मन् प्रथम (600-630 ई.)	यह चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय तथा हर्षवर्धन का समकालीन था। पुलकेशिन द्वितीय ने पल्लव राज्य पर आक्रमण कर इससे 'वेंगी' को छीन लिया। वह प्रारम्भ में जैन मतावलंबी था किन्तु बाद में अप्पर के प्रभाव में शैव बन गया। इसी के काल में ठोस चट्टानों को काटकर एकाश्म मंदिर निर्माण की शुरूआत हुयी। पल्लव वास्तु का प्रारंभ महेन्द्रवर्मन प्रथम के समय से हुआ। वह स्वयं कवि और गायक था। उसने 'मत्त विलास-प्रहसन' तथा 'भगवदज्जुकीयम्' नामक नाटक संस्कृत भाषा में लिखा।
नरसिंहवर्मन् प्रथम (630-668 ई.)	नरसिंहवर्मन् प्रथम ने चालुक्य राज्य पर आक्रमण (642ई.) कर उसकी राजधानी बादामी (वातापी) पर अधिकार कर लिया, इस युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय मारा गया। इस विजय के उपलक्ष्य में नरसिंहवर्मन् प्रथम ने 'वातापीकोंड' तथा 'महामल्ल' की उपाधि धारण की और बादामी के मल्लिकार्जुन मन्दिर में अपना विजय स्तम्भ उत्कीर्ण करवाया। इसने महाबलिपुरम (मामल्लपुरम्) नामक नगर की स्थापना की । द्रविड़ वास्तु रचना इसके नाम पर मामल्ल शैली के नाम से जानी गई, जिसमें दो प्रकार के मन्दिर 'मंडप' और 'रथ'आते हैं। मामल्ल शैली के रथ एकाश्मक मन्दिर हैं; जो सप्त पैगोड़ा (द्रौपदी रथ, (सबसे छोटा), अर्जुन रथ, धर्मराज रथ, भीम रथ, नकुल-सहदेव रथ, गणेश रथ, पिंडारि रथ तथा वलेयकुट्टे रथ) के नाम से जाने जाते है। 641 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग इसी के काल में कांची गया था। नरसिंह वर्मन प्रथम अपने समर्थक सिंहल राजकुमार मानवर्मन् की सहायता हेतु लंका पर दो बार आक्रमण कर उसे सिंहासन पर बैठाया।
महेन्द्रवर्मन् द्वितीय (668-670 ई.)	नरसिंहवर्मन् प्रथम का पुत्र था। चालुक्य शासक विक्रमादित्य प्रथम द्वारा मारा गया।
परमेश्वरवर्मन् प्रथम (670-695ई.)	चालुक्य शासक विक्रमादित्य प्रथम ने काँची पर आक्रमण किया, जिसमें संभवतः परमेश्वरवर्मन् प्रथम विजयी रहा। इसने मामल्लपुरम् में गणेश मन्दिर का निर्माण कराया।
नरसिंहवर्मन-द्वितीय (695-720ई.)	इसने वाद्यविद्याधर घाघर, वीणा नारद, अंतोदय-तुम्बरू की उपाधि धारण की। इसका उपनाम 'राजसिंह' था। इसने मन्दिर निर्माण में एक नई शैली 'राजसिंह शैली' का प्रयोग किया इसने कांची के कैलाशनाथ मन्दिर (राजसिंहेश्वर मन्दिर), महाबलीपुरम के तटीय मन्दिर तथा ऐरावतेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया। कैलाशनाथ मन्दिर में शिव की दक्षिणामूर्ति प्रकार की प्रतिमा स्थापित है। संस्कृत के विद्वान दण्डिन (दशकुमार चरित के लेखक) इसकी राजसभा में रहते थे। चीनी बौद्ध यात्रियों के लिए 'नागपट्टिनम' में एक विहार (चीनी पैगोड़ा) बनवाया।
महेन्द्रवर्मन तृतीय तथा परमेश्वर वर्मन द्वितीय (720-731 ई.)	उसने एक दूतमंडल चीन भेजा था। महेन्द्रवर्मन तृतीय की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई परमेश्वरवर्मन द्वितीय गद्दी पर बैठा। चालुक्य शासक विक्रमादित्य II कांची पर आक्रमण कर परमेश्वर द्वितीय की हत्या कर दी।

- नंदिवर्मन द्वितीय (731-795 ई.), पल्लव वंश की उपशाखा से सम्बन्धित हिरण्यवर्मन का पुत्र था, गद्दी पर बैठा।
- नंदिवर्मन द्वितीय के पश्चात् कांची की गद्दी पर क्रमशः दंतिवर्मन (795-845ई.), नंदिवर्मन तृतीय (845-866ई.), नृपतुंग वर्मन (866-899ई.)
- इस वंश के अंतिम शासक अपराजितवर्मन को चोल शासक आदित्य प्रथम ने लगभग 903 ई. में पराजित कर मार डाला।

दक्षिण भारत

चोल वंश —
- संस्थापक : विजयालय
- उत्पत्ति का उल्लेख : राजेन्द्र प्रथम के तिरुवालंगाडु और करैण्डै दानपत्र में
- राजधानी : तंजावुर (बाद में गंगैकोण्ड चोलपुरम्)
- ये पल्लवों के सामंत थे।

प्रमुख चोल शासक	
विजयालय (850-871 ई.)	उपाधि : तंजैकोण्ड एवं नरकेसरी चोल वंश का संस्थापक था इसके तंजौर विजय का उल्लेख 'तिरूनेडुंगलम्' अभिलेख में हुआ है।
आदित्य I (871-907 ई.)	उपाधि : कोदण्डराम अपने स्वामी पल्लव शासक अपराजित वर्मन की हत्या कर तोण्डमण्डलम पर अधिकार कर लिया पाण्ड्यों से कोंगू प्रदेश को छीन लिया।
परान्तक I (907-955 ई.)	**उपाधि** : मदुरैकोण्ड (पाण्ड्य राजधानी मदुरै पर अधिकार के उपलक्ष्य में) सम्बन्धित अभिलेख : उत्तरमेरूर अभिलेख (चोल ग्राम प्रशासन का वर्णन) इसने पल्लवों का पूर्ण उन्मूलन कर दिया। परान्तक I के पुत्र राजादित्य और राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय के मध्य तक्कोलम का युद्ध (949 ई.) हुआ, जिसमें राजादित्य पराजित हुआ (राष्ट्रकूटों का तोण्डमण्डलम पर अधिकार हो गया।) यह दक्षिण भारत में यह चोलों का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
परान्तक II (956-973 ई.)	**उपाधि** : सुन्दरचोल राष्ट्रकूटों से तोण्डमण्डलम जीत लिया।
राजराज I (985-1014 ई.)	**उपाधि** : चोल मार्तण्ड, चोल नारायण, राजमार्तण्ड, राज्याश्रय, चोलेन्द्र सिंह, शिवपाद शेखर, मण्डलूर शालैकलमरुत इसका प्रारम्भिक नाम अरूमोलिवर्मन था। राजधानी तंजावुर में बृहदीश्वर या राजराजेश्वर का शिवमंदिर बनवाया। पराजित किया : चेर राजा रविवर्मा को कण्डलूर में : पाण्ड्य राजा अमर भुजंग को पराजित कर मदुरा पर कब्जा किया। : सिंहल नरेश महिंद पंचम को : चेर, पाण्ड्य, सिंहल की संयुक्त सेनाओं को : कलिंग, वेंगी के पूर्वी चालुक्यों तथा पश्चिमी गंगों को भू-राजस्व निर्धारण के लिए अपने राज्य में भूमि सर्वेक्षण को प्रारम्भ किया उन्हें ''उलागलैण्ड पेरुमल'' (पृथ्वी को मापने वाला राजा) कहा जाता है। राजराज I ने स्थायी सेना और नौसेना का गठन किया। सिंहल (श्रीलंका) के उत्तरी भाग पर अधिकार कर इसका नाम 'मुण्डिचोलमण्डलम्' तथा राजधानी पोलन्नरूआ का नाम 'जननाथ मंगलम्' रखा। उसने अपनी नौसेना के द्वारा लक्षद्वीप और मालदीव पर अधिकार कर लिया। श्रीविजय के शैलेन्द्र शासक 'श्रीमार विजयोतुंग वर्मन' को नेगापट्टनम् में चूड़ामणि नामक बौद्ध विहार के निर्माण की अनुमति दी।
राजेन्द्र I (1014-1044 ई.)	**उपाधि** - पण्डितचोल (महान विद्याप्रेमी होने के कारण), गंगैकोण्ड, मुदीकोण्ड, कडारकोण्ड वर्ष 1017 ई. को वह सम्पूर्ण सिंहल द्वीप जीत लिया सिंहल शासक महिंद पंचम को बंदी बनाकर चोल राज्य में लाया। सिंहल विजय का उल्लेख 'करण्डै दानपत्र' में वर्णित है। चेर और पाण्ड्य राज्य को पराजित कर एक अलग राज्य बनाया। अपने पुत्र विक्रम चोल के नेतृत्व में एक सैन्य अभियान उत्तर पूर्वी भारत (गंगा घाटी) की विजय के लिए भेजा। 'पवित्र गंगा जल' लाने हेतु किए गए इस अभियान में पाल शासक महिपाल तथा पूर्वी गंग शासक पराजित हुए

	अभियान की सफलता पर राजेन्द्र I ने गंगैकोण्ड की उपाधि धारण की तथा 'गंगैकोण्ड चोलपुरम' नामक नई राजधानी बनवाया, राजधानी के निकट सिंचाई हेतु चोलगंगम् नामक तालाब का निर्माण करवाया। श्रीविजय (जावा) के शैलेन्द्र शासक संग्राम विजयोतुंग वर्मन को पराजित कर राजेन्द्र I ने बंदी बना लिया। गंगैकोण्ड चोलपुरम् में बृहदीश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।
राजाधिराज I (1044-1052 ई.)	**उपाधि** : वीर राजेन्द्र या विजय राजेन्द्र कृष्णा नदी के तट पर हुए 'पुण्डूर के युद्ध' में पश्चिमी चालुक्य शासक सोमेश्वर को पराजित किया। 'कोप्पम के युद्ध'(1052-54) में पश्चिमी चालुक्य शासक सोमेश्वर से युद्ध करते हुए मारा गया। इस युद्ध में राजाधिराज I के छोटे भाई राजेन्द्र II ने सोमेश्वर को पराजित कर युद्ध क्षेत्र में ही अपना अभिषेक किया। इस विजय की स्मृति में राजेन्द्र II ने कोल्हापुर में विजय स्तम्भ स्थापित किया। राजेन्द्र II की उपाधि प्रकेसरी थी।
वीर राजेन्द्र (1063-1069 ई.)	उपाधि - राजकेसरी पश्चिमी चालुक्य शासक सोमेश्वर को दो बार पराजित किया। सोमेश्वर ने तुंगभद्रा नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली। इस स्मृति में वीर राजेन्द्र ने तुंगभद्रा तट पर विजय स्तम्भ स्थापित किया।
कुलोतुंग I (1070-1120 ई.)	इसके शासन काल में 1077 ई. में 72 व्यापारियों का एक चोल दूतमण्डल चीन भेजा गया था। सिंहल (श्रीलंका) को पूर्ण स्वतंत्रता दी, तथा सिंहल राजकुमार वीरप्पेरूमाल के साथ अपनी पुत्री का विवाह किया। कुलोतुंग I, चालुक्य शासक राजराज का पुत्र था, उसकी माता राजेन्द्र चोल की पुत्री थी। कुलोतुंग I को 'शुगम तविर्त्त' (करों को हटाने वाला) की उपाधि मिली थी।
कुलोतुंग II (1133-1150 ई.)	यह शैव मतावलंबी था इसने चिदम्बरम नटराज मंदिर से गोविन्दराज (विष्णु) की मूर्ति को हटवा कर समुद्र में फेकवा दिया था। रामानुज ने इस मूर्ति को पुनः प्राप्त कर तिरूपति में प्रतिष्ठित किया, इसी कारण कुलोतुंग II, रामानुज को उत्पीड़ित किया एवं उन्हें अपने राज्य से बाहर निकाल दिया था।

- अंतिम चोल शासक राजेन्द्र III को पाण्ड्य शासक जटावर्मन सुन्दर पाण्ड्य ने अधीनस्थ बना लिया।
- राजेन्द्र III को पाण्ड्य शासक मारवर्मन कुलशेखर पराजित कर चोल सत्ता का पूर्णतः उन्मूलन कर दिया।
- **चोल प्रशासनिक इकाई**

  मण्डलम् प्रांत

  कोट्टम या वलनाडु आधुनिक कमिश्नरी की भाँति

  नाडु जिला

  कुर्रम् ग्राम संघ
- नाडु के खर्च के लिए लिया गया कर 'नाट्ट विनियोगम्' था।
- ग्राम प्रशासन की स्वायत्तता (उत्तरमेरूर से प्राप्त अभिलेख में) चोल प्रशासन की विशेषता थी। ग्राम प्रशासन से सम्बन्धित दो सभाओं उर (गाँव की आम सभा) तथा महासभा या सभा का उल्लेख प्राप्त होता है
- चोल काल में गाँवों की गतिविधियों की देखरेख हेतु स्थापित समितियों को 'वारियम्' कहा जाता है। वारियम् के सदस्यों को 'वारियपेरूमक्कल' कहा जाता था।

  पोन वारियम - स्वर्ण समिति
  एरि वारियम - तालाब समिति
  तोट्ट वारियम - उद्यान समिति
  उदासीन वारियम - विदेशियों की देख रेख हेतु समिति
  कोयिल्वारियम् - मंदिर के कार्यों की देख रेख हेतु समिति
  संवत्सर वारियम् - वार्षिक समिति जो विभिन्न समितियों के कार्यों की देख-रेख
  न्यायत्तार वारियम् - न्याय समिति
- चोल काल में बनी नटराज (शिव) की प्रतिमा को विश्व की श्रेष्ठतम प्रतिमा रचना माना जाता है।
- 'कलंजु/पोन' चोल काल का मानक स्वर्ण सिक्का था।
- फर्ग्युसन के कथनानुसार-चोल कलाकारों ने दैत्यों के समान कल्पना की और जौहरियों की तरह उसे पूरा किया।
- चोल मंदिर की ऊँची दीवारों और विशाल द्वारों वाला अहाता 'गोपुरम', कहलाता था।
- चोल मंदिरों के विशाल विमान उनकी विशेषता थे।
- वारियम् के सदस्यों को पारिश्रमिक नहीं दिया जाता था।
- ग्राम सभा के पास सार्वजनिक भूमि का स्वामित्त्व था।
- सामान्य गाँवों में ग्राम प्रशासन की संस्था 'उर' तथा अग्रहार या ब्रह्मदेय गाँवों में ब्राह्मणों की संस्था 'सभा' कहलाती थी। उर की कार्यकारिणी को 'आलुंगणम्' कहा जाता था।
- सभा को पुरूगुर्रि, इसके सदस्यों को 'पेरूमक्कल' कहा जाता था।
- व्यापारियों की सभा को 'नगरम्' कहा जाता था।
- राजकीय आय का मुख्य साधन 'भूमिकर' था। भूमिकर की वसूली ग्राम समितियों द्वारा की जाती थी।

- **चोल काल के प्रमुख कर**
  वेट्टि : सार्वजनिक कार्य हेतु बेगार
  ऐरिआयम : जलाशय कर
  पाडिकावल : ग्राम सुरक्षा कर
  मरमज्जाडि : उपयोगी वृक्षकर
  मनैइरै : गृहकर
  कढ़ैइरे : व्यापारिक प्रतिष्ठान पर कर
  मगम्मै : शिल्पकारों पर लगा कर
  कडमै : सुपाड़ी के बगान पर कर
  पेवरि : तेलघानी कर
  तट्टोलि : सुनारों से लिया गया कर
- **चोल सेना के अंग**
  राजा के विश्वसनीय अंगरक्षक : वलैक्कार
  गज सेना : कुंजिरमल्लर
  अश्वारोही सेना : कुदिरैच्चेवगर
  धनुर्धारी सेना : बिल्लिगल
  भाला चलाने वाली सेना : सैंगुन्दर
  पैदल सेना : बडपेर्र
- ब्राह्मणों को दान में दी गई भूमि को 'ब्रह्मदेय' तथा शिक्षण संस्थाओं को प्रदत्त भूमि 'शालाभोगम्' कहा जाता था।
- कुलोतुंग I का राजकवि जयगोन्दार था जिसने 'कलिंगत्तुपर्णि' नामक ग्रन्थ की रचना की। कुलोतुंग III के शासनकाल में कवि कंबन ने तमिल रामायण (रामावतारम्) की रचना की, जिसे तमिल साहित्य का महाकाव्य माना गया।
- चावल की खेती हेतु दो मुख्य मौसम 'कुड्डापाह कर' और 'संब पेषणम्' थे।
- चोलकाल में राजस्व विभाग 'वारिपोत' तथा उसका प्रधान 'वारिप्पोत्तगक्क' कहलाता था। उच्च अधिकारियों को 'पेरुन्दरम' कहा जाता था।

800 से 1200 ई. तक उत्तर भारत की राजनैतिक स्थिति

- हर्षवर्द्धन के पश्चात भारत फिर से राजनैतिक विखंडन की अवस्था में पहुंच गया था।
- इस काल में सामंतवाद का उदय, अर्थव्यवस्था में मंदी एवं सामाजिक व्यवस्था का पतन चालू हो गया था।
- भूमि अनुदान के अन्तर्गत प्रारंभ में ब्राम्हणों को कर चुकाने में छूट के साथ भूमि प्रदान की जाती थी।
- इस काल में कृषि के नवीन प्रकार की अर्थव्यवस्था का विकास हुआ।
- इस नवीन व्यवस्था के अंतर्गत खेती ऐसे बटाईदारों से करवाई जाने लगी, जो खेती तो करते थे परन्तु जमीन पर उनका कानूनी अधिकार नहीं था।
- इस काल में व्यापार एवं वाणिज्य का ह्रास हो गया था।

गुर्जर-प्रतिहार वंश

संस्थापक- नागभट्ट प्रथम,

राजधानी- भीनमाल,

गुर्जर जाति का सर्वप्रथम उल्लेख पुलकेशिन द्वितीय के ऐहौल अभिलेख में,

प्रतिहार राज्य को अलमसूदी ने 'अलजुर्ज' कहा है।

गुर्जरों के राज्य को ह्वेनसांग ने 'कु- चे-लो' तथा उनकी राजधानी को 'पि-लो-मो-ली' कहा है।

गुर्जर प्रतिहार राज्य को सुलेमान ने 'जीभ की आकृति' की तरह बताया है।

प्रतिहार वंश के शासकों एवं उनकी उपलब्धियों को जानने का स्रोत मिहिरभोज का ग्वालियर अभिलेख है।

- इस काल के असंख्य मंदिरों को देखा जा सकता है।
- इस काल में मंदिर निर्माण की 'नागर' शैली का विकास हुआ।
- इस काल में भक्ति संप्रदाय का विस्तार पूरे देश में फैल गया था।

त्रिपक्षीय संघर्ष

- उत्तर भारत का राजा बनने के लिए कन्नौज पर अधिकार करना सर्वाधिक आवश्यक था।
- कन्नौज नगर का महत्व आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण था
- गंगा एवं यमुना के दोआब में स्थित होने के कारण कन्नौज देश का सर्वाधिक उपजाऊ प्रदेश था।
- 8वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक भारत में पाल, गुर्जर-प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट तीन महाशक्तियाँ संघर्षरत थी।
- कन्नौज पर आधिपत्य जमाने के लिए ये तीनों शक्तियां 100 वर्ष तक आपस में संघर्षरत रहीं।
- त्रिकोणीय संघर्ष के दौरान कन्नौज के आस-पास के क्षेत्र को 'मध्य प्रदेश' कहा जाता था।
- कन्नौज पर आधिपत्य के प्रथम संघर्ष का उल्लेख ''राधनपुर लेख'' (808 ई.) में मिलता है।
- त्रिपक्षीय संघर्ष में गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट तथा पालों ने भाग लिया। **UP Lower, 2002**
- त्रिपक्षीय संघर्ष में अंतिम विजय गुर्जर-प्रतिहारों की हुई।

गुर्जर-प्रतिहार वंश के शासक

❖ नागभट्ट प्रथम (730-756 ई.)
- ग्वालियर अभिलेख में इसे म्लेच्छों का विनाशक कहा गया है।

❖ वत्सराज (783-795 ई.)
- यह प्रतिहार वंश का चौथा शासक था।
- इसके समय में त्रिकोणीय संघर्ष आरंभ हुआ।

❖ नागभट्ट द्वितीय (795-833 ई.)
- इसने सर्वप्रथम कन्नौज पर विजय प्राप्त किया।
- इसने गंगा में जल समाधि ले ली थी। इस विषय में जैनग्रंथ ''प्रभावक चरित'' से इसके बारे में जानकारी मिलती है।
- ग्वालियर अभिलेख में इसे किरात आनर्त तरूस्क, वत्स का विजेता कहा गया।

❖ मिहिरभोज प्रथम (836-889 ई.)
- वैष्णव धर्म का अनुयायी था।
- उपलब्धियों का स्रोत- ग्वालियर अभिलेख।
- कन्नौज पर अधिकार कर राजधानी बनाया।
- ''आदि वराह'' एवं ''प्रभास'' की उपाधि धारण की।

- सिक्कों पर सूर्यचक्र का अंकन मिलता है।
- अरब व्यापारी ''सुलेमान'' का आगमन इसी के काल में हुआ।

❖ महेन्द्रपाल प्रथम (890-910 ई.)

- राजशेखर ने इसे सकल-कला निलय तथा निर्भयराज की उपाधि प्रदान की थी।
- 'राजशेखर' इसके दरबारी कवि थे।
- राजशेखर की प्रमुख रचनाएं- काव्यमीमांसा, बालरामायण, भुवनकोश, कर्पूरमन्जरी, विद्वशाल भंजिका, प्रबन्धकोश और हरिविलास।

❖ महिपाल प्रथम (912-944 ई.)

- अरब यात्री अलमसूदी (915-16) का भारत आगमन।
- राजशेखर ने महिपाल को आर्यावर्त का महाराजाधिराज कहा है।

- महमूद गजनवी के आक्रमण के समय (1018) कन्नौज का राजा प्रतिहार शासक राज्यपाल था।
- गुर्जर-प्रतिहार शासकों को 'अग्निकुल राजपूत' भी कहा गया है।
- दसवीं शताब्दी में आये अरब यात्री अलमसूदी ने प्रतिहार साम्राज्य की सेना का वर्णन किया है।
- 1090 ई. तक प्रतिहार शासन कन्नौज से विलुप्त हो गया।

राष्ट्रकूट वंश

- दंतिदुर्ग ने 752 ई. चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन II को पराजित कर स्वतंत्र राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की।
- दंतिदुर्ग ने उज्जैन पर अधिकार करके वहाँ पर 'हिरण्य गर्भदान' नामक यज्ञ किया था।
- राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया था।
- राष्ट्रकूटों को अरबों ने बल्लहारा कहा है।
- राष्ट्रकूट की समृद्धि का वर्णन अरब यात्री अलममसूदी ने भी किया है।
- राष्ट्रकूटों की राजधानी 'मान्यखेत' थी।
- अरबी स्रोतों एवं संस्कृत स्रोतों में राष्ट्रकूटों को लगभग दो शताब्दियों तक भारत की सर्वोच्च शक्ति बताया गया है।
- राष्ट्रकूटों का अंतिम शासक कर्क द्वितीय था।
- राष्ट्रकूट शासक, जैन, शाक्त, वैष्णव एवं शैवमत के उपासक थे।
- राष्ट्रकूटों के पास नौ सैनिक दस्ते भी थे।

प्रमुख शासक

❖ ध्रुव (783-795 ई.)

- उपाधि- 'निरूपम', 'कालिवल्लभ'' श्रीवल्लभ एवं धारा वर्ष।
- राज्य के विस्तार को उत्तर दिशा में प्रारंभ करना।
- इसने प्रतिहार शासक वत्सराज एवं पाल शासक धर्मपाल को पराजित किया।

❖ गोविन्द तृतीय (793-814 ई.)

- राष्ट्रकूट राजाओं में सबसे बड़ा साम्राज्य गोविन्द तृतीय का था।
- संजन ताम्रपत्र के अनुसार गोविन्द तृतीय ने हिमालय तक अभियान किया था।
- गोविन्द तृतीय ने पल्लव, पाण्ड्य, चेर तथा गंग राजाओं द्वारा बनाए गए संघ को ध्वस्त कर दिया था।

❖ अमोघ वर्ष प्रथम (814-880 ई.)

- कन्नड़ भाषा में कविराज मार्ग नामक काव्य ग्रंथ लिखा।
- इसके राजकवि 'जिनसेन' थे।
- तुंगभद्रा नदी में जल समाधि लेकर प्राणान्त किया।

❖ कृष्ण द्वितीय (880-914 ई.)

❖ इन्द्र तृतीय (914-922 ई.)

❖ कृष्ण तृतीय (939- 967 ई.)

- उपाधियां- वल्लभनरेन्द्र, पृथ्वीवल्लभ, काच्चीयुग, तंजेयमकोंड (कांची तथा तंजोर विजय के उपलक्ष्य में)
- संपूर्ण दक्षिणापथ का सार्वभौम सम्राट था।
- उसके राजकवि पोन्न ने 'शांतिपुराण' की रचना कन्नड़ भाषा में की।
- कृष्ण तृतीय ने चोल विजय के उपलक्ष्य में रामेश्वरम विजयस्तम्भ बनवाया।

पाल वंश

- पाल वंश का संस्थापक गोपाल को माना जाता है।

कृषि प्रावधिक 15.02.2019

- अरबों ने पाल राज्य को 'रूह-मा' कहा है।
- पाल वंश का शासन प्रमुखतः गौड़ देश (बंगाल) में अवस्थित था।
- सभी पाल शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।
- पाल वंश में ही महायान बौद्ध धर्म बंगाल से तिब्बत तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में फैला।

पाल वंश के प्रमुख शासक

❖ धर्मपाल (770-810 ई.)

- प्रमुख उपाधियाँ- महाराजाधिराज, परमभट्टारक एवं परमेश्वर थी।
- विक्रमशिला तथा सोमपुरी बौद्ध विहार की स्थापना करवायी।
- बौद्ध विद्वान हरिभद्र को राजसभा में स्थान दिया।
- विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की।

UPPCS (Mains) 2008, SSC CHSL (Tier-I) 14.08.2023

- लेखों में इसे परमसौगत कहा गया है।
- बौद्धों को नालन्दा विश्वविद्यालय के खर्च हेतु 100 गांवो का राजस्व दान किया था।

❖ देवपाल (815-855 ई.)

- इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा था।
- तारानाथ ने इसे बौद्ध धर्म का पुर्नस्थापक कहा है।
- इसके विजयों का उल्लेख 'मुंगेर लेख' एवं 'बादल स्तंभ लेख' में मिलता है।

❖ विग्रहपाल (855-860)

- यह अपने पुत्र (नारायणपाल) के लिए सिंहासन त्यागकर साधू बन गया था।

❖ महीपाल प्रथम (988-1038)

- इसे पाल वंश का द्वितीय संस्थापक भी कहा जाता है।
- 1023 ई. के लगभग चोल राजा राजेन्द्र चोल ने इसे पराजित किया था।

❖ रामपाल (1077-1120 ई०)

- सन्ध्याकर नंदी ने अपने ग्रंथ 'रामचरित' में रामपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया है।
- इसके समय में कैवर्त विद्रोह का दमन हुआ।
- मदनपाल पाल वंश का अंतिम शासक था।
- धर्मपाल के शासन की जानकारी खालिमपुर या 'खलीमपुर ताम्रपत्र' से मिलती है।
- गुजराती कवि सोढ्ढल ने धर्मपाल को 'उत्तरायण स्वामिन' कहा है।
- पाल शासन काल में ''गौड़ी रीति'' नामक साहित्यिक विद्या का विकास हुआ।
- पाल कालीन राजाश्रय प्राप्त शिल्पी धीमन एवं विटपाल थे।
- 1202 में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने धर्मपाल द्वारा स्थापित विक्रमशिला विश्वविद्यालय को ध्वस्त करवा दिया था।

मध्यकालीन इतिहास

भारत पर मुस्लिम आक्रमण

❖ मुहम्मद बिन कासिम

- भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम मुस्लिम शासक मुहम्मद बिन कासिम था। **लोअर तृतीय 26.06.2016**
- मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में 712 ई. में अरबों ने सिंध पर पहला सफल आक्रमण किया।
  UP Lower (Pre.) 2002
  UPPCS Lower (Pre.) 1997
- अरब आक्रमण के समय सिंध पर हिंदू राजा दाहिर का शासन था। **UP Lower (Pre.) 2015**
- सिंध की विजय के पश्चात् मुहम्मद बिन कासिम ने सर्वप्रथम जजिया कर लगाया था।
- भारत पर अरबों के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन लूटना तथा इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना था
- सिंध के मुल्तान शहर को अरबों ने 'स्वर्ण नगरी' का नाम दिया था।
- अरबों के सिंध विजय की जानकारी फारसी ग्रन्थ 'चचनामा' से प्राप्त होती है। **UPPCS (Pre.) 2001**

महमूद गजनवी (998-1030 ई.)

- गजनी साम्राज्य की स्थापना 962 ई. में 'अलप्तगीन' नामक एक तुर्क सरदार ने की थी। **UP Lower (Pre.) 2015**
- अलप्तगीन के पश्चात् इसका गुलाम तथा दामाद 'सुबुक्तगीन' 977 ई. में गजनी की गद्दी पर बैठा।
- महमूद गजनवी सुबुक्तगीन का पुत्र था।
- सुबुक्तगीन की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र महमूद गजनवी 998 ई. में शासक बना।
- बगदाद के खलीफा अल-कादिर-बिल्लाह ने महमूद गजनवी को 'यमीन-उद्-दौला' तथा 'अमीन-उल-मिल्लत' की उपाधि से विभूषित किया।
- सर हेनरी ईलियट के अनुसार महमूद गजनवी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया था।
- महमूद गजनवी ने भारत पर प्रथम आक्रमण 1000 ई. में किया था।
- महमूद गजनवी ने 1001 ई. में हिन्दूशाही राजा जयपाल के विरूद्ध आक्रमण किया, जिसमें जयपाल की पराजय हुई।
- महमूद गजनवी का सबसे प्रसिद्ध आक्रमण 1026 ई. में सोमनाथ के मन्दिर पर हुआ था। इस समय यहाँ का शासक भीम प्रथम था।
- भीम देव प्रथम ने महमूद गजनी के हमले के बाद सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।
  Jharkhand PCS (Mains) 2016
- महमूद गजनवी का अंतिम आक्रमण 1027 ई. में जाटों के विरूद्ध था। 1030 ई. में गजनवी की मृत्यु हो गयी।
- महमूद गजनवी के भारतीय आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन की प्राप्ति था।
- महमूद गजनवी के दरबार में अलबरूनी, फिरदौसी, उत्बी तथा बैहाकी जैसे विद्वान रहते थे।
- अलबरूनी महमूद गजनवी के आक्रमण के समय भारत आया था। 'किताब-उल-हिन्द (तहकीक-ए-हिन्द)' अरबी भाषा में लिखी गई उसकी प्रसिद्ध पुस्तक है जो तत्कालीन इतिहास को जानने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।
- अलबरूनी का जन्म 973 ई. में खीवा प्रदेश में हुआ था।
- अलबरूनी पुराणों का अध्ययन करने वाला प्रथम मुसलमान था।
  UP Lower (Pre.) 2002
- महमूद गजनवी का दरबारी इतिहासकार उत्बी था; उत्बी ने 'किताब-उल-यामिनी' अथवा 'तारीख-ए-यामिनी' नामक ग्रन्थ की रचना की।
- फिरदौसी को 'पूर्व के होमर' की उपाधि दी जाती है। इसने 'शाहनामा' नामक ग्रन्थ की रचना की।
  MPPCS (Pre.) 2015
- महमूद के एक शाही लेखक बैहाकी को लेनपूल ने 'पूर्वी पेप्स' की उपाधि दी थी। उसने 'तारीख-ए-सुबुक्तगीन' नामक पुस्तक लिखी है।
- महमूद की सेना में संवेदराय एवं तिलक जैसे हिन्दू उच्च पदों पर आसीन थे।

मुहम्मद गोरी

- भारत में मुसलमानों के साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक मुइजुद्दीन मुहम्मद-बिन-साम था, जिसे शहाबुद्दीन 'मुहम्मद गोरी' कहा जाता है।
- मुहम्मद गोरी गजनी के अधीन गोर प्रांत का शासक था।
- मुहम्मद गोरी शंसबनी वंश से संबंधित था।
- मुहम्मद गोरी का प्रथम आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान पर हुआ था।
- मिन्हाज-ए-सिराज कृत ''तबकात-ए-नासिरी'' में गोरी द्वारा किए गए भारतीय अभियानों का वर्णन मिलता है।
- 1178 ई. में मुहम्मद गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया, जहाँ के स्थानीय शासक भीम द्वितीय (मूलराज द्वितीय) ने अपनी योग्य एवं साहसी विधवा मां नायिका देवी के नेतृत्व में आबू पहाड़ी के निकट मुहम्मद गोरी को परास्त किया।
  UPPCS (Pre.) 1990

मुहम्मद गोरी द्वारा लड़े गये प्रमुख युद्ध			
युद्ध	वर्ष	पक्ष	परिणाम
तराइन का प्रथम युद्ध	1191	मुहम्मद गोरी व पृथ्वीराज चौहान	चौहान विजयी
तराइन का द्वितीय युद्ध	1192	मुहम्मद गोरी व पृथ्वीराज चौहान	गोरी की विजय
चन्दावर का युद्ध	1194	मुहम्मद गोरी व जयचन्द	गोरी की विजय

- गोरी के एक साधारण दास 'इख्तियारुद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी' ने बिहार और बंगाल पर विजय प्राप्त की।
UPPCS (Pre.) 1991
- बख्तियार खिलजी ने बिहार पर विजय प्राप्त कर नालंदा एवं विक्रमशिला विहारों को नष्ट कर डाला।
BPSC (Pre.) 2016
- बख्तियार खिलजी के बंगाल पर आक्रमण के समय वहाँ का शासक लक्ष्मणसेन था जो बिना युद्ध किए ही भाग निकला। खिलजी ने लखनौती को अपनी राजधानी बनाया।
- मुहम्मद गोरी के गजनी जाते समय दमयक नामक स्थान पर खोक्खरों ने उसकी हत्या कर दी थी।
- कुतुबुद्दीन ऐबक मुहम्मद गोरी का गुलाम व सेनापति था। गोरी ने अपने भारत के विजित प्रदेशों की जिम्मेदारी कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंपी।
- मुहम्मद गोरी के सिक्कों पर देवी लक्ष्मी की आकृति बनी है।
UPPCS (Pre.) 2006

सल्तनत काल

गुलाम वंश के सुल्तान	
कुतुबुद्दीन ऐबक	1206 – 1210 ई.
आरामशाह	1210 – 1211 ई.
इल्तुतमिश	1211 – 1236 ई.
रुक्नुद्दीन फिरोजशाह	1236 ई.
रजिया	1236 – 1240 ई.
मुइजुद्दीन बहरामशाह	1240 – 1242 ई.
अलाऊद्दीन मसूदशाह	1242 – 1246 ई.
नासिरूद्दीन महमूद	1246 – 1266 ई.
गयासुद्दीन बलबन	1266 – 1287 ई.
कैकुबाद व क्यूमर्स	1287 – 1290 ई.

गुलाम वंश (1206-1290 ई.)

❖ कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

- मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात् उसके गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में गुलाम वंश की स्थापना की।
UPPCS (Pre.) 1990, BPSC (Pre.) 2011
- भारत में तुर्की साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक था। इसकी राजधानी लाहौर थी।
UPPCS (Pre.) 1996
- कुतुबुद्दीन ऐबक को 'लाख बख्श' (लाखों का दान करने वाला) व 'कुरान ख्वाँ (कुरान का पाठ करने वाला)' के नाम से भी जाना जाता है।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को हाथियों के दान करने के कारण ''पील बख्स'' की उपाधि से सुशोभित किया गया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में 'कुव्वत-उल-इस्लाम' और अजमेर में 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' नामक मस्जिदों का निर्माण करवाया। **BPSC (Pre.) 2015**
- 'कुब्बत-उल-इस्लाम' भारत में प्रथम तुर्की मस्जिद थी।
- दिल्ली स्थित कुतुबमीनार का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरू करवाया जिसे इल्तुतमिश ने पूरा करवाया था।
- 1208 ई. में गियासुद्दीन महमूद (गोरी के उत्तराधिकारी) द्वारा ऐबक को दासता से मुक्ति पत्र मिला।
- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु 1210 ई. में लाहौर में चौगान (आधुनिक पोलो की भाँति एक खेल) खेलते समय हुई थी।
IAS (Pre.) 2003
- कुतुबुद्दीन ऐबक के पश्चात् आरामशाह सल्तनत की गद्दी पर बैठा।

❖ इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश था।
- आरामशाह की हत्या करके 1210 ई. में इल्तुतमिश सल्तनत की गद्दी पर बैठा।
- 1211 ई. में ही राजधानी को लाहौर के स्थान पर दिल्ली स्थापित किया। **UP RO/ARO (Pre.) 2016**
UPPCS (Mains) 2014
- इल्तुतमिश कुतुबुद्दीन ऐबक का गुलाम व इल्बरी तुर्क था।
- सुल्तान बनने से पूर्व इल्तुतमिश बदायूं का सूबेदार था।
- दिल्ली सल्तनत का पहला सम्प्रभु या प्रभुतासंपन्न शासक इल्तुतमिश था। **UPPCS (Pre.) 2002**
- मुहम्मद गोरी ने 1206 ई. में इल्तुतमिश को दासता से मुक्त कर दिया था।
- इल्तुतमिश को 'गुलामों का गुलाम' कहा जाता है।
UPPCS (Pre.) 2016
- इल्तुतमिश ने अपने विश्वासपात्र चालीस गुलाम सरदारों के एक गुट का गठन किया। इस संगठन का नाम 'तुर्कान-ए-चहलगानी' रखा गया।
- इल्तुतमिश ने बिहार में अपना प्रथम सूबेदार मलिक जानी को नियुक्त किया था।
- मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खाँ भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर इल्तुतमिश के शासन काल में ख्वारिज्म के भगोड़े युवराज जलालुद्दीन मंगवर्नी का पीछा करते हुए सिंधु नदी तक पहुँचा था।
- चंगेज खाँ का मूल नाम तेमुचिन था।

- इल्तुतमिश को सुल्तान के पद की स्वीकृति 1229 ई. में बगदाद के खलीफा से प्राप्त हुई थी।
- इक्ता-व्यवस्था की शुरूआत इल्तुतमिश ने की।

UPPCS (Pre.) 2010

- निजामुल-मुल्क जुनैदी इल्तुतमिश का वजीर था।
- भारत में शुद्ध अरबी सिक्के चलाने वाला पहला सुल्तान इल्तुतमिश था
- चाँदी का 'टंका' (175 ग्रेन) और तांबे का 'जीतल' नामक सिक्कों का प्रचलन इल्तुतमिश ने करवाया था।
- सिक्कों पर टकसाल का नाम लिखवाने की परंपरा की शुरूआत इल्तुतमिश ने की थी।

UPPSC ACF/RFO 2021 (Mains) G.S.-I

- इल्तुतमिश की मृत्यु 1236 ई. में हुई थी।
- इल्तुतमिश ने अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।
- इब्नबतूता के अनुसार इल्तुतमिश ने अपने महल के सामने संगमरमर की दो शेरों की मूर्तियाँ स्थापित करायी थीं जिनके गले में घण्टियाँ लटकी हुई थीं जिनको बजाकर कोई भी व्यक्ति सुल्तान से न्याय की मांग कर सकता था।

UPPCS (Pre.) 2018

- इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर रूकनुद्दीन फिरोजशाह बैठा।

❖ रजिया (1336-40 ई.)

- रजिया का पूरा नाम "जलालात-उद-दिन-रजिया" था।
- रजिया मध्यकालीन भारत की प्रथम महिला शासिका थी।

UPPSC (GIC) 2010

- दिल्ली के निवासियों, अधिकारियों तथा सैनिकों की सहायता से रजिया ने सिंहासन प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की।
- सुल्तान की शक्ति और सम्मान में वृद्धि करने की लिए रजिया ने पर्दा प्रथा त्याग कर पुरुषों के समान वस्त्र धारण कर दरबार में जाना शुरू किया।
- रजिया ने जमालुद्दीन याकूत को 'अमीर-ए-अखनूर' (अश्वशाला का प्रधान) के पद पर नियुक्त किया था।
- रजिया के विरोधी अमीर गुट का नेतृत्व निजाम-उल मुल्क जुनैदी कर रहा था।
- रजिया ने कबीर खाँ ऐयाज को लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया था।
- रजिया ने अल्तूनिया से विवाह किया था।
- अल्तूनिया तबरहिंद (भटिंडा) का इक्तेदार था, जिसने रजिया के विरूद्ध विद्रोह किया था। **UP Lower (Pre.) 2004**
- 1240 ई. में कैथल के पास कुछ डाकुओं द्वारा रजिया की हत्या कर दी गई। **RRB NTPC (Stage-I) 16.06.2022**
- रजिया दिल्ली की सुल्तान बनने वाली एकमात्र महिला थी।

❖ बहरामशाह (1240- 1242 ई.)

- 1240 ई. में रजिया की मृत्यु के पश्चात् बहरामशाह सल्तनत की गद्दी पर बैठा किन्तु 1242 ई. में इसकी भी हत्या कर दी गई।
- बहरामशाह ने बलवन को 'अमीर-ए-आखूर' के पद पर नियुक्त किया।
- बहरामशाह के समय एक नए पद 'नाइब-ए-मामलिकात' का निर्माण किया गया और इस पर इख्तियारूद्दीन ऐतगीन की नियुक्ति की गई।

❖ अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-1246 ई.)

- बहरामशाह की हत्या के पश्चात् अलाउद्दीन मसूदशाह दिल्ली का सुल्तान बना।
- मशूदशाह ने बलबन को 'अमीर-ए-हाजिब' के पद पर नियुक्त किया।
- बलबन के द्वारा किए गए एक षड्यंत्र के तहत अलाउद्दीन मसूदशाह को अपदस्थ कर नासिरुद्दीन महमूद को सुल्तान बनाया गया।.

❖ नासिरुद्दीन महमूद (1246-1266 ई.)

- नासिरुद्दीन महमूद ने राज्य की समस्त शक्ति बलबन के हाथों में सौंप दी।
- बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह सुल्तान नासिरुद्दीन से किया।
- सुल्तान नासिरुद्दीन ने बलबन को 'नाइब-ए-मामलिकात' का पद और 'उलुग खाँ' की उपाधि प्रदान की।
- सुल्तान नासिरुद्दीन ने 1259 ई. में मंगोल नेता हलाकू के साथ समझौता किया। इस समझौते के परिणामस्वरूप पंजाब में शांति स्थापित हुई।
- मिन्हाज-ए-सिराज कृत 'तबकात-ए-नासिरी' सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद को समर्पित है।

❖ बलबन (1266-1287 ई.)

- बलबन इल्बरी तुर्क था। उसका वास्तविक नाम बहाउद्दीन था।
- मंगोलों ने बलबन को ख्वाजा जमालुद्दीन के हाथों बेचा था। जमालुद्दीन ने बलबन को दिल्ली लाकर इल्तुतमिश के हाथों बेच दिया।
- रजिया सुल्तान के समय बलबन 'अमीर-ए-शिकार' के पद पर था।
- 1266 ई. में बलबन, गयासुद्दीन बलबन ने नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। **Chhattisgarh PCS (Pre.) 2004**
- बलबन इल्तुतमिश के उन तुर्की दासों में से एक था जिन्हें तुर्कान-ए-चहलगानी कहा जाता था।
- बलबन ने इल्तुतमिश द्वारा गठित 'तुर्कान-ए-चहलगानी' को समाप्त कर दिया। **BPSC (Pre.) 2017**
- बलबन ने स्वयं को 'नियामत-ए-खुदाई' (ईश्वर का प्रतिनिधि) कहा और 'जिल्ले इलाही' (ईश्वर का प्रतिबिम्ब) की भव्य उपाधि धारण की। **IAS (Pre.) 1997**
- बलबन ने गढ़मुक्तेश्वर की मस्ज़िद की दीवारों पर अपने शिलालेख में स्वयं को खलीफा का सहायक कहा है।

UP RO/ARO (Mains) 2014

- सुल्तान बलबन ने अपने विरोधियों के प्रति कठोर ''लौह एवं रक्त'' की नीति अपनाई। **UPPCS (Mains) 2009**
BPSC (Pre.) 2022
- बलबन दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जिसने दरबार में गैर-इस्लामी प्रथाओं का प्रचलन करवाया। उसने अपने दरबार का गठन फारसी पद्धति पर किया।
- बलबन ने अपने दरबार में ईरानी परंपराओं 'सिजदा' (भूमि पर लेट कर अभिवादन करना) और 'पैबोस' (सुल्तान के चरणों को चूमना) को लागू किया एवं नौरोज त्यौहार मनाने की प्रथा शुरू की। **IAS (Pre.) 1993**
- बलबन स्वयं को 'अफरासियाब' का वंशज मानता था।
- तुगरिल खाँ बंगाल का गवर्नर था जिसने बलबन के समय विद्रोह किया था। **BPSC (Pre.) Re-Exam 2022**
- बलबन के शासन की सफलता का मुख्य आधार उसका गुप्तचर (बरीद) विभाग था।
- अपनी मृत्यु से पूर्व बलबन ने कैखसरव को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।
- दिल्ली के कोतवाल फखरुद्दीन मुहम्मद ने एक षडयन्त्र द्वारा कैखसरव को डराकर मुल्तान भगा दिया और उसके स्थान पर कैकुबाद (बुगरा खॉ पुत्र) को सुल्तान बनाने में सफलता प्राप्त की।
- कैकुबाद के पश्चात् क्यूमर्स कुछ समय के लिए दिल्ली का सुल्तान बना।
- क्यूमर्स की हत्या करके जलालुद्दीन ने दिल्ली की गद्दी पर अधिकार कर लिया।

खिलजी वंश (1290-1320)

❖ जलालुद्दीन फिरोजशाह खिलजी (1290-1296 ई.)

- खिलजी मूलतः तुर्क थे।
- गुलाम वंश के अंतिम शासक क्यूमर्स की हत्या करके जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की।
- खिलजी वंश की स्थापना को खिलजी क्रांति के नाम से जाना जाता है।
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने अपना राज्याभिषेक 1290 ई. में किलोखरी के महल में करवाया था।
RRB Group-D, 2018
- सुल्तान बनने के अवसर पर जलालुद्दीन की उम्र 70 वर्ष थी।
- कड़ा-मानिकपुर के सूबेदार मलिक छज्जू ने जलालुद्दीन खिलजी के समय विद्रोह किया था।
- फारसी दरवेश सीदी मौला (जो दिल्ली में आकर बस गया था) को सुल्तान जलालुद्दीन के काल में हाथी के पैर तले कुचलवा दिया गया था।
- 1296 ई. में कड़ा मानिकपुर में जलालुद्दीन के भतीजे व दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने उसकी हत्या कर दी।
- जलालुद्दीन खिलजी दिल्ली का प्रथम सुल्तान था, जिसने उदार निरंकुशवाद के आदर्श को अपने सामने रखा।
- खिलजी काल में दिल्ली में रहने वाले मंगोलों को 'नवीन मुसलमान' कहा गया।

❖ अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

- अलाउद्दीन 1296 ई. में दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर बैठा। इस अवसर पर उसने 'अबुल मुजफ्फर सुल्तान अलाउद्दुनिया-वा दीन मुहम्मद शाह खिलजी, की उपाधि ग्रहण की।
- अलाउद्दीन का मूल नाम अली अथवा गुरशास्प था। इसके पिता का नाम शिहाबुद्दीन मसूद खिलजी था।
- अलाउद्दीन का राज्याभिषेक बलबन के लाल महल में हुआ था।
- उलूग खाँ, नसरत खाँ, अलप खाँ और जफर खाँ अलाउद्दीन के योग्य सेनानायक थे।
- अलाउद्दीन ने शासन में इस्लाम के सिद्धान्तों का पालन नहीं किया। उसने योग्यता के आधार पर पदों का वितरण किया।
- अलाउद्दीन निरंकुश राजतंत्र में विश्वास करता था।
- अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था जिसने धर्म पर राज्य का नियंत्रण स्थापित किया।
- अलाउद्दीन खिलजी का राजत्व सिद्धान्त 'राजत्व के दैवी सिद्धान्त'' (Divine Right of kings) पर आधारित था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 'सिकन्दर द्वितीय' (सिकन्दर-ए-सानी) की उपाधि धारण की थी। **UP Lower (Pre.) 2008**
- अलाउद्दीन खिलजी ने अपने आक्रमण की शुरूआत गुजरात राज्य से की। यहाँ का तत्कालीन शासक राजपूत राय कर्ण द्वितीय था जो पराजित हुआ और अलाउद्दीन ने उसकी पत्नी कमला देवी से विवाह कर लिया।
- अलाउद्दीन खिलजी को मलिक काफूर नामक दास गुजरात से से ही प्राप्त हुआ था।
- मलिक काफूर को 'हजार दीनारी' की पदवी दी गई थी।
Uttarakhand PCS (Pre.) 2021
- नवीन मुसलमानों (वे मंगोल जो इस्लाम धर्म में परिवर्तित हो गए थे) का विद्रोह अलाउद्दीन के समय हुआ था।
- सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के समय में ही दिल्ली में हाजी मौला ने विद्रोह किया था।

अलाउद्दीन खिलजी का विजय अभियान		
स्थान	**वर्ष**	**शासक**
गुजरात	1297 ई.	कर्ण देव
रणथम्भौर	1301 ई.	हम्मीर देव
मेंवाड़ (चित्तौड़)	1303 ई.	रतन सिंह
मालवा	1305 ई.	महालक देव
जालौर	1311 ई.	कन्हण देव
देवगिरि	1296 ई.	रामचन्द्र देव
सिवाना	1308 ई.	-
वारंगल	1309 ई.	प्रताप रुद्र द्वितीय
द्वारसमुद्र	1310 ई.	वीर वल्लाल तृतीय
मदुरै, तंजावुर	1311 ई.	वीर पाण्ड्या
देवगिरि (द्वितीय आक्रमण)	1307 ई.	रामचन्द्र देव
देवगिरि (तृतीय आक्रमण)	1313 ई.	शंकर देव

■ अलाउद्दीन ने देवगिरि के शासक रामचन्द्रदेव को 'राय रायन' की उपाधि दी थी। **BPSC (Pre.) 2011**

■ वारंगल के शासक प्रताप रूद्रदेव ने विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा मलिक काफूर को दिया था जिसे उसने सुल्तान अलाउद्दीन को भेंट किया।

■ विन्ध्याचल की पहाड़ियों को पार करने वाला प्रथम तुर्क सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी था।

■ मलिक काफूर के दक्षिणी अभियानों का सर्वाधिक आधिकारिक विवरण अमीर खुसरो ने दिया है।

■ अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण भारत में अभियान का उद्देश्य धन प्राप्ति था।

■ दक्षिण भारत में अलाउद्दीन खिलजी के प्रभुत्व को पाण्ड्यों ने स्वीकार नहीं किया था।

■ मेवाड़ को जीतने के पश्चात् अलाउद्दीन ने इसका नाम अपने पुत्र खिज्र खाँ के नाम पर 'खिज्राबाद' रखा।

■ अलाउद्दीन खिलजी ने सीरी को अपनी राजधानी बनाया था।

■ अलाउद्दीन खिलजी के समय में मंगोलों के सबसे अधिक और सबसे भयंकर आक्रमण हुए।

■ अलाउद्दीन खिलजी ने साम्राज्य की सीमाओं की सुरक्षा हेतु एक विशेष सेना नियुक्त की थी।

UP RO/ARO (Pre.) 2021

■ अलाउद्दीन खिलजी ने नकद वेतन पर केन्द्र में एक बड़ी व स्थायी सेना रखी।

■ अलाउद्दीन खिलजी ने घोड़ों को दागने की प्रथा व सैनिकों का हुलिया लिखने की प्रथा का आरंभ किया।

SSC CGL - 2023

■ भूमि की पैमाइश कराकर सरकारी कर्मचारियों द्वारा लगान वसूल करने की प्रथा सर्वप्रथम अलाउद्दीन खिलजी ने शुरू की थी।

BPSC (Pre.) 1994, 2013

■ अलाउद्दीन ने 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली' प्रारंभ की थी।

UPPCS (Mains) 2010

■ अलाउद्दीन ने अपनी मृत्यु के अवसर पर अपने छोटे पुत्र शिहाबुद्दीन उमर को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था।

❖ कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316-1320 ई.)

■ अलाउद्दीन का तीसरा पुत्र मुबारक खाँ अप्रैल, 1316 ई. में कुतुबुद्दीन मुबारक के नाम से दिल्ली का सुल्तान बना।

■ मुबारक खिलजी ने स्वयं को खलीफा घोषित किया और 'अल इमाम','उल-इमाम', 'खिलाफत-उल-लह' आदि उपाधियाँ ग्रहण की।

UP RO/ARO RE-Exam (Pre.) 2016

❖ नासिरुद्दीन खुसरो शाह (1320 F&.)

■ कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी के पश्चात् नासिरूद्दीन खुसरोशाह शासक बना।

■ खुसरोशाह हिन्दू धर्म से परिवर्तित मुसलमान था।

■ खुसरोशाह के शत्रुओं ने उसके विरूद्ध 'इस्लाम का शत्रु' और 'इस्लाम खतरे में है' के नारे लगाए।

खिलजी वंश के शासक	
जलालुद्दीन खिलजी	1290-1296 ई.
अलाउद्दीन खिलजी	1296-1316 ई.
शिहाबुद्दीन उमर	1316 ई.
कुतुबुद्दीन मुबारक शाह	1316-1320 ई.
नासिरूद्दीन खुसरो शाह	1320 ई.

तुगलक वंश (1320- 1412 ई.)

❖ गयासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई.)

■ तुगलक वंश के संस्थापक गयासुद्दीन का वास्तविक नाम गाजी तुगलक अथवा गाजीबेग तुगलक था। इसी के नाम पर इसका वंश तुगलक वंश कहलाया।

VDO - 2018 (Shift-I)

■ खिलजी काल में गयासुद्दीन दीपालपुर का सूबेदार था। खुसरोशाह को समाप्त करके वह 1320 ई. में दिल्ली का सुल्तान बना।

■ इब्नबतूता ने तुगलकों को 'करौना' शाखा का बतलाया है।

■ अलाउद्दीन खिलजी की कठोर नीतियों के विपरीत गयासुद्दीन तुगलक ने उदारता की नीति अपनाई जिसे बरनी ने 'रस्मोमिमान' अथवा मध्यपंथी नीति कहा है।

■ गयासुद्दीन तुगलक ने आदेश जारी किया था कि एक वर्ष में एक इक्ता (सूबा) के राजस्व में 1/11 से 1/10% से अधिक वृद्धि नहीं की जानी चाहिए।

■ नहरों का निर्माण करवाने वाला प्रथम सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक था। **UPPCS (Mains) 2017**

■ तुगलकाबाद नामक नगर का निर्माण गयासुद्दीन तुगलक ने करवाया था।

■ गयासुद्दीन तुगलक और सूफी संत निजामुद्दीन औलिया के संबंध कटुतापूर्ण थे।

■ सुल्तान गयासुद्दीन ने औलिया को दिल्ली पहुँचने पर दण्ड देने की धमकी दी थी जिसके बारे में औलिया ने कहा कि- ''दिल्ली अभी बहुत दूर है।''

■ तुगलकाबाद के समीप अफगानपुर में उलूग खां (मुहम्मद बिन तुगलक) द्वारा बनवाये गए लकड़ी के महल के गिर जाने से गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु हो गई।

❖ मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई.)

■ गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के पश्चात् मार्च 1325 ई. में उलूग खाँ (जूना खाँ) 'मुहम्मद-बिन-तुगलक' के नाम से दिल्ली का सुल्तान बना।

■ मुहम्मद बिन तुगलक अरबी-फारसी का महान विद्वान तथा ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न विधाओं जैसे- खगोल शास्त्र, दर्शन, गणित, चिकित्सा, विज्ञान, तर्कशास्त्र आदि में पारंगत था।

■ सल्तनतकालीन शासकों में सर्वाधिक विस्तृत साम्राज्य मुहम्मद बिन तुगलक का था। इसका साम्राज्य 23 प्रांतो में बँटा हुआ था।